सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 08, नई दिल्ली । बुधवार, 19 मार्च 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

कष्ट सहने पर ही हमें अनुभव होता है और दर्द हो, तभी हम सीख पाते हैं

03 विधायक अभय वर्मा भाजपा विधायक दल के मुख्य सचेतक नियुक्त

06 अपनी जमीन से उखड़े हुए लोग

08 सरायकेला में विश्वप्रसिद्ध छऊ नृत्य आयोजन पूर्व मुखौटा प्रतियोगिता

अपने पद के बल का दुरुपयोग कर जनता और सरकारी खजाना लुटवाने वाला आई.ए.एस अधिकारी ईमानदार

संजय बाटला

नई दिल्ली। जी हां यह बहुत बड़ा सच है "जनता को लुटवाने के साथ सरकारी राजस्व में लूट" फिर भी ईमानदार। भारत सरकार के पीएमओ, गृह मंत्रालय के साथ दिल्ली के प्रशासक (उपराज्यपाल) का काफी खास। **लूट खसोट करवाने के कार्यों में सीधा सहयोग देने के दस्तावेजी सबूत उपलब्ध होते हुए भी ईमानदार, आखिर कैसे ?** अपने छोटे से कार्यकाल में

1. कई कंपनियों को फायदा पहुंचाने में सहयोगी,
2. जनता के समय बचे हुए वाहनों को गैर कानूनी तरीके से अपने पद के दुरुपयोग के साथ बॉक्सर का प्रयोग करवाकर उठवाकर स्क्रैप डीलरो को सुपुर्द करना
3. जनता के वाहनों को जबरदस्ती उठवाकर स्क्रैप डीलरो को सुपुर्द करने के साथ उसकी कीमत भी नहीं दिलवाना
4. जब्त वाहनों की कीमत नहीं दिलवाना पर उसकी स्क्रैप सी.डी. सर्टिफिकेट जारी करवाकर सरकारी राजस्व में अरबों रुपए का चूना लगवाने में स्लिप्ट
5. वर्क टेंडर एग्रीमेंट समाप्त होने के बाद भी बार बार एक्सटेंशन जारी करना और जांच क्षमता से कई गुणा बहनों को वही से वाहन जांच के आदेश जारी करना

परिवहन विभाग की फाइलो को टटोला जाए तो ऐसे अनगिनत सरकारी राजस्व को चुना लगाने, जनता को लुटवाने और गैर कानूनी तरीके से परेशान करने के सबूत उपलब्ध है जायेंगे, **"फिर भी दिल्ली परिवहन आयुक्त ईमानदार"** क्या भारत देश की जनता में से कोई भी ऐसा है जो जवाब दे की **"कैसे कहलाते है इस तरह के अधिकारी ईमानदार" और वह कौन है जिसके प्रभाव से ऐसे अधिकारी कहलाए जाते है ईमानदार"**

अति विशेष सूचना

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र आर .एन .आई . द्वारा मान्यता प्राप्त करने के बाद से आपके द्वारा प्राप्त भरपूर सहयोग से मार्च में अपने 2 साल पूरे कर रहा है। इन दो सालों में समाचार पत्र को निष्पक्ष रूप से चलाने में आप सभी का भरपूर सहयोग रहा हैं जिसके लिए **प्रशासनिक विभाग परिवहन विशेष आप सभी का दिल से आभार व्यक्त करता है** और आशा करता है की भविष्य में भी आपका सहयोग हमारे साथ ऐसे ही बना रहेगा। इन दो सालों में समाचार पत्र को राष्ट्रीय स्तर पर सभी शहरों और जिलों तक पहुंचाने और वहां की सही और सच्ची खबरें हम तक पहुंचाने वाले रिपोर्टर्स का दिल से धन्यवाद।

आप सभी को यह जान कर खुशी होगी की **"परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र"** का द्वितीय वार्षिकी समारोह अप्रैल माह के अंतिम सप्ताह में सम्पन्न किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से सड़को को जाम और दुर्घटनाओं से मुक्त करवाने के साथ दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य का उद्देश्य रखा गया है। इस समारोह में निम्नलिखित मुद्दों पर वाद- विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा

1. लेन ड्राइविंग कितनी अनिवार्य?"
2. "सड़क दुर्घटना से कैसे हो सकता हैं बचाव ?"
3. "दिल्ली को कैसे प्रदूषण मुक्त राज्य बनाया जा सकता है?"

वाद- विवाद प्रतियोगिता में हिस्सेदारी लेने वाले वक्ताओं के वक्तव्य के साथ परामर्शदाताओं से चर्चा भी इस समारोह में रखी जा रही है। इसके साथ इस आयोजन में भारत देश में निर्मित ई वाहनो, वीएलटीडी संयंत्र, एवम् अन्य उपयोगी स्टाल भी सब को आकृषित करने के लिए उपलब्ध होंगे। इस समारोह में

1. सबसे अच्छा विचार / तर्क और समाधान प्रदान करने वाले वक्ता को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
2. परिवहन क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले संगठनों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
3. सड़क सुरक्षा के प्रति कार्य करने वाले संगठनों के पदाधिकारियों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
4. परिवहन विशेषज्ञों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
5. समाचार पत्र से अलग अलग राज्यों से जुड़े एंकर, वीडियो ग्राफर, रिपोर्टर्स, लेखक, ज्योताचार्य, कवि एवम् सहायकों को सम्मानित किया जाएगा।

संजय कुमार बाटला
संपादक

एक अप्रैल से लागू होंगे वाहनों के लिए नए नियम, जानकारी हेतु प्रस्तुत

परिवहन विशेष न्यूज

"नए नियम के अनुसार अब आप अपना पुराना समय सीमा समाप्त वाहन समय सीमा समाप्त होने के बाद 180 दिन से ज्यादा अपने पास नहीं रख सकते"

नई दिल्ली। वाहनों की लाइफ लिमिट यानी एक्सपायरी को लेकर एक अप्रैल से नए नियम लागू हो जाएंगे। यदि आपके पास भी कोई गाड़ी है तो आपको यह जानना जरूरी है। नए नियम, स्क्रैपिंग और रजिस्ट्रेशन पर भी बड़ा प्रभाव डालेंगे। पुराने वाहनों के संचालन से होने वाले वायु प्रदूषण को थामने के लिए वन एवं पर्यावरण मंत्रालय ने स्क्रैपिंग के नए नियमों को सख्ती से लागू करने का फैसला लिया है जो देश भर में एक अप्रैल 2025 से प्रभावी होंगे। **इन नियमों में वाहनों के उत्पादनकर्ता के साथ वाहन मालिकों को भी जवाबदेह बनाया गया है।**

"नए नियम के अनुसार अब आप अपना पुराना समय सीमा समाप्त वाहन समय सीमा समाप्त होने के बाद 180 दिन से ज्यादा अपने पास नहीं रख सकते अगर आपने उसके रजिस्ट्रेशन को आगे की अवधि के लिए नहीं बढ़वाया है तो उसे घर पर रखना अब गैरकानूनी होगा। वाहन स्क्रैपिंग के नए नियमों के तहत आयु पूरी करने के 180 दिनों के भीतर वाहन को पंजीकृत स्क्रैपिंग या संग्रहण केंद्रों पर अनिवार्य रूप से जमा करना होगा। ऐसा नहीं करने पर वाहन स्वामी के खिलाफ मोटर व्हीकल एक्ट के तहत जुर्माना, वाहन के रजिस्ट्रेशन रद्द करने और दूसरी कानूनी कार्रवाई की जा सकती है। इस नए नियम के तहत आपको अपने पुराने समय सीमा समाप्त हो चुके वाहन के प्रमाण-पत्र भी जमा करवाना होगा। नए नियम के तहत वाहन उत्पादनकर्ता को भी हर साल एक तय मानक के तहत वाहनों की स्क्रैपिंग का प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना होगा, तभी उन्हें नए वाहनों के उत्पादन की भी अनुमति मिलेगी। इन नियमों से कृषि कार्य में लगे वाहनों को मुक्त रखा गया है। वाहनों के उत्पादनकर्ता के लिए हर साल एक निर्धारित मात्रा में वाहनों की स्क्रैपिंग को अनिवार्य कर दिया गया है। हालांकि यह उन्हें खुद नहीं करना होगा, बल्कि देश के अधिकृत स्क्रैपिंग केंद्रों से उसके प्रमाणपत्र खरीदकर प्रस्तुत करना होगा। इसके बाद ही उन्हें नए वाहनों के उत्पादन की अनुमति दी जाएगी।

नए नियम के लक्ष्य निर्धारित

मंत्रालय ने 2025-26 के लिए **वाहन उत्पादनकर्ताओं के लिए स्क्रैपिंग के जो लक्ष्य निर्धारत किए है, वह गैर-परिवहन वाहनों के लिए वर्ष 2005-06 के आधार पर व परिवहन वाहनों के लिए वर्ष 2010-11 के आधार पर निर्धारित किया है।** ऐसे में प्रत्येक वाहन उत्पादनकर्ता इन वर्षों में वाहनों में इस्तेमाल की गई स्टील में से न्यूनतम आठ प्रतिशत की स्क्रैपिंग करानी होगी। इसके साथ ही वाहन उत्पादनकर्ता और राज्यों को वाहनों की स्क्रैपिंग को प्रोत्साहित करने के लिए नए-नए उपाय और जागरूकता कार्यक्रम चलाने के लिए भी कहा गया है।

आपकी जानकारी हेतु बता दे सभी राज्यों ने वाहनों की आयु अपने-अपने हिसाब से निर्धारित कर रखी है। दिल्ली एनसीआर में नियम 15 साल के और

एनसीआर से बाहर के जिलों में मोटर व्हीकल एक्ट के तहत वाहन यदि फिट है तो वह पंद्रह साल के बाद भी सड़कों पर दौड़ सकता है, लेकिन पंद्रह साल के बाद प्रत्येक पांच वर्ष में इसके फिटनेस की आरटीओ की देखरेख में जांच करानी होगी।

परिवहन वाहनों की आयु नए नियमों में यह तय किया गया है कि वाहन यदि फिट रहता है तो उसके रजिस्ट्रेशन को पांच साल की अवधि के लिए बढ़ाया जा सकता है। फिलहाल मंत्रालय ने नई स्क्रैपिंग नीति में वाहनों की जो औसत उम्र तय की है, वह परिवहन वाहनों के लिए अधिकतम 15 साल और गैर-परिवहन वाहनों के लिए 20 वर्ष रखी है।

एक्शन में दिल्ली पुलिस, 223 बसें जब्त और 859 किए चालान; एलजी के निर्देश पर हुई ताबड़तोड़ कार्रवाई

पूर्वी दिल्ली में यातायात पुलिस ने डग्गामार बसों के खिलाफ अभियान चलाया है। पिछले दो महीनों में 223 बसें जब्त की गई हैं और 859 चालान किए गए हैं। पुलिस ने बॉर्डर के आसपास भी नजर बनाई हुई है। कई जगह पार्किंग में बस अड्डे चल रहे हैं। एलजी वीके सक्सेना की सख्ती के बाद दिल्ली यातायात पुलिस ने पार्किंग जाकर भी डग्गामार बसों को जब्त किया है।

दिल्ली। यमुनापार में दिल्ली यातायात पुलिस ने डग्गामार बसों के खिलाफ अभियान चलाया हुआ है। पूर्वी रेंज ने पिछले दो माह में 223 डग्गामार बसे जब्त की है। परमिट समेत कई नियमों के उल्लंघन के 859 चालान किए हैं। कुछ माह पहले ही दिल्ली के एलजी वीके सक्सेना ने निर्देश दिए थे कि दिल्ली में बसे अधिकृत बस अड्डों के अंदर से ही चलेंगी। उसके बाद भी नियमों का उल्लंघन कर चल रही बस चालकों के खिलाफ यातायात पुलिस कार्रवाई कर रही है।

बॉर्डर के आसपास भी पुलिस की पैनी नजर : पूर्वी रेंज के जिला पुलिस उपायुक्त राजीव कुमार रावल ने कहा कि नियमों का उल्लंघन कर चल रही बसों के खिलाफ पुलिस ने कड़ा रुख अपना रखा है। रेंज के सभी सर्कल के पुलिसकर्मियों को आदेश दिए हुए है कि डग्गामार बसों को जब्त करने के साथ ही इनके चालान किए जाएं। पुलिसकर्मी परमिट, अवैध पार्किंग समेत अन्य नियमों के चालान कर रहे हैं। बॉर्डर के आसपास भी पुलिस ने नजर बनाई हुई है।

निगम की पार्किंग में भरी जाती हैं सवारियां : डग्गामार बसें यातायात नियमों का उल्लंघन कर चलती है। यह दिल्ली से उत्तर प्रदेश के संभल, चांदपुर, बुलंदशहर, बिजनौर, किरतपुर, मुरादाबाद, नगीना, अमरोहा समेत अन्य स्थान के लिए चलती हैं। इन बसों में रोडवेज के मुकाबले किराया कम होता है। माल वाहन के रूप भी इन बसों का इस्तेमाल किया जाता है।

दिल्ली की फैक्ट्रियों से जींस, जूते, चप्पल समेत अन्य सामान इन बसों में भरकर उत्तर प्रदेश भेजा जाता है। यमुनापार में दिल्ली नगर निगम की कई पार्किंग ऐसी है, जो डग्गामार बसों का अड्डा बनी हुई हैं। निगम की पार्किंग में बसे खड़ी करके उसमें सवारियां बैठाने के साथ ही सामान भरा जाता है।

कई जगह पार्किंग में चल रहे बस अड्डे : बताया गया कि गाजीपुर, आनंद विहार, न्यू अशोक नगर, गीता कॉलोनी, नदं नगरी, शास्त्री पार्क, वेलकम, सीलमपुर, उस्मानपुर पुश्ता, ब्रह्मपुरी पुलिया, बिहारी कॉलोनी सहित कई जगह पार्किंग में बस अड्डे चल रहे हैं। एलजी वीके सक्सेना की सख्ती के बाद दिल्ली यातायात पुलिस ने पार्किंग जाकर भी डग्गामार बसों को जब्त किया और उनके चालान किए। स्पष्ट कहा कि बसे चालानी है तो अधिकृत बस अड्डों से ही चलाएं।

सर्कल चालान जब्त : मयूर विहार 337 70 मधु विहार 201 69
कल्याणपुरी 32 05 शाहदरा 29 05 गांधी नगर 10 00 नंद नगरी 17 02
भजनपुरा 215 87 खजूरी खास 18 00
कुल 859 238

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020) , एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

दिल्ली को 1000 इलेक्ट्रिक बसों की सौगात, बनेगी भारत की ईवी कैपिटल

दिल्ली को भारत की इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) राजधानी बनाने की दिशा में तेजी से काम चल रहा है। सरकार का लक्ष्य है कि वर्ष 2027 तक राजधानी में सभी बसें इलेक्ट्रिक वाहनों के रूप में चलेंगी। इस उद्देश्य को हासिल करने के लिए चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर और आधुनिक परिवहन तकनीकों के विस्तार पर काम किया जा रहा है। अगले महीने दिल्ली की सड़कों पर 1000 इलेक्ट्रिक बसें उतरेंगी।

नई दिल्ली। दिल्ली की नई सरकार ने सार्वजनिक परिवहन को मजबूत करने पर अपना फोकस बढ़ा दिया है। दिल्ली को 'भारत की इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) राजधानी' बनाने के लक्ष्य पर तेजी से काम चल रहा है। दिल्ली सरकार का लक्ष्य है कि वर्ष 2027 तक राजधानी में सभी बसें इलेक्ट्रिक वाहनों के रूप में चलेंगी।

भाजपा सरकार का कहना है कि इस उद्देश्य को हासिल करने के लिए चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर और आधुनिक परिवहन

तकनीकों के विस्तार पर काम किया जा रहा है।

परिवहन को पूरी तरह से इलेक्ट्रिक बनाना

इसी क्रम में परिवहन मंत्री डॉ. पंकज कुमार सिंह ने मंगलवार को परिवहन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों और इलेक्ट्रिक बस निर्माता कंपनियों, बस ऑपरेटरों के साथ बैठक की।

उन्होंने निर्देश दिया कि बसों की आपूर्ति जल्द से जल्द सुनिश्चित की जाए। इस दौरान मंत्री ने कहा कि सरकार का लक्ष्य दिल्ली में सार्वजनिक परिवहन को पूरी तरह से इलेक्ट्रिक बनाना है, जिससे न केवल प्रदूषण कम होगा, बल्कि नागरिकों को आधुनिक और सुविधाजनक परिवहन व्यवस्था भी मिलेगी।

इस दौरान मंत्री ने इलेक्ट्रिक बस निर्माताओं और बस ऑपरेटरों के सामने आ रही चुनौतियों को भी सुना और उन्हें भरोसा दिलाया कि सरकार हर संभव मदद करेगी। मंत्री ने कहा कि इलेक्ट्रिक बसों के आने से दिल्ली की परिवहन व्यवस्था और मजबूत होगी।

2027 तक दिल्ली की सभी बसों होंगी इलेक्ट्रिक

सरकार ने 2027 तक दिल्ली में चलने वाली सभी बसों को पूरी तरह इलेक्ट्रिक बनाने का लक्ष्य रखा है। इसके तहत सरकार सिर्फ इलेक्ट्रिक बसों की खरीद को प्राथमिकता देगी, ताकि पुरानी बसों को चरणबद्ध तरीके से हटाकर इलेक्ट्रिक बसों को शामिल किया जा सके।

इस योजना के सफल क्रियान्वयन के लिए सरकार बस डिपो में चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित करेगी।

मंत्री ने कहा कि अगले 100 दिनों के अंदर दिल्ली की सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था में बड़ा बदलाव देखने को मिलेगा। सरकार ने परिवहन व्यवस्था को और अधिक सुलभ, सुरक्षित और सुविधाजनक बनाने की तैयारी कर ली है।

महिलाओं के लिए मुफ्त यात्रा जारी

महिलाओं के लिए मुफ्त यात्रा योजना पहले की तरह जारी रहेगी, जिससे लाखों महिलाओं को राहत मिलेगी और अगले वित्त वर्ष तक डीटीसी को मुनाफे में लाने का लक्ष्य रखा गया है। मंत्री ने अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए कि बसें अपने निर्धारित रूट पर चले और बीच में संचालन बंद न किया जाए।

इसके साथ ही डीटीसी ट्रैफिक जाम को कम करने और यात्री सुविधा बढ़ाने के लिए रूट रेशनलाइजेशन पर काम करेगी, जिससे अधिक भीड़भाड़ वाले इलाकों में बसों की उपलब्धता बढ़ेगी।

परिवहन मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का विजन दिल्ली को देश में एक मॉडल ईवी राजधानी के रूप में स्थापित करना है। इस दिशा में सरकार ईवी इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने और इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देने के लिए लगातार काम कर रही है।

चंचल लेकिन साफ दिल के कर्क राशि के जातक

ज्योतिषाचार्य पंडित योगेश पौराणिक(इंजी)

हमारे नक्षत्र मंडल में पुनर्वसु नक्षत्र से लेकर अश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण तक चंद्रमा का गोचर कर्क राशि में माना गया है। कर्क एक स्त्री जाति की कफ प्रकृति वाली,जल तत्व वाली,रात्रि बली, उत्तर दिशा की स्वामी,समोदय राशि है। कर्क राशि के जातक पर चंद्रमा,गुरु तथा बुध तथा मंगल ग्रह का प्रभाव देखने मिलता है। काल पुरुष की कुंडली में पेट, वक्ष स्थल और गुर्दे का विचार कर्क राशि से किया जाता है।

गुण और स्वभाव : कर्क राशि के लोग गोरे रंग के माध्यम कद काठी के होते हैं। इनका चेहरा लंबा तथा भरा हुआ ,नाक नीची तथा हाथ लंबे होते हैं। कर्क राशि के जातक दयालु,स ंवेदनशील,कल्पनाशील, आध्यात्मिक प्रकृति के होते हैं। यह चंचल मन के अशांत तथा स्वार्थी हो सकते हैं। कर्क राशि के जातक संगीत के काफी शौकीन होते हैं।

इन्हे शास्त्रीय संगीत में रुचि होती है। कर्क के लोग स्त्री या पुरुष के वश में होते हैं। यह कभी कभी चिड़चिड़े,लापरवाह तथा जिद्दी स्वभाव के हो जाते है।

कैरियर : कर्क राशि के लोग कुशल व्यापारी,नौ सेना, हस्तकला, संगीतज्ञ,जल परिवहन,नेतागिरी, सांसद, शास्त्री, मोती, दूध, रासायनिक खाद आदि के व्यापारी, खेलविभाग,रेलवे ,मेडिकल आदि में सफलता प्राप्त करते हैं।

रोग : कर्क राशि के लोगो को गैस,कब्ज,हृदय रोग,कमजोरी, टीबी, कैंसर,फेफड़ों के रोग,ब्लड प्रेशर आदि रोगों से जूझना पड़ सकता है।

भाग्यशाली दिन : सोम,बुध और गुरु

भाग्यशाली रंग : लाल,पीला और सफेद

भाग्यशाली अंक :1,4,6,8

शुभ रत्न : मोती

उपाय : कर्क राशि के जातक को सोमवार का व्रत तथा शिव और हनुमान जी की उपासना करना अत्यंत लाभकारी सिद्ध होता है। प्रत्येक सोमवार शिवलिंग पर दूध से अभिषेक करना अच्छा होता है।

रंग पंचमी

रंग पंचमी भारत में एक ऐसा त्योहार है, जो केवल आनंद मनाने का अवसर नहीं है, बल्कि यह आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक परंपराओं से जुड़ने का एक महत्वपूर्ण माध्यम भी है। यह पर्व होली के पांच दिन बाद मनाया जाता है। होली के समय लोग एक-दूसरे पर रंग डालकर खुशियाँ मनाते हैं, जबकि रंग पंचमी पर रंगों और गुलाल को आसमान में उड़ाने की परंपरा है। धार्मिक दृष्टिकोण से, ऐसा करने से न केवल वातावरण की शुद्धि होती है, बल्कि देवताओं का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है।

रंग पंचमी विशेष रूप से महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में बड़े धूमधाम से मनाई जाती है। महाराष्ट्र में इसे "शिमगा" के नाम से जाना जाता है, और इस अवसर पर विशेष जुलूस निकाले जाते हैं। इस दिन मंदिरों और घरों में भगवान कृष्ण और राधा रानी की पूजा की जाती है। इसके साथ ही, कई स्थानों पर महालक्ष्मी पूजा का आयोजन भी किया जाता है, जिससे घर में सुख और समृद्धि बनी रहे।

रंग पंचमी कब है? सही तारीख और शुभ मुहूर्त पंचमी तिथि की शुरुआत: 18 मार्च 2025 (मंगलवार) रात 10:09 बजे पंचमी तिथि की समाप्ति: 20 मार्च 2025 (गुरुवार) रात 12:37 बजे चूंकि उदय तिथि को ही पर्व मनाने की परंपरा है, इसलिए रंग पंचमी 19 मार्च 2025 (बुधवार) को मनाई जाएगी।

रंग पंचमी का धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व भगवान कृष्ण और राधा रानी की होली रंग पंचमी के दिन भगवान श्रीकृष्ण ने राधा रानी और गोपियों के साथ होली खेलने की मान्यता है। इस आनंद के अवसर पर देवताओं ने आकाश से फूलों की वर्षा की, जिसे देखकर लोगों ने रंगों और गुलाल के साथ इस परंपरा की शुरुआत की।

गुलाल उड़ाने की परंपरा कहा जाता है कि रंग पंचमी पर गुलाल उड़ाने से देवता प्रसन्न होते हैं। और सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। यह रंग केवल बाहरी नहीं होते, बल्कि हमारे जीवन में नई ऊर्जा और उत्साह का संचार भी करते है।

नकारात्मक शक्तियों से मुक्ति पौराणिक मान्यता के अनुसार, रंग पंचमी के दिन वातावरण में फैली सभी नकारात्मक शक्तियाँ समाप्त हो जाती हैं। और वातावरण शुद्ध हो जाता है। इस दिन किए गए विशेष पूजन से घर में शांति और समृद्धि का आगमन होता है।

रंग पंचमी कैसे मनाई जाती है? गुलाल और अबीर अर्पण: इस दिन विशेष रूप से राधा-कृष्ण को गुलाल और अबीर अर्पित किया जाता है।

धार्मिक अनुष्ठान और पूजन। कई स्थानों पर विशेष धार्मिक अनुष्ठान और पूजन का आयोजन किया जाता है।

सामूहिक उत्सव और आनंद रंग पंचमी के दिन विभिन्न स्थानों पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जहां लोग एकत्रित होकर गुलाल उड़ाते हैं। और उत्सव का आनंद लेते हैं।

पुरुषों का सच्चा साथी है मोरिंगा, 5 समस्याओं से दिलाता राहत और सेहत बनाता है बेमिसाल

पुराणों के अनुसार भगवान विष्णु के नाभि कमल से उत्पन ब्रम्हा की आयु १०० दिव्य वर्ष मानी गयी है। पितामह ब्रम्हा के प्रथम ५० वर्षों को पूर्वार्ध एवं अगले ५० वर्षों को उत्तरार्ध कहते हैं। सतयुग, त्रेता, द्वापर एवं कलियुग को मिलकर एक महायुग कहते हैं। ऐसे १००० महायुगों का ब्रम्हा का एक दिन होता है। इसी प्रकार १००० महायुगों का ब्रम्हा की एक रात्रि होती है। अर्थात परमपिता ब्रम्हा का एक पूरा दिन २००० महायुगों का होता है। ब्रम्हा के १००० दिनों का भगवान विष्णु की एक घटी होती है। भगवान विष्णु की १२००००० (बारह लाख) घाटियों की भगवान शिव की आधी कला होती है। महादेव की १०००००००००० (एक अरब) अर्ध्कला व्यतीत होने पर १ ब्रम्हाक्ष होता है। अभी ब्रम्हा के उत्तरार्ध का पहला वर्ष चल रहा है (ब्रम्हा का ५१ वा वर्ष)।

ब्रम्हा के एक दिन में १४ मनु शाषण करते हैं:

1. स्वयंभू
2. स्वरोचिष
3. उत्तम
4. तामस
5. रैवत
6. चाक्षुष
7. वैवस्वत
8. सावर्णि
9. दक्ष सावर्णि
10. ब्रम्हा सावर्णि
11. धर्म सावर्णि
12. रूद्र सावर्णि
13. देव सावर्णि
14. इन्द्र सावर्णि

इस प्रकार ब्रम्हा के द्वितीय परार्ध (५१ वे) वर्ष के प्रथम दिन के छः मनु व्यतीत हो गए है और सातवे वैवस्वत मनु का अठाईसवा (२८) युग चल रहा है। इकहत्तर (७१) महायुगों का एक मनु होता है। १४ मनुओं का १ कल्प कहा जाता है जो की ब्रम्हा का एक दिन होता है। आदि में ब्रम्हा कल्प और अंत में पद्मा कल्प होता है। इस प्रकार कुल २ कल्प होते हैं। ब्रम्हा के परार्ध में रथन्तर तथा उत्तरार्ध में श्वेतवराह कल्प होता है। इस समय श्वेतवराह कल्प चल रहा है। इस प्रकार ब्रम्हा के १ दिन (कल्प) ४००० २०००००० (चार लाख बतीस "करोड़") मानव वर्ष के बराबर है जिसमे १४ मवंतर होते है. चार युगों का एक महायुग होता है।

1. सतयुग: सतयुग का काल १७२८००० (सत्रह लाख अठाईस हजार) वर्षों का होता है। इस युग में चार अमानवीय अवतार हुए. मत्स्यावतार, कुर्मावतार, वराहावतार एवं नरिसिंघवातर। सतयुग में पाप ० भाग तथा पुण्य २० भाग था। मनुष्यों की आयु १००००० वर्ष, उचाई २१ हाथ, पात्र स्वर्णमय, द्रव्य रत्नमय तथा ब्रम्हांडगत प्राण था। पुष्कर तीर्थ, स्त्रियाँ पद्मिनी तथा पतिव्रता थी। सूर्यग्रहण २००० तथा चंद्रग्रहण ५००० बार होते थे। सारे वर्ण अपने धर्म में लीन रहते थे। ब्राम्हण ४ वेद पढने वाले थे।
2. त्रेतायुग: त्रेतायुग का काल १२९६००० (बारह लाख छियान्वे हजार) वर्षों का होता है। इस युग में तीन मानवीय अवतार हुए। वामन, परशुराम एवं राम। त्रेता में पाप ५ भाग एवं पुण्य १५ भाग होता था। मनुष्यों की आयु १०००० वर्ष, उचाई १४ हाथ, पात्र चांदी के, द्रव्य स्वर्ण तथा अस्थिगत प्राण था। नैमिषारण्य तीर्थ, स्त्रियाँ पतिव्रता होती थी। सूर्यग्रहण २०० तथा चंद्रग्रहण ५०० बार होते थे। सारे वर्ण अपने अपने कार्य में रत थे। ब्राम्हण वेद पढने वाले थे.
3. द्वापर युग: द्वापर युग का काल ८६४००० (आठ लाख चौसठ हजार) वर्षों का होता है। इस युग में २ मानवीय अवतार हुए। कृष्ण एवं बुद्ध। इस युग में पाप १० भाग एवं पुण्य १० भाग का होता था। मनुष्यों की आयु १००० वर्ष, उचाई ७ हाथ, पात्र ताम्र, द्रव्य चांदी तथा त्वचागत प्राण था। स्त्रियाँ शंखिनी होती थी। सूर्यग्रहण २० तथा चंद्रग्रहण ५० हुए। वर्ण व्यवस्था दूषित थी तथा ब्राम्हण २ वेद पढने वाले थे।
4. कलियुग: कलियुग का काल ४ २००० (चार लाख २ हजार) वर्षों का होता है। इस युग में एक अवतार संभल देश, गोड़ ब्राम्हण विष्णु यश के घर कल्कि नाम से होगा। इस युग में पाप १५ भाग एवं पुण्य ५ भाग होगा। मनुष्यों की आयु १०० वर्ष, उचाई .५ हाथ, पात्र मिटटी, द्रव्य ताम्र, मुद्रा लौह, गंगा तीर्थ तथा अन्नमय प्राण होगा।

साधु-संत खड़ाऊ क्यों पहनते हैं

पैरों में लकड़ी के खड़ाऊ पहनने के पीछे भी हमारे साधु-संतों की सोच पूर्णतः वैज्ञानिक थी। गुरुत्वाकर्षण का जो सिद्धांत वैज्ञानिकों ने बाद में प्रतिपादित किया उसे हमारे ऋषि-मुनियों ने काफी पहले ही समझ लिया था। उस सिद्धांत के अनुसार शरीर में प्रवाहित हो रही विद्युत तरंगे जमीन में नगें पांव पड़ने के कारण पृथ्वी द्वारा अवशोषित कर ली जाती हैं। यह प्रक्रिया अगर निरंतर चले तो शरीर की जैविक शक्ति (वाइटल्टी फोर्स) समाप्त हो जाती है। इसी जैविक शक्ति को बचाने के लिए साधु-संतों ने पैरों में खड़ाऊ पहनने की प्रथा प्रारंभ की ताकि शरीर की विद्युत तंरगों का पृथ्वी की अवशोषण शक्ति के साथ संपर्क न हो सके। पुरातन समय चमड़े का जूता कई धार्मिक, सामाजिक कारणों से समाज के एक बड़े वर्ग को मान्य न था और कपड़े के जूते का प्रयोग हर कहीं सफल नहीं हो पाया। जबकि लकड़ी के खड़ाऊ पहनने से किसी धर्म व समाज के लोगों के आपत्ति नहीं थी इसीलिए यह अधिक प्रचलन में आए। कालांतर में यही खड़ाऊ ऋषि-मुनियों के स्वरूप के साथ जुड़ गए।

गरुड़ पुराण में दो मंत्र

संजीवनी मंत्र - यक्षि ओम उं स्वाहा

गरीबी दूर करने का मंत्र - ॐ जूं सः

गरुड़ पुराण में बताए गए इन मंत्रों के बारे में ज़्यादा जानकारी:

गरुड़ पुराण में भगवान विष्णु ने संजीवनी मंत्र बताया है.

मान्यता है कि इस मंत्र का जाप करने से स्वस्थ शरीर और लंबी उम्र मिलती है.

इस मंत्र का जाप सिद्ध व्यक्ति के मार्गदर्शन में करना चाहिए.

इस मंत्र का जाप हमेशा जगत कल्याण के लिए करना चाहिए.

गरुड़ पुराण में बताया गया है कि इस मंत्र को सिद्ध करके मृत व्यक्ति के कान में फूंक दिया जाए, तो उसके शरीर में फिर से प्राण वापस आ सकते हैं.

गरुड़ पुराण में बताया गया है कि 'ॐ जूं सः' मंत्र का जाप करने से जल्द ही आर्थिक तंगी से छुटकारा मिल जाता है.

इस मंत्र के साथ-साथ श्री विष्णु सहस्त्रनाम पाठ भी करना चाहिए.

मान्यता है कि छह महीने तक इस जाप का पाठ करने से जीवन की हर बाधा दूर हो जाती है.

इस संसार में जरा भी रस नहीं है, रस केवल भविष्य की आशा में है। हम जहां भी आज हैं, वहां तो दुखी हैं।

लेकिन सोचते हैं कि कल एक बड़ा मकान बनेगा और वहां आनंद होगा। कल सुंदर पत्नी/पति होगा, तो आनंद होगा। आज जो/जितना है, उसमें तो दुखी हैं। लेकिन सोचते हैं, कल ज्यादा हो जाएगा और बड़ा रस आएगा। कल जो कुछ होगा, जिससे रस घटित होने वाला है। 'कल की आशा' में हम आज के दुख को बिताते हैं। और वह कल कभी नहीं आता। जो भी है, वह आज है। संसार आशा है, उस आशा में रस है। हमें भय लगता है साक्षी होने में, कहीं हमारी यह 'कल की सम्भावना' का रस खो न जाए। क्योंकि साक्षी होते ही भविष्य खो जाता है केवल वर्तमान ही रह जाता है। ध्यान रहे कि संसार में रस नहीं है, जो खो जाएगा। यदि संसार में रस होता, तब तो धर्म की कोई आवश्यकता ही नहीं होती। संसार में दुख है, इसलिए धर्म पैदा हो सका है। संसार में बीमारी है, इसलिए धर्म से/में चिकित्सा खोजी जा सकी है। यदि संसार में स्वास्थ्य होता, तब धर्म तो बिलकुल निष्प्रयोजन हो जाता। और धर्म की आवश्यकता तब तक बनी रहेगी, जब तक दुख है। संसार में दुख मिटता ही नहीं। एक दुख मिटा भी लें तो दस नये दुख पैदा हो जातें हैं। पुराने दुख मिट जाते हैं, तो नए दुख आ जातें हैं लेकिन दुख नहीं मिटता। आज तक कोई यह नहीं कह सका कि हमारा दुख मिट गया, अब हम आनंद में हैं। कुछ व्यक्ति जरूर कह सके हैं कि हमारा दुख मिट गया और हम आनंद में हैं। लेकिन वे व्यक्ति वही हैं, जिन्होंने धर्म का प्रयोग/अभ्यास किया है। वास्तव में धर्म से रहित कोई भी व्यक्ति आज तक यह नहीं कह सका कि रमैं आनंद में हूं।

मन में शांति की लहरें प्रकट करनेवाली मुद्रा : शांत मुद्रा

यह मुदा कोध को शांत करने में अत्यंत लाभदायी है, इसीलिए इसका नाम 'शांत मुद्रा' रखा गया हैं।

लाभ : (1) जिसे बार-बार क्रोध आता हो या स्वभाव चिड़चिड़ा हो, उसके लिए यह मुद्रा वरदानस्वरूप है। इस मुद्रा से क्रोध तत्काल शांत हो जाता हैं।

(2) क्रोध के स्पंदनों पर शांति के स्पंदनों का टकराव होने से शरीर का तान-तनाव कम हो जाता हैं।

(*) मन भी आसानी से शांत हो जाता हैं। शांतिवर्धक लहरें तन-मन में संचारित होने लगती हैं।

(4) इस मुद्रा को करने पर आप विशेष एकाग्रता का अनुभव करेंगे।

विधि : (1) ध्यान के लिए अनुकूल पड़े ऐसे किसी भी आसन में बैठ जायें। आप यात्रा के समय भी किसी अनुकूल आसन में यह कर सकते हैं।

(2) उँगलियों के अग्रभागों को अँगूठे के अग्रभाग से चारों तरफ से मिलायें। अँगूठे व उँगलियों को थोड़ा- सा मोड़ें, जिससे उँगलियों के अग्रभाग अँगूठे के अग्रभाग से अच्छी तरह मिल जायें।

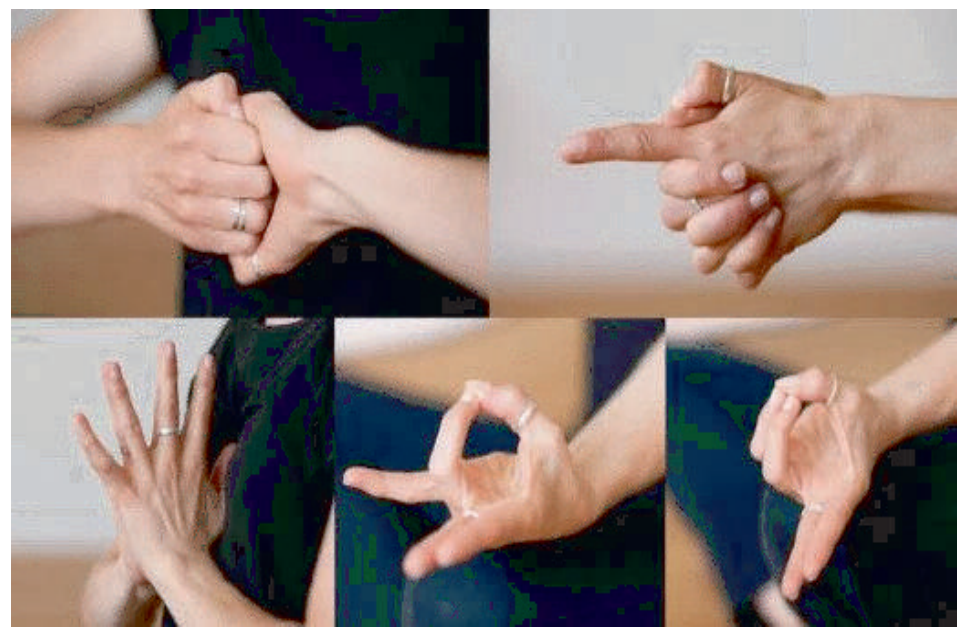

(*) अँगूठे के अग्रभाग पर एकाग्र हों और उँगलियों की सनसनी अनुभव करें।

मुद्रा-विज्ञान : पाँचों उँगलियाँ मिलाने पर अग्नि, वायु, आकाश, पृथ्वी और जल ये पाँचों तत्व इकट्ठे हो जाते हैं। इससे प्राणशक्ति पुष्ट होती हैं।

आशीर्वाद सहनशील

किसी के आशीर्वाद को न तो पानी में बहाया जा सकता है और न आग में जलाया जा सकता है प्रेम एक अनमोल ख़ज़ाना है नरम दिल वालों और महान आत्माओं पर यह परमपिता परमेश्वर की दयालुता है..!!

जीवन बहुत छोटा है उसे जियो प्रेम दुर्लभ है उसे पकड़ कर रखो क्रोध बहुत खराब है उसे दबा कर रखो भय बहुत भयानक है उस का सामना करो स्मृतियां बहुत सुखद हैं उन्हें संजो कर रखो अगर आप के पास मन की शांति है तो समझ लेना आपसे अधिक भाग्य शाली कोई नहीं है.!

दुष्टों के साथ मैत्री और वैर दोनों ही नहीं करनी चाहिए क्योंकि वह दोनों स्थितियों में अनिष्ट करता है। जैसे कि जलते हुए कोयले को स्पर्श करने से वह हाथ को भी जलाता है और ठण्डा होने पर छूने से हाथ को काला भी करता है।

कुछ सहन करना भी सीखना चाहिए क्योंकि हममें भी ऐसी बहुत सी कमियाँ हैं जिन्हें दूसरे सहन करते हैं भावनाओं को समझने वाला अनपढ़ इंसान दुनिया का सबसे ज्ञानी व्यक्ति होता है। जहाँ भावनाओं का साम्राज्य हो वहाँ मस्तिष्क नहीं लगाना चाइए। मधुर संबंध बोले गए शब्दों पर नहीं, बल्कि भावनाओं को महसूस करने पर आधारित होते हैं।

बाकी पेन में जिस रंग की स्याही होगी लिखावट उसी रंग की होगी ठीक उसी तरह मनुष्य के मन में जैसे विचार होंगे उसके कर्म भी वैसे ही होंगे।

सिद्धांतों पर चलना भी जीवन का एक बहुत बड़ा गुण है। जिस जीवन में सिद्धांत नहीं हैं वो जीवन कभी भी श्रेष्ठ एवं आदर्श जीवन नहीं बन सकता है।

!!!'अपने अस्तित्व और अधिकार के लिए अवश्य लड़ें, भले ही हम कितने भी दुर्बल क्यों ना हो' !!!

हम बदलें तो दुनिया बदले

फ्रीज़ किए गए नींबू के आश्चर्यजनक लाभकारी स्वास्थ्यवर्धक परिणाम

सबसे पहले नींबू को धोकर फ्रीज़र में रखिए। 8 से 10 घंटे बाद वह बर्फ़ जैसा ठंडा तथा कड़ा हो जाएगा। अब उपयोग मे लाने के लिए उसे कद्दूकस कर लें। इसे आप जो भी खाएँ उस पर डाल कर इसे खा सकते हैं।

इससे खाद्य पदार्थ में एक अलग ही टेस्ट आऐगा।

नीबू के रस में विटामिन सी होता है।

ये तो आप जानते ही हैं लेकिन आइये देखें इसके और क्या क्या फायदे हैं.?

नीबू के छिलके में ५ से १० गुना अधिक विटामिन सी होता है और वही हम फेंक देते हैं।

नींबू के छिलके में शरीर के सभी विषेले द्रव्यों को बाहर निकालने कि क्षमता होती है।

नींबू का छिलका कैंसर का नाश करता है। इसका छिलका कैमोथेरेपी से 10,000 गुना ज्यादा प्रभावी है।

यह बैक्टेरियल इन्फेक्शन, फंगस आदि पर भी प्रभावी है।

नींबू का रस विशेषतः छिलका, रक्तदाब तथा मानसिक दबाव को नियंत्रित करता है।

नींबू का छिलका 12 से ज्यादा प्रकार के कैंसर में पूर्ण प्रभावी है और वो भी बिना किसी साईड इफेक्ट के।

इसलिये आप अच्छे पके हुए तथा स्वच्छ नींबू फ्रीज़र में रखें और कद्दूकस कर प्रतिदिन अपने आहार के साथ प्रयोग करें।

"कालचक्र"

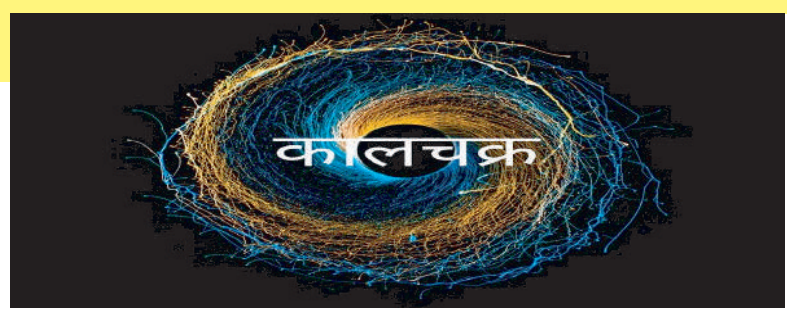

पुराणों के अनुसार भगवान विष्णु के नाभि कमल से उत्पन ब्रम्हा की आयु १०० दिव्य वर्ष मानी गयी है। पितामह ब्रम्हा के प्रथम ५० वर्षों को पूर्वार्ध एवं अगले ५० वर्षों को उत्तरार्ध कहते हैं। सतयुग, त्रेता, द्वापर एवं कलियुग को मिलकर एक महायुग कहते हैं। ऐसे १००० महायुगों का ब्रम्हा का एक दिन होता है। इसी प्रकार १००० महायुगों का ब्रम्हा की एक रात्रि होती है। अर्थात परमपिता ब्रम्हा का एक पूरा दिन २००० महायुगों का होता है। ब्रम्हा के १००० दिनों का भगवान विष्णु की एक घटी होती है। भगवान विष्णु की १२००००० (बारह लाख) घाटियों की भगवान शिव की आधी कला होती है। महादेव की १०००००००००० (एक अरब) अर्ध्कला व्यतीत होने पर १ ब्रम्हाक्ष होता है। अभी ब्रम्हा के उत्तरार्ध का पहला वर्ष चल रहा है (ब्रम्हा का ५१ वा वर्ष)।

ब्रम्हा के एक दिन में १४ मनु शाषण करते हैं:

1. स्वयंभू
2. स्वरोचिष
3. उत्तम
4. तामस
5. रैवत
6. चाक्षुष
7. वैवस्वत
8. सावर्णि
9. दक्ष सावर्णि
10. ब्रम्हा सावर्णि
11. धर्म सावर्णि
12. रूद्र सावर्णि
13. देव सावर्णि
14. इन्द्र सावर्णि

इस प्रकार ब्रम्हा के द्वितीय परार्ध (५१ वे) वर्ष के प्रथम दिन के छः मनु व्यतीत हो गए है और सातवे वैवस्वत मनु का अठाईसवा (२८) युग चल रहा है। इकहत्तर (७१) महायुगों का एक मनु होता है। १४ मनुओं का १ कल्प कहा जाता है जो की ब्रम्हा का एक दिन होता है। आदि में ब्रम्हा कल्प और अंत में पद्मा कल्प होता है। इस प्रकार कुल २ कल्प होते हैं। ब्रम्हा के परार्ध में रथन्तर तथा उत्तरार्ध में श्वेतवराह कल्प होता है। इस समय श्वेतवराह कल्प चल रहा है। इस प्रकार ब्रम्हा के १ दिन (कल्प) ४००० २०००००० (चार लाख बतीस "करोड़") मानव वर्ष के बराबर है जिसमे १४ मवंतर होते है. चार युगों का एक महायुग होता है।

1. सतयुग: सतयुग का काल १७२८००० (सत्रह लाख अठाईस हजार) वर्षों का होता है। इस युग में चार अमानवीय अवतार हुए. मत्स्यावतार, कुर्मावतार, वराहावतार एवं नरिसिंघवातर। सतयुग में पाप ० भाग तथा पुण्य २० भाग था। मनुष्यों की आयु १००००० वर्ष, उचाई २१ हाथ, पात्र स्वर्णमय, द्रव्य रत्नमय तथा ब्रम्हांडगत प्राण था। पुष्कर तीर्थ, स्त्रियाँ पद्मिनी तथा पतिव्रता थी। सूर्यग्रहण २००० तथा चंद्रग्रहण ५००० बार होते थे। सारे वर्ण अपने धर्म में लीन रहते थे। ब्राम्हण ४ वेद पढने वाले थे।
2. त्रेतायुग: त्रेतायुग का काल १२९६००० (बारह लाख छियान्वे हजार) वर्षों का होता है। इस युग में तीन मानवीय अवतार हुए। वामन, परशुराम एवं राम। त्रेता में पाप ५ भाग एवं पुण्य १५ भाग होता था। मनुष्यों की आयु १०००० वर्ष, उचाई १४ हाथ, पात्र चांदी के, द्रव्य स्वर्ण तथा अस्थिगत प्राण था। नैमिषारण्य तीर्थ, स्त्रियाँ पतिव्रता होती थी। सूर्यग्रहण २०० तथा चंद्रग्रहण ५०० बार होते थे। सारे वर्ण अपने अपने कार्य में रत थे। ब्राम्हण वेद पढने वाले थे.
3. द्वापर युग: द्वापर युग का काल ८६४००० (आठ लाख चौसठ हजार) वर्षों का होता है। इस युग में २ मानवीय अवतार हुए। कृष्ण एवं बुद्ध। इस युग में पाप १० भाग एवं पुण्य १० भाग का होता था। मनुष्यों की आयु १००० वर्ष, उचाई ७ हाथ, पात्र ताम्र, द्रव्य चांदी तथा त्वचागत प्राण था। स्त्रियाँ शंखिनी होती थी। सूर्यग्रहण २० तथा चंद्रग्रहण ५० हुए। वर्ण व्यवस्था दूषित थी तथा ब्राम्हण २ वेद पढने वाले थे।
4. कलियुग: कलियुग का काल ४ २००० (चार लाख २ हजार) वर्षों का होता है। इस युग में एक अवतार संभल देश, गोड़ ब्राम्हण विष्णु यश के घर कल्कि नाम से होगा। इस युग में पाप १५ भाग एवं पुण्य ५ भाग होगा। मनुष्यों की आयु १०० वर्ष, उचाई .५ हाथ, पात्र मिटटी, द्रव्य ताम्र, मुद्रा लौह, गंगा तीर्थ तथा अन्नमय प्राण होगा। कलियुग के अंत में गंगा पृथ्वी से लीन हो जाएगी तथा भगवान विष्णु धरती का त्याग कर देंगे। सभी वर्ण अपने कर्म से रहित होंगे तथा ब्राम्हण केवल एक वेद पढने वाले होंगे अर्थात ज्ञान का लोप हो जाएगा।

दिल्ली के नवनिर्वाचित विधायकों के दो दिवसीय ओरिएंटेशन कार्यक्रम का दिल्ली विधानसभा में शुभारंभ किया गया

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

नई दिल्ली । लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने मंगलवार को दिल्ली के नवनिर्वाचित विधायकों के दो दिवसीय ओरिएंटेशन कार्यक्रम का दिल्ली विधानसभा में शुभारंभ किया। इस दौरान कार्यक्रम को दिल्ली को 'मिनी इंडिया' के रूप में देखते हुए उन्होंने कहा कि विधायकों के विचार और विजन राजधानी के लोगों के सामाजिक कल्याण के बारे में होने चाहिए। यह आयोजन विधानसभा के सभागार में हुआ।

सुबह से ही विधायकों का पहुंचना शुरू हो गया था। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला के स्वागत के लिए दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता, विधायक और सांसद मौजूद रही। इसके अलावा, विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष आतिशी भी स्वागत के लिए वहां पहुंचीं। रेखा गुप्ता के साथ विधानसभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता भी नजर आए। कार्यक्रम में सभी विधायकों के लिए खास व्यवस्था की गई थी ताकि वे विधानसभा की कार्यप्रणाली को अच्छे से समझ सकें।

यह ओरिएंटेशन कार्यक्रम नए विधायकों के लिए बेहद अहम माना जा गया। इसमें उन्हें विधानसभा के नियम-कायदे, कानून बनाने की प्रक्रिया और जनता के हित में काम करने के तौर-तरीकों की जानकारी दी गई। लोकसभा अध्यक्ष अपने अनुभव साझा करते हुए विधायकों को सुशासन के गुर सिखाएं। दिल्ली विधानसभा के इस कदम को नए सदस्यों को तैयार करने की दिशा में एक सकारात्मक पहल माना गया है।

कार्यक्रम के पहले दिन विधायकों में उत्साह देखा गया। सभी इस मौके का फायदा उठाकर अपनी जिम्मेदारियों को बेहतर तरीके से समझने के लिए तैयार हैं। यह आयोजन बुधवार तक चलेगा और उम्मीद है कि इससे विधायकों को अपने काम में मदद मिलेगी।

दिल्ली के विधायकों के लिए ओरिएंटेशन कार्यक्रम के दूसरे दिन विधानसभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता ने कहा, ₹व्यापक तैयारियां की गई हैं। विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया है। इसमें आठ सत्र होंगे। यह कार्यशाला नवनिर्वाचित और सभी विधायकों के लिए बहुत उपयोगी होगी, जिससे उन्हें अपने विधायी कार्यों में मदद मिलेगी। इससे विधानसभा में अधिक चर्चा होगी और वे अधिक उत्पादक और परिणामोन्मुखी बनेंगे।"

दिल्ली के विधायकों के लिए आयोजित ओरिएंटेशन कार्यक्रम के दूसरे दिन भाजपा विधायक हरीश खुराना ने आईएएनएस से बातचीत में कहा, ₹पहली बार चुनकर आए कई विधायकों को लोकतंत्र के इस मंदिर में, विधानमंडल के अंदर कैसे व्यवहार करना चाहिए, इस बारे में आचार संहिता को समझने की जरूरत है। इसमें लोकसभा स्पीकर भी शामिल हुए। उन्होंने हमें इस बारे में पूरी जानकारी विस्तारपूर्वक दी। आने वाले पांच साल में हम लोग अपनी बात कैसे रखें, इस बारे में बताया गया ।"

भाजपा सांसद कमलजीत सहरावत ने कहा, ₹भारतीय जनता पार्टी पूर्व-योजना, पूर्ण-योजना के नियम पर चलने वाली पार्टी है, यानी अगर आप पहले से काम की योजना बनाकर उसे क्रियान्वित करेंगे तो बेहतर परिणाम जल्दी मिलेंगे। हम इसी दृष्टिकोण में विश्वास करते हैं, यही वजह है कि विधायकों के लिए यह दो दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किया गया है।"

विधायक अभय वर्मा भाजपा विधायक दल के मुख्य सचेतक नियुक्त

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली: दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा एवं मुख्य मंत्री रेखा गुप्ता की उपस्थिती में दिल्ली भाजपा के विधायक दल की बैठक आज दिल्ली विधानसभा परिसर में सम्पन्न हुई।

बैठक में विधानसभा दल की गतिविधियाँ सुचारू रूप से चलाने के लिए मुख्य सचेतक की नियुक्ति को लेकर चर्चा हुई और सभी विधायकों ने निर्णय बैठक में उपस्थित प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा पर छोड़ दिया।

प्रदेश अध्यक्ष ने विधानसभा दल की अध्यक्ष एवं मुख्य मंत्री से चर्चा कर लक्ष्मी नगर से दूसरी बार विधायक चुने गये अभय वर्मा को विधायक दल का मुख्य सचेतक नियुक्त किए जाने की घोषणा की।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की विधायक अभय वर्मा दिल्ली की राजनीति में पूर्वांचल का एक पहचाना हुआ चेहरा हैं और उनके पास विधायक होने के अनुभव के साथ ही कानून की समझ भी है अतः हम उम्मीद करते हैं की वह कुशलतापूर्वक मुख्य सचेतक का दायित्व निर्वहण कर सकेंगे।

अभय वर्मा वर्तमान में 2021 से दिल्ली भाजपा के मुख्य प्रवक्ता हैं।

अभय वर्मा प्रदेश भाजपा पूर्वांचल मोर्चा के अध्यक्ष के आलावा चार कार्यकाल दिल्ली प्रदेश भाजपा के उपाध्यक्ष भी रहे हैं।

अभय वर्मा विद्यार्थि काल से भाजपा विचार परिवार से जुड़े रहे हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय की ला फैकल्टी छात्र संघ के अध्यक्ष रहे। दिल्ली बार एसोसिएशन के दो बार सदस्य भी चुने गये और एक बार अवैतनिक सचिव रहे।

चांदनी चौक में गन प्वाइंट पर 80 लाख की लूट, फायरिंग कर व्यापारी से बैग छीन ले गए बदमाश

दिल्ली में बदमाशों के हौसलें बुलंद हैं। आए दिन लूट की घटनाएं सामने आ रही हैं। ताजा मामले में बदमाशों ने राजधानी दिल्ली के चांदनी चौक के हवेली हैदर कुली में अंगड़िया व्यापारी से बंदूक की नोक पर 80 लाख रुपये लूट लिए। बदमाशों ने पहले फायरिंग की और फिर पैसों से भरा बैग छीनकर मौके से फरार हो गए। पुलिस मामले की जांच में जुट गई है।

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के लाहौरी गेट थाना इलाके में अंगड़िया व्यापारी से करीब 80 लाख रुपये की लूट हुई है। बदमाश ने पहले फायरिंग की और फिर व्यापारी से रुपयों से भरा बैग छीनकर मौके से फरार हो गए। लाहौरी गेट थाना इलाके के हवेली हैदर कुली चांदनी चौक में वारदात को अंजाम दिया गया। दिल्ली में गन पॉइंट पर हुई इस लूट का सीसीटीवी फुटेज भी सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। उत्तरी जिले की कई अलग-अलग पुलिस की टीमें मामले की जांच में जुट गई हैं। फिलहाल पुलिस लगातार मामले की जांच और पीड़ित से पूछताछ कर रही है। लूट की घटना 17 मार्च दिन सोमवार शाम की है। वीडियो में देखा जा रहा है कि एक बदमाश पीछे से टोपी पहने हुए आता है और व्यापारी को बंदूक अड़ाकर उससे रुपयों से भरा बैग छीन ले जाता है।

प्रवीण श्रीवास्तव ने की माननीय मुख्यमंत्री पंजाब से मुलाकात

मुख्य संवाददाता

लुधियाना के रेडिसन ब्लू होटल में राज्य सभा सांसद संजीव अरोड़ा के द्वारा ₹सनतकार मिलनऱ के समारोह का आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक और दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने की। इस कार्यक्रम में अरविंद केजरीवाल और माननीय मुख्यमंत्री पंजाब सः भगवंत सिंह मान मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रहे और पंजाब सरकार के माननीय कैबिनेट मंत्री सःहरदीप मुंडिया और सः तरुणप्रीत सौंध ने भी मुख्य अतिथियों के साथ मंच सांझा किया। सनतकार मिलन समारोह में पंजाब के उद्योगपतियों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। कार्यक्रम के मंच से संबोधित करते हुए राष्ट्रीय संयोजक (आप) अरविंद केजरीवाल और मुख्यमंत्री पंजाब सः भगवंत सिंह मान ने भरोसा दिलाया कि पंजाब सरकार व्यापारी वर्ग के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी है और आने वाले समय में सरकार उद्योग जगत को और भी मजबूत बनाएगी।अपने भाषण के दौरान अरविंद केजरीवाल ने बोला कि मान सरकार पंजाब को नशामुक्त एवं भ्रष्टाचारमुक्त बनाने के लिए वचनबद्ध है जिसके अंतर्गत पंजाब सरकार के द्वारा इस दिशा में कई कड़े कदम उठाए जा रहे है।जिससे पंजाबियों का रंगला पंजाब बनने का सपना जल्द साकार होगा।

इस विशेष अवसर पर लुधियाना से प्रवीण श्रीवास्तव ने माननीय मुख्यमंत्री पंजाब से विशेष रूप से मुलाकात की और राज्य सभा सांसद संजीव अरोड़ा को लुधियाना (पश्चिम) से विधायक का उम्मीदवार बनने पर हार्दिक बधाई दी।

हमें सदन में इस जिम्मेदारी के साथ बैठना चाहिए कि जो हम जनता की बात रखते हैं, उसे लोग आज ही नहीं, बल्कि सैकड़ो साल तक पढ़ेंगे और देखेंगे - आतिशी

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली। नव गठित दिल्ली विधानसभा के सभी सदस्यों के लिए मंगलवार को सदन में आयोजित दो दिवसीय ओरिएंटेशन प्रोग्राम को आम आदमी पार्टी की वरिष्ठ नेता और नेता प्रतिपक्ष आतिशी ने संबोधित किया। उन्होंने कहा कि मैं उम्मीद करती हूं कि हम सभी दिल्ली की जनता की उम्मीदों पर खरा उतर कर सदन में बैठने की अपनी जिम्मेदारी निभाएंगे। हमें सदन में इस जिम्मेदारी के साथ बैठना चाहिए कि जो हम जनता की बात रखते हैं, उसे लोग आज ही नहीं, बल्कि सैकड़ो साल तक पढ़ेंगे और देखेंगे। उन्होंने कहा कि अंग्रेजों ने हमें वोट का अधिकार तो दिया, लेकिन निर्णय लेने का नहीं दिया था। इसके लिए देश के लाखों लोगों ने अपनी कुर्बानियां दी, तब जाकर हमें आजादी मिली। बाबा साहब डॉ. अंबेडकर के संविधान से मिली निर्णय लेने की ताकत के साथ हम सभी दिल्ली के लाखों लोगों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं और लोग बड़ी उम्मीद भरी निगाहों से हमारी ओर देख रहे हैं।

सदन में नेता प्रतिपक्ष आतिशी ने सभी विधायकों को बधाई देते हुए कहा कि दिल्ली की जनता ने हम 70 लोगों पर अपना भरोसा दिखाया और इस विधानसभा में अपना प्रतिनिधित्व करने के लिए भेजा है। इस सदन में बैठना सिर्फ एक गरिमा और गर्व की बात नहीं है, बल्कि इस सदन में बैठना एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। विधानसभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता और लोकसभा के सेक्रेटरी जनरल उत्पल कुमार सिंह ने हम सभी को इस जिम्मेदारी को याद करवाया और सदन का इतिहास हमारे सामने रखा।

आतिशी ने कहा कि इस सदन में जब पहली बार अंग्रेजों ने भारत के लोगों को वोट का अधिकार दिया था। तब एक वोट का अधिकार की एक शुरुआत हुई थी। तब इस सदन में लाला लाजपत राय, पंडित मदन मोहन मालवीय, मोतीलाल नेहरू, विट्ठल भाई पटेल इस सदन में बैठे थे। इस सदन में उन्होंने भारत की आजादी की आवाज उठाई थी। 150 साल बीत गए, लेकिन आज जो कुछ इस सदन में याद किया गया, वह इतिहास की किताबों में लिखा गया है और हम सभी उसे याद करते हैं।

उन्होंने कहा कि हम सब इस सदन में जो कुछ कहते हैं, जनता की बात रखते हैं, वह आज ही नहीं, बल्कि सैकड़ो साल तक लोग उसे पढ़ेंगे और देखेंगे। हम सबको इस जिम्मेदारी के साथ इस सदन में बैठना है। जब यहां पर लाला लाजपत राय, विट्ठल भाई पटेल, पंडित मदन मोहन मालवीय बैठते थे और आजादी की बात रखते थे। याद रखने

वाली बात यह है कि उनको बोलने का अधिकार तो था, पर उस समय अंग्रेजों ने उन्हें निर्णय लेने का अधिकार नहीं दिया था। इस सदन में जो भी एक्ट पास होता था, उस पर एकाधिकार अंग्रेजों का होता था। हम लोगों को निर्णय लेने के अधिकार के लिए इस देश के सैकड़ों, लाखों लोगों ने अपनी कुर्बानियां दी, तब जाकर इस देश को आजादी मिली।

आतिशी ने कहा कि जब भारत को आजादी मिली और जब भारत का संविधान बना, तब भारत दुनिया के कुछ ऐसे देश में शामिल था, जिन्होंने अपने देश की महिलाओं तक को वोट देने का अधिकार दिया। जब भारत में महिलाओं को वोट देने का अधिकार मिला था, तब दुनिया में कई ऐसे विकसित देश भी थे, जो महिलाओं को वोट देने का अधिकार नहीं दिए थे। अगर हम सबको निर्णय लेने का अधिकार मिला, हम सबको अगर एक वोट की ताकत मिली तो वह ताकत हमें बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर ने जो संविधान इस देश को दिया, उससे मिली। उस संविधान की वजह से हमें निर्णय लेने की ताकत मिली।

उन्होंने कहा कि आज हम लोग बाबा साहब भीमराव अंबेडकर के संविधान की ताकत के साथ यहां पर बैठे हैं, दिल्ली के लोगों के भरोसे के साथ बैठे हैं। यहां हम सभी 70 विधायक हैं, जो पक्ष और विपक्ष में हैं। मुझे लगता है कि हम यहां पर सिर्फ एक पार्टी या दूसरी पार्टी के नहीं, बल्कि यहां बैठा हर व्यक्ति लाखों लोगों का प्रतिनिधित्व कर रहा है और दिल्ली के लोग बहुत उम्मीद भरी निगाहों से हर व्यक्ति को देख रहे हैं। मैं उम्मीद करती हूं कि हम सब मिलकर आने वाले 5 सालों में दिल्ली के लोगों की उम्मीद पर खरा उतरेंगे।

टेनिस क्रिकेट प्रीमियर लीग TCPL (टीसीपीएल) लॉन्च की गई

मुख्य संवाददाता

टेनिस क्रिकेट प्रीमियर लीग TCPL (टीसीपीएल) लॉन्च की गई है और अरबाज खान को टेनिस क्रिकेट प्रीमियर लीग का ब्रांड एंबेसडर नियुक्त किया गया है। टेनिस क्रिकेट प्रीमियर लीग (टीसीपीएल) का उद्देश्य टेनिस-बॉल क्रिकेट उत्साही लोगों के लिए एक पेशेवर और व्यावसायिक मंच प्रदान करना है। पुरुषों के टेनिस बॉल क्रिकेट टूर्नामेंट में भारत से तीन टीमें और खाड़ी से तीन टीमें हैं। अरबाज खान को टेनिस क्रिकेट प्रीमियर लीग का ब्रांड एंबेसडर नियुक्त किया गया है। टीसीपीएल के प्रतिनिधि के रूप में, अरबाज खान हमारी लीग के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

भूमिया स्पोर्ट्स एंटरटेनमेंट प्रा. लि. भारत और विश्व में टेनिस क्रिकेट को प्रोत्साहित करने के लिए टेनिस क्रिकेट प्रीमियर लीग (टीसीपीएल) का आयोजन कर रही है। टीसीपीएल का उद्देश्य सभी के लिए टेनिस क्रिकेट में कौशल और प्रशिक्षण को बढ़ाना है। इसके अलावा, टीसीपीएल स्थानीय क्षेत्र से एक मंच प्रदान कर रहा है, यानी गली से वैश्विक स्तर पर सभी टेनिस क्रिकेट उत्साही लोगों के लिए जो टेनिस क्रिकेट खेलना पसंद करते हैं। टीसीपीएल टेनिस क्रिकेट के साथ आउटडोर खेलों को बढ़ावा दे रहा है जहां लोग खेलते हैं और दुनिया भर में स्वस्थ और फिट रहते हैं।

टीसीपीएल आयोजन टीम में अरबाज खान (ब्रांड एंबेसडर), सौरव गुप्ता (निदेशक), विक्की पांडे (निदेशक), अजय गुप्ता (संस्थापक), विशाल अरोड़ा (अध्यक्ष), राजेश गुप्ता (निदेशक), करण मेंदीरत्ता (संस्थापक) शामिल हैं।

टीसीपीएल भारत और विश्व के स्थानीय शहरों में टेनिस खेल आयोजनों का आयोजन करेगा। इसके अलावा, टीसीपीएल की योजना छात्रों को टेनिस क्रिकेट के विशेषज्ञ खेलने के लिए प्रशिक्षित करने की है।

टीसीपीएल का दृष्टिकोण और मिशन सभी के लिए प्रशिक्षण, प्लेटफॉर्म प्रदान करना, व्यवसाय और नौकरी के अवसर बनाना है।

टीसीपीएल का लक्ष्य सभी के लिए बेहतर

स्वास्थ्य है, जो बाहरी खेलों जैसे टेनिस क्रिकेट के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। क्रिकेट एक प्रसिद्ध खेल है और भारत और विश्व के सभी आयु समूहों द्वारा पसंद किया जाता है।

टीसीपीएल मैच भारत और दुबई में निर्धारित किए जाएंगे। टीसीपीएल भारत के ग्रामीण क्षेत्रों पर भी ध्यान केंद्रित करता है जहां प्रतिभा है और उन्हें टेनिस क्रिकेट के अपने कौशल को खोजने के लिए प्लेटफॉर्म प्रदान करता है।

ज़ी मीडिया ने अनवीलिंग इंडिया क्विज़ के विजेताओं की घोषणा की

मुख्य संवाददाता

ज़ी मीडिया और डिपार्टमेंट फॉर प्रमोशन ऑफ इंडस्ट्री एंड इंटरनल ट्रेड (डीपीआईआईटी) की ऐतिहासिक पहल, अनवीलिंग इंडिया क्विज़ के ग्रांड फिनाले का प्रसारण ज़ी मीडिया के नेटवर्क पर किया गया, जो पूरे देश के दर्शकों का दिल जीतकर भारत के सबसे ज्यादा प्रभावशाली ज्ञानवर्धक अभियानों में से एक बन गया। इस प्रसारण को मिली जबरदस्त प्रतिक्रिया से इस कार्यक्रम का विस्तार, उत्साह और सांस्कृतिक महत्व प्रदर्शित होता है।

इस प्रसारण में ऑनलाईन ओलंपियाड से लेकर गहन राज्य स्तरीय राउंड्स तक तीन माह तक चली प्रतिस्पर्धा की झलकियाँ पेश की गईं, जिनका समापन नेशनल फिनाले की कड़ी प्रतियोगिता के साथ हुआ। सर्वोच्च आठ टीमों में काँटे की टक्कर के बाद आर्मी पब्लिक स्कूल, जम्मू कैंट ने विजेता बनकर पहला पुरस्कार प्राप्त किया। राजगिरी पब्लिक स्कूल, केरला दूसरे स्थान पर रहे, वहीं लिटिल फ्लॉवर इंग्लिश मीडियम स्कूल, केरला ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। इन स्कूलों का बेहतरीन प्रदर्शन दर्शकों को बहुत पसंद आया, जिससे भविष्य के लीडर्स के निर्माण में शिक्षा की शक्ति को बल मिलता है।

इस प्रसारण में जियोग्राफिकल इंडिकेशन (जीआई) टैग्स पर क्विज़ के अद्वितीय फोकस पर बल दिया गया, जिसने युवाओं को भारत की स्वदेशी कारीगरी और क्षेत्र विशिष्ट उत्पादों का परिचय दिया। सांस्कृतिक और आर्थिक जागरुकता को महत्व दिए जाने के कारण यह प्रतियोगिता पारंपरिक लर्निंग की बजाय एक गहन शैक्षणिक अनुभव में बदल गई।

इस अभियान की अपार सफलता के बारे में करन अभिषेक सिंह, सीईओ, ज़ी मीडिया कॉर्पोरेशन लिमिटेड (जैडएमसीएल) ने कहा, ''ज़ी मीडिया में हमारा मानना है कि खबरों का उद्देश्य केवल जानकारी का वितरण करना नहीं है, बल्कि ये एक बेहतर और अधिक आत्मविश्वास वाले समाज का निर्माण भी करती हैं। हमारी प्रतिबद्धता सुर्खियों से बढ़कर है। हम ऐसे प्लेटफॉर्म का निर्माण करते हैं, जो समाज के विभिन्न वर्गों को सशक्त बनाते हैं। अनवीलिंग इंडिया क्विज़ ऐसा ही एक अभियान है, जो स्कूल के बच्चों को भारत के गौरवशाली इतिहास और आशाजनक भविष्य के बारे में सीखने के लिए प्रोत्साहित करता है।''

डीपीआईआईटी के सेक्रेटरी, अमरदीप सिंह भाटिया ने कहा, ''अनवीलिंग इंडिया क्विज़ ने भारत की आर्थिक व सांस्कृतिक विविधता के बारे में राष्ट्रीय गर्व की भावना का संचार किया है। यह अभियान केवल एक प्रतियोगिता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारत की विशाल संस्कृति के प्रति जिज्ञासा और गौरव की भावना उत्पन्न करने के लिए एक दीर्घकालिक अभियान है।''

अनवीलिंग इंडिया क्विज़ ने विजेताओं के हर्षोल्लास के साथ देश के लाखों विद्यार्थियों को अपनी अद्वितीय संस्कृति को आत्मसात करने, अपनी विरासत की खोज करने और भारत के गौरवशाली इतिहास पर गर्व महसूस करने की प्रेरणा दी है। ज़ी मीडिया और डीपीआईआईटी ऐसे शैक्षणिक कार्यक्रमों का विस्तार करने के लिए प्रतिबद्ध है, ताकि युवाओं को एक वैश्विक भविष्य के लिए प्रेरित, सशक्त व तैयार किया जा सके।

अनवीलिंग इंडिया क्विज़ की जबरदस्त सफलता ने पूरे देश में विद्यार्थियों की सहभागिता में नए मानक स्थापित कर दिए हैं, जिससे ज्ञानवर्धक इन्फोटेनमेंट का महत्व प्रदर्शित होता है।

साकेत बार चुनाव में अध्यक्ष पद के दावेदार सत्यजीत सिंह अधिवक्ताओं की पहली पसंद

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। जैसे-जैसे साकेत बार एसोसिएशन का चुनाव नजदीक आता जा रहा है चुनावी तस्वीर साफ होने लगी है। जहां तक अध्यक्ष पद का सवाल है कई प्रबल दावेदार पूरी ताकत के साथ अपनी रणनीति पर काम कर रहे हैं। इनमें एक प्रबल दावेदार वरिष्ठ अधिवक्ता सत्यजीत कुमार सिंह भी हैं। अधिवक्ताओं ने बताया कि वह साफ छवि के इमानदार कर्मठ व्यक्ति हैं और हमेशा अधिवक्ताओं के मान सम्मान एवं उनकी समस्याओं के समाधान के लिए प्रयासरत रहे हैं। इस कारण अधिकांश अधिवक्ताओं की वह पहली पसंद बनते जा रहे हैं। अधिवक्ता सत्यजीत सिंह ने अपने घोषणा पत्र में भी अधिवक्ताओं के मान-सम्मान, उनके चैंबर्स की व्यवस्था एवं बुनियादी समस्याओं के समाधान के साथ-साथ उनकी माली हालत में भी सुधार हो इसके लिए कई बिंदुओं का जिक्र किया है। साकेत बार एसोसिएशन के चुनाव में अधिवक्ता भी ऐसे उम्मीदवार को विजयी बनाना चाहते हैं जो सिर्फ चुनावी वादा नहीं कर अधिवक्ताओं के हित में काम करें तथा उन्हें इस सिस्टम में मान सम्मान दिलाए। इस बार देखने को मिल रहा है कि अधिवक्ता बदलाव के मूड में है तथा वह स्वच्छ छवि के उम्मीदवार के पक्ष में मतदान करना चाहते हैं,ताकि साकेत कोर्ट में एक स्वच्छ वातावरण एवं सुविधा युक्त माहौल में वह काम कर सके। ऐसी स्थिति में अध्यक्ष पद के उम्मीदवार अधिवक्ता सत्यजीत सिंह अन्य उम्मीदवारों से बढ़त बनाए हुए दिख रहे हैं।

सस्ते इलाज की राह निकालेगा जिम्स, विदेशी डिवाइस पर निर्भरता होगी कम

परिवहन विशेष न्यूज

सरकारी अस्पतालों में मरीजों की जांच और इलाज के खर्च को कम करने के लिए राजकीय आयुर्विज्ञान संस्थान (जिम्स) ने एक अनूठी पहल की है। जिम्स में मेडिकल छात्रों के शोध पर मंथन कर ऐसे आइडियाज की तलाश की जाएगी जिससे मरीजों के लिए सस्ते उपकरण और डिवाइस तैयार की जा सके। इसके लिए 22 मार्च को जिम्स में एम्स जिम्स आइआइटी और आइआइएम जैसे संस्थानों के 35 शिक्षाविद् जुटेंगे।

ग्रेटर नोएडा। सरकारी अस्पतालों में मरीजों की जांच और इलाज में होने वाले खर्च को कम करने के लिए राजकीय आयुर्विज्ञान संस्थान (जिम्स) में मेडिकल छात्रों के शोध पर मंथन किया जाएगा। दस्तावेज के रूप में लाइब्रेरी की शोभा बढ़ा रहे इन शोध से ऐसे आइडियाज की तलाश की जाएगी, जिससे मरीजों के लिए सस्ते उपकरण और डिवाइस तैयार की जा सके।

इसके लिए जिम्स में 22 मार्च को एम्स, जिम्स, आइआइटी और आइआइएम जैसे संस्थानों के 35 शिक्षाविद् जुटेंगे। दरअसल, एमबीबीएस, एमडी, एमस सहित मेडिकल के पीजी के छात्र पढ़ाई के दौरान थीसिस लिखते हैं। अधिकतर थीसिस में मेडिकल से जुड़ी तमाम समस्याओं का निदान खोजने का प्रयास किया जाता है। लेकिन अधिकतर छात्र रोजगार मिलने के बाद अपने ही शोध पर आगे काम नहीं करते हैं। नतीजतन उनके शोध दस्तावेज तक सिमट कर रह जाते हैं।

(राजकीय आयुर्विज्ञान संस्थान। जागरण आर्काइव)

दरअसल, जिम्स ने स्टार्टअप, डिवाइस बनाने और इलाज को सुविधाजनक व सस्ता बनाने के लिए ऐसे शोध का अध्ययन करने का निर्णय लिया है। इसके तहत थीसिस एक्सट्रेक्शन (निचोड़) यूनिट (टीईयू) की शुरुआत हो रही है। इसकी पहली बैठक 22 मार्च को होगी। जिम्स इंक्यूबेशन सेंटर के प्रमुख डॉ. राहुल सिंह ने बताया कि टीईयू में आइआइएम लखनऊ, आइआइटी दिल्ली व कानपुर, एम्स दिल्ली व बिलासपुर, आइआइआइटी लखनऊ, दिल्ली, बेंगलुरु, मोतीलाल नेहरू नेशनल इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलाजी प्रयागराज, केजीएमसी, एसजीपीजीआइ, शारदा विश्वविद्यालय, बेनेट विश्वविद्यालय, संतोष कालेज, शिव नाडर विश्वविद्यालय आदि के 35 शिक्षाविद शामिल हैं, जो कि इंक्यूबेटर हेड, डीन अकादमी, डीन रिसर्च, डीन मेडिकल, डीएन एआइ इन मेडिसिन हैं।

यह सभी मेडिकल कॉलेजों से उन छात्रों के थीसिस मांगेंगे जो किसी बीमारी के उपचार, बीमारी की जांच के लिए किसी तरह की तकनीक की जानकारी समेटे हुए होंगे। इसके बाद आइआइएम व इंजीनियरिंग संस्थानों की मदद से सस्ती मेडिकल डिवाइस या स्टार्टअप शुरू करने पर काम किया जाएगा।

विदेशी डिवाइस पर निर्भरता होगी कम, किफायती हो सकेगी स्वास्थ्य सुविधा

वर्तमान में कई डिवाइस और उपकरण विदेशों से आयात किए जाते हैं। इन थीसिस पर काम कर किफायती और स्वदेशी डिवाइस, उपकरण आदि बनाने में मदद मिलेगी। भारत में स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर करने के साथ ही जन-जन तक किफायती रूप में पहुंचाना उद्देश्य है। इसे पूरा करने के लिए नवाचार को बढ़ावा जरूरी है। 22 मार्च को जिम्स के स्टार्टअप क्लीनिक, स्टार्टअप ओपीडी फार क्लीनिकल ट्रायल, डिजीज कोहार्ट, मेडटेक इंटरनेशनल सर्किट का भी औपचारिक उद्घाटन किया जाएगा।

देश और प्रदेश में स्वास्थ्य सुविधाओं को सुलभ और किफायती बनाने पर गंभीरता से काम किया जा रहा है। इसी कड़ी में टीईयू को शुरू करने की पहल की गई है। अमूमन देखा जाता है कि थीसिस लिखने के बाद उसे धरातल पर उतारने का काम नहीं किया जाता। इन पर काम किया जाए तो स्वास्थ्य क्षेत्र में क्रांति आ सकती है। यूनिट में जानेमाने संस्थानों के शिक्षाविद जुट रहे हैं। - डॉ. ब्रिगेडियर राकेश कुमार गुप्ता, निदेशक, जिम्स

गाजियाबाद के हजारों लोगों को मिल सकता है नए मकान का तोहफा, GDA की बोर्ड बैठक में होगा फैसला

गाजियाबाद विकास प्राधिकरण की बोर्ड बैठक आज यानी मंगलवार को हो रही है। इसमें तुलसी निकेतन योजना के जर्जर मकानों को तोड़कर बहुमंजिला इमारत बनाने का प्रस्ताव रखा गया है। इस योजना के तहत बने 2004 ईडब्ल्यूएस और 288 एलआइजी फ्लैट जर्जर हो चुके हैं। यदि प्रस्ताव पास होता है तो इससे हजारों लोगों को फायदा होगा। लोगों को नए मकान मिलेंगे।

गाजियाबाद। तुलसी निकेतन योजना के तहत बने मकानों में रह रहे लोगों को इस बार बोर्ड बैठक से काफी उम्मीदें है। मंगलवार को गाजियाबाद विकास प्राधिकरण (जीडीए) की होने वाली बोर्ड बैठक में योजना के जर्जर हो चुके मकानों को तोड़कर बहुमंजिला इमारत बनाने का प्रस्ताव एजेंडे में शामिल किया गया है।

आठ हेक्टेयर जमीन में बसाई थी कॉलोनी

बैठक में यदि यह प्रस्ताव पास हो जाता है तो इससे तुलसी निकेतन के हजारों लोगों को फायदा मिलेगा। गाजियाबाद विकास प्राधिकरण ने वर्ष 1990 में आठ हेक्टेयर जमीन में 2004 ईडब्ल्यूएस व 288 एलआइजी फ्लैट बनाकर तुलसी निकेतन कॉलोनी बसाई थी। फ्लैटों के आवंटन के बाद लोगों ने इमारत की समय-समय पर मरम्मत नहीं कराई। इससे इमारत जर्जर हो गईं। प्लास्टर टूटकर गिरने लगे।

मकानों के गिरने का खतरा

जीडीए ने जामिया मिलिया इस्लामिया की टीम से निरीक्षण कराया तो पता चला कि इमारत जर्जर है। हर बार वर्षा ऋतु में मकानों के गिरने का खतरा रहता है। जीडीए द्वारा लोगों को कई बार मकानों के जर्जर होने का नोटिस भी दिया जा चुका है। पूर्व में जीडीए ने पुरानी बिल्डिग को तोड़कर दो बहुमंजिला इमारतें बनाकर लोगों को फ्लैट देने की योजना बनाई।

इसी तरह कई बार योजना बनी लेकिन यह योजना कागजों तक ही सीमित रही। इस बार फिर से इस योजना के मकानों का निर्माण करने के लिए बोर्ड बैठक में प्रस्ताव रखा जाना है। यदि बोर्ड में प्रस्ताव पास होता है तो इसे प्राइवेट पब्लिक पार्टनरशिप से बनाया जाएगा।

एक्शन में प्रशासन, 14 गांवों में कार्रवाई से मचा हड़कंप; पुलिस की मदद से रुकवाया अवैध निर्माण

जेवर एयरपोर्ट के आसपास अवैध निर्माण पर रोक लगाने के लिए जिला प्रशासन ने सख्त कार्रवाई शुरू कर दी है। सोमवार को चारों टीमों ने जेवर पहुंच कर 20 से अधिक स्थानों पर काम बंद कराया। ठेकेदारों को निर्माण करा रहे बाहरी लोगों की जानकारी करने के लिए अपने साथ बैठा लिया। दोबारा काम होता मिला तो ऐसे लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई भी की जाएगी।

जेवर (ग्रेटर नोएडा)। एयरपोर्ट के आसपास 14 गांव में अवैध निर्माण को रोकने के लिए जिलाधिकारी द्वारा गठित चारों टीमों ने सोमवार को जेवर पहुंच कार्रवाई शुरू की है।

टीमों के साथ बैठक कर बनाई रणनीति

बताया गया कि सभी टीमें दोपहर में सीधे जेवर कोतवाली पहुंचीं, जहां अवैध निर्माण को रोकने के लिए टीमों के प्रभारी उपजिलाधिकारी जेवर अभय कुमार सिंह ने टीमों के साथ बैठक कर रणनीति बनाई। तय किया गया कि पहले दिन किशोरपुर, रामनेर, साबौता व सिवारा में चल रहे अवैध निर्माण कार्यों को बंद कराया जाए।

काम बंद कराकर भाग खड़े हुए लोग

वहीं, टीमों ने इन गांव में पहुंच कर 20 से अधिक स्थानों पर काम बंद कराने के साथ ही ठेकेदारों को निर्माण करा रहे बाहरी लोगों की जानकारी करने के लिए अपने साथ बैठा लिया। टीमों के क्षेत्र में पहुंचने की सूचना मिलते ही ज्यादातर लोग स्वयं काम बंद करा कर भाग खड़े हुए।

बड़ी संख्या में अवैध निर्माण कर रहे हैं लोग

जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा ने मुख्य सचिव के छह मार्च के पत्र का जिक्र करते हुए बताया था कि एयरपोर्ट के तीसरे चरण में अधिगृहीत होने वाली भूमि पर अनुचित तरीके से लाभ कमाने और राज्य सरकार को क्षति पहुंचाने के लिए बड़ी संख्या में लोग अवैध निर्माण कर रहे हैं।

प्रशासन और पुलिस की बनाई गई संयुक्त चार टीमें

यमुना प्राधिकरण की बिना अनुमति के हो रहे अंधाधुंध अवैध निर्माण कार्यों को रुकवाने के लिए जिलाधिकारी ने प्राधिकरण, प्रशासन और पुलिस की संयुक्त चार टीमें बनाईं। सभी टीमों के पर्यवेक्षण की जिम्मेदारी एसडीएम और तहसीलदार स्तर के दो-दो अधिकारियों को सौंपी गई हैं।

दोबारा अवैध निर्माण करने वालों को सख्त चेतावनी

सोमवार को पहले दिन चारों टीमों ने 20 से अधिक स्थानों पर अवैध निर्माण को बंद कराया। आगे यह नियमित रूप से कहीं भी अवैध निर्माण नहीं होने दिया जाएगा। काम बंद कराने के बाद अगर दोबारा काम होता मिला तो ऐसे लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई भी की जाएगी। - दुर्गेश सिंह, उपजिलाधिकारी व नोडल नोएडा एयरपोर्ट जेवर

19 मार्च: रंगपंचमी : इंदौर की गेर: जब रंग, प्रेम और परंपरा मिलते हैं

मध्यप्रदेश का हृदय कहलाने वाला इंदौर एक ऐसी नगरी है, जो अपनी स्वच्छता, सांस्कृतिक वैभव, लज़्ज़तदार स्वाद और उत्सवी उमंग के लिए न केवल भारत में, बल्कि विश्व भर में विख्यात है। यह शहर केवल ईंट-पत्थर का ढांचा नहीं, बल्कि एक जीवंत आत्मा का प्रतीक है, जहाँ हर सांस में मस्ती और हर कदम में उल्लास समाया है। यहाँ की गलियाँ संकीर्ण नहीं, बल्कि जीवन की ऊर्जा से स्पंदित धमनियाँ हैं, जो इतिहास की गूंज और उत्साह की लय से जीवंत रहती हैं। चौक और बाज़ार यहाँ केवल स्थान नहीं, बल्कि उमंग के सागर हैं, जो हर आने वाले को अपनी प्रफुल्लता में डुबो देते हैं।

इंदौर का उत्सवी जोश इसे विशिष्ट बनाता है, और इसकी सबसे अनुपम मिसाल है रंग पंचमी। यह पर्व केवल रंगों का मेला नहीं, बल्कि आत्मा की मुक्ति, चित्त की उड़ान और हृदय की प्रफुल्लता का प्रतीक है। जब देश के अन्य हिस्सों में होली का उल्लास मद्धम पड़ने लगता है, तब इंदौर रंग पंचमी के साथ नए उमंग का आलोक बिखेरता है। इस दिन पूरी नगरी रंगों के सागर में डूब जाती है, और हर कण आनंद से प्रकाशित हो उठता है। रंग पंचमी इंदौर के लिए एक तिथि से कहीं अधिक है—यह उत्साह का ज्वार है, जो हर हृदय में धड़कता और जीवन में रंग बनकर दौड़ता है।

रंग पंचमी के दिन इंदौर का कोई कोना रंगों की बौछार से अछूता नहीं रहता। गलियाँ, सड़कें, चौक और छतें—हर ओर रंगों का संगम एक ऐसा दृश्य रचता है, जो आँखों को ठहरने पर मजबूर कर देता है। लोग रंगों में इस कदर डूब जाते हैं कि अपनी भौतिक पहचान भूल जाते हैं। जाति, संप्रदाय और आर्थिक भेदभाव के सारे पर्दे हट जाते हैं, और हर प्राणी एक ही रंग में रंजित हो उठता है—प्रेम और एकता का रंग। यह पर्व केवल गुलाल और जल की फुहार नहीं, बल्कि मन के बंधनों को तोड़ने और आपसी मतभेदों को बहा ले जाने वाला उल्लास का महासंगम है।

नगर निगम के टैंकरों से जब गुलाबी और केसरिया जल बरसता है, तो ऐसा लगता है मानो बादल इस धरा पर अपनी कृपा लुटा रहे हों। हर गली एक रंगशाला बन जाती है, जहाँ जीवन उन्मुक्त नृत्य करता है। लोग इस प्रफुल्लता में डुबकी लगाते हैं, और जब बाहर निकलते हैं, तो उनके चेहरे केवल रंगों से ही नहीं, बल्कि प्रेम और बंधुत्व के तेज से भी दमकते हैं। यह रंगों की ऐसी वर्षा है, जो आत्मा को शुद्ध और परिमार्जित कर देती है।

रंग पंचमी का सबसे ओजस्वी आकर्षण है ₹राजवाड़ा की गेर₹—एक ऐसी परंपरा, जो इंदौर की पहचान को विश्व पटल पर चमकाती है। यह केवल एक जुलूस नहीं, बल्कि एक ऐसी अनुभूति है, जो हृदय को झकझोर देती है। ढोल-नगाड़ों की गूंज से धरती थर्राती है, शंखनाद आकाश को भेदता है, और रंगों के बादल हवा में मचलते हैं। हजारों लोग इस रंग-बौछार में सराबोर होकर झूमते हैं, मानो उमंग उनकी रगों में बह रही हो। यह दृश्य केवल आँखों का नहीं, बल्कि आत्मा तक उतर जाने वाला अनुभव है।

गेर में शामिल हर व्यक्ति अपनी सांसारिक पहचान को तज देता है। यहाँ कोई परिचित या अपरिचित नहीं रहता—सब एक विशाल परिवार का हिस्सा बन जाते हैं। टैंकरों से बरसता रंग-मिश्रित जल ऐसा प्रतीत होता है मानो इंदौर का आकाश अपने प्रियजनों पर प्रेम बरसा रहा हो। यह परंपरा केवल रंगों का प्रदर्शन नहीं, बल्कि वह बंधन है, जो इंदौरियों को एकता के सूत्र में बाँधता है। यह ₹इंदौरीपनः—उन्माद, मस्ती और अपनत्व—ही इस नगरी को अनूठा बनाता है।

रंग पंचमी की शक्ति इसके रंगों में नहीं, बल्कि इसके संदेश में निहित है। यह हमें सिखाता है कि जीवन का सौंदर्य बाहरी रंगों में नहीं, बल्कि अंतर्मन की प्रफुल्लता में बसता है। जब हम किसी अपरिचित को रंग से सराबोर कर गले लगाते हैं, संकीर्णताओं को भुलाकर उमंग में शामिल होते हैं, तब सच्चा उत्सव जन्म लेता है। यहाँ रंग केवल शरीर को नहीं, बल्कि आत्मा को रंजित करते हैं और एक अमिट छाप छोड़ जाते हैं। यहाँ होली जल और गुलाल से नहीं, बल्कि हास्य और प्रेम की किरणों से प्रज्ज्वलित होती है।

यह उत्सव एक दिन तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह एक जीवंत धारा है, जो युगों से बहती आ रही है और हर वर्ष नए जोश के साथ और तेजस्वी होती है। यह हमें बताता है कि आनंद बाँटने से बढ़ता है और प्रेम की कोई सीमा नहीं होती। इंदौर की रंग पंचमी इस नगरी के सौजन्य और उन्माद का दर्पण है, जहाँ हर रंग प्रेम का प्रतीक, हर ध्वनि उमंग की पुकार और हर मुस्कान इसके प्राणों की झलक है।

इंदौर को उसकी स्वच्छता, स्वादिष्ट भोजन और व्यापारिक वैभव ने प्रसिद्धि दी, लेकिन इसकी असली शक्ति यहाँ की सांस्कृतिक प्रखरता और उत्सवों का उमंग है। यहाँ के लोग हर क्षण को उत्सव में बदल देते हैं, और रंग पंचमी इसका सर्वोच्च उदाहरण है। जब देश के अन्य हिस्सों में होली का जोश ठंडा पड़ जाता है, तब इंदौर इसे नए रंगों से प्रज्ज्वलित करता है। यह नगरी रंगों की भूमि ही नहीं, बल्कि उमंग का सागर और प्रफुल्लता की सरिता है।

यहाँ की गलियों में उत्सव की गूंज, चेहरों पर प्रफुल्लता का आलोक और हर हृदय में इंदौरी होने का गर्व धधकता है। रंग पंचमी के दिन यहाँ शामिल होने के लिए किसी निमंत्रण की जरूरत नहीं—बस गलियों में कदम रखें और रंगों के इस सागर में डूब जाएँ। यहाँ का उमंग संक्रामक है, जो हर आगंतुक को अपने रंग में रंग देता है।

रंग पंचमी इंदौर के प्राण, इसकी धड़कन और इसका गर्व है। यह केवल परंपरा नहीं, बल्कि एक ऐसी धारा है, जो हमें जोड़ती, उल्लास देती और स्मरण कराती है कि इंदौर एक शहर नहीं, बल्कि प्रेम, एकता और उमंग का उत्सव है। जब ढोल गूंजते हैं, गुलाल उड़ता है और गेर की शोभायात्रा सड़कों पर चलती है, तब हर इंदौरी को अपनी अस्मिता का बोध होता है। यह उत्सव विश्व को दिखाता है कि इंदौर क्यों अनन्य है—यहाँ की मस्ती, अपनत्व और उन्माद इसे अनमोल बनाते हैं। ₹ऐसा है मेरा इंदौर, और इसीलिए गर्व है इंदौरी कहलाने में!

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी

रुपये (₹) के चिह्न को लेकर विवाद: भाषा का सम्मान या राजनीति का हथकंडा?

केवल वाद विवाद से हल नहीं निकलेगा। संविधान में ये कानून होना चाहिए कि कोई भी राज्य या राज्य सरकार राष्ट्रीय स्तर पर उपयोग की जाने वाली या मानी जाने वाली वस्तुओं पर अपने से निजी परिवर्तन नहीं कर सकती। ऐसा किया जाना देश द्रोह माना जाए और ज़िम्मेदार व्यक्ति को पदच्युत किया जाए। रुपये (₹) के चिह्न को लेकर विवाद सिर्फ़ भाषा और सांस्कृतिक पहचान तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके पीछे एक बड़ा राजनीतिक खेल भी दिखाई देता है। क्षेत्रीय दल, विशेष रूप से द्रविड़ मुनेत्र कषगम, इस मुद्दे को उठाकर न केवल तमिल अस्मिता को मज़बूत करने की कोशिश कर रहे हैं, बल्कि केंद्र सरकार की भाषा नीति और हिन्दी वर्चस्व के खिलाफ अपने पारंपरिक रुख को भी आगे बढ़ा रहे हैं।

डॉ सत्यवान सौरभ

द्रविड़ मुनेत्र कषगम पहले भी हिन्दी थोपने के विरोध में और तमिल भाषा की पहचान को बचाने के लिए मुखर रही है। अब रुपये के चिह्न (₹) को लेकर द्रविड़ मुनेत्र कषगम ने आपत्ति जताई है। पार्टी का कहना है कि इस चिह्न में भारतीय संस्कृति और विशेष रूप से दक्षिण भारतीय पहचान को उचित स्थान नहीं दिया गया है। भारतीय मुद्रा के चिह्न (₹) को लेकर द्रविड़ मुनेत्र कषगम और कुछ अन्य क्षेत्रीय दलों की आपत्ति क्या वाकई भाषा से जुड़ा विवाद है, या फिर यह सिर्फ़ एक राजनीतिक रणनीति? इस सवाल के कई पहलू हैं। द्रविड़ मुनेत्र कषगम और कुछ अन्य दक्षिण भारतीय दलों का तर्क है कि रुपये का चिह्न देवनागरी के ₹र₹ अक्षर से प्रेरित है, जो हिन्दी को प्राथमिकता देता है और अन्य भारतीय भाषाओं की अनदेखी करता है। हालांकि, इस चिह्न को डिज़ाइन करने वाले उदय कुमार धरणी (IIT गुवाहाटी) का कहना था कि इसका डिज़ाइन देवनागरी ₹र₹ और रोमन ₹R₹ दोनों से प्रेरित है, ताकि भारतीय और वैश्विक पहचान का मिश्रण दिखाया जा सके। द्रविड़ मुनेत्र कषगम लंबे समय से हिन्दी थोपने के खिलाफ रही है। 1965 में हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के प्रस्ताव के खिलाफ तमिलनाडु में बड़े आंदोलन हुए थे। द्रविड़ मुनेत्र कषगम ने पहले भी NEET परीक्षा, नई शिक्षा नीति और सरकारी नौकरियों में हिन्दी प्राथमिकता का विरोध किया है। अब रुपये के चिह्न को लेकर विवाद द्रविड़ मुनेत्र कषगम के उसी एजेंडे का विस्तार है।

रुपये के चिह्न में हिन्दी प्रभाव–द्रविड़ मुनेत्र कषगम का मानना है कि ₹ चिह्न देवनागरी लिपि के ₹र₹ (रुपया) से प्रेरित है, जिससे हिन्दी को प्राथमिकता मिलती है, जबकि भारत की अन्य भाषाओं की उपेक्षा होती है। द्रविड़ मुनेत्र कषगम और तमिलनाडु के कुछ अन्य संगठनों का तर्क है कि रुपये का चिह्न देवनागरी लिपि के ₹र₹ से प्रेरित है, जिससे हिन्दी को प्राथमिकता मिलती है और अन्य भारतीय भाषाओं, विशेष रूप से द्रविड़ भाषाओं (तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम) को उपेक्षित किया गया है। उनका मानना है कि मुद्रा का चिह्न ऐसा होना चाहिए, जो सभी भारतीय भाषाओं का समान रूप से प्रतिनिधित्व करे। दक्षिण भारतीय राज्यों में हिन्दी थोपने के खिलाफ पहले से ही एक मज़बूत भावना मौजूद है और यह विवाद उसी का विस्तार माना जा सकता है। पार्टी का तर्क है कि भारत की मुद्रा का प्रतीक चिह्न ऐसा होना चाहिए, जो सभी भाषाओं और संस्कृतियों का समान रूप से प्रतिनिधित्व करे। द्रविड़ मुनेत्र कषगम और अन्य तमिल संगठन मानते हैं कि तमिल समेत दक्षिण भारतीय भाषाओं को केंद्रीय स्तर पर वह पहचान नहीं मिलती, जिसकी वे हकदार हैं।

द्रविड़ मुनेत्र कषगम और तमिलनाडु की अन्य पार्टियाँ हिन्दी थोपने के विरोध में कई बार आंदोलन कर चुकी हैं। पार्टी लगातार इस बात की वकालत करती रही है कि केंद्र सरकार किसी एक भाषा (विशेषकर हिंदी) को बढ़ावा देने के बजाय सभी भारतीय भाषाओं को समान महत्त्व दे। द्रविड़ मुनेत्र कषगम की राजनीति तमिल पहचान और केंद्र के ₹हिंदी वर्चस्व₹ के खिलाफ विरोध के इर्द-गिर्द घूमती रही है। यह मुद्दा 1960 के दशक में हिन्दी विरोधी आंदोलनों से शुरू हुआ था और अब तक जारी है। 2010 में जब ₹ चिह्न को अपनाया गया, तब भी यह बहस उठी थी। द्रविड़ मुनेत्र कषगम द्वारा इस मुद्दे को फिर से उछालना एक राजनीतिक रणनीति हो सकती है, ताकि तमिल अस्मिता को लेकर अपनी स्थिति मज़बूत की जा सके और केंद्र सरकार की भाषा नीतियों के खिलाफ जनता को लामबंद किया जा सके।

हालांकि द्रविड़ मुनेत्र कषगम की कुछ आपत्तियाँ तर्कसंगत हो सकती हैं, लेकिन इसे पूरी तरह से भाषा का मुद्दा मानना भी सही नहीं होगा। द्रविड़ मुनेत्र कषगम केंद्र की नीतियों के खिलाफ अपनी स्थिति मज़बूत करने और क्षेत्रीय राजनीति को धार देने के लिए ऐसे मुद्दों को उभारती है। यह विवाद तमिलनाडु की राजनीति में द्रविड़ मुनेत्र कषगम की पकड़ बनाए रखने और भाजपा के ₹हिंदी-हिंदू₹ एजेंडे का विरोध करने का एक तरीक़ा भी हो सकता है। द्रविड़ मुनेत्र कषगम का यह विरोध मुख्य रूप से उसकी तमिल पहचान की राजनीति का हिस्सा है। पार्टी तमिलनाडु में क्षेत्रीय अस्मिता को मज़बूत करने और केंद्र सरकार की नीतियों की आलोचना करने के लिए ऐसे मुद्दों को उठाती रहती है। ₹ चिह्न किसी एक भाषा का प्रतीक नहीं है, बल्कि इसे भारतीय संस्कृति और अंतरराष्ट्रीय मानकों को ध्यान में रखकर डिज़ाइन किया गया है। पहले से ही यह चिह्न पूरे देश में स्वीकार किया जा चुका है, इसलिए अब इसे बदलने की कोई व्यावहारिक ज़रूरत नहीं है। इस मुद्दे को उछालना एक सुनियोजित राजनीतिक रणनीति ज़्यादा लगती है, बजाय किसी वास्तविक समस्या के।

द्रविड़ मुनेत्र कषगम और अन्य क्षेत्रीय दलों के लिए यह विवाद एक राजनीतिक अवसर है, जिससे वे तमिल पहचान और हिंदी-विरोधी भावनाओं को भुना सकते हैं। द्रविड़ मुनेत्र कषगम इस मुद्दे को उछालकर केंद्र सरकार, खासकर भाजपा (BJP) पर हिन्दी वर्चस्व थोपने का आरोप लगा रही है। इससे दक्षिण भारत बनाम उत्तर भारत का मुद्दा उभरता है, जिससे द्रविड़ मुनेत्र कषगम को तमिलनाडु में और समर्थन मिलता है। इससे विपक्षी गठबंधन को भी भाजपा के खिलाफ एक और हथियार मिलता है। तमिलनाडु जैसे राज्यों में क्षेत्रीय पहचान और भाषा का मुद्दा चुनावों में बहुत प्रभाव डालता है। द्रविड़ मुनेत्र कषगम इसे 2024 लोकसभा चुनाव और 2026 के विधानसभा चुनावों के लिए एक बड़े मुद्दे के रूप में भुना सकती है। द्रविड़ मुनेत्र कषगम अपने कोर वोटबेस को यह संदेश देना चाहती है कि वह तमिल पहचान और अधिकारों की रक्षा कर रही है। द्रविड़ मुनेत्र कषगम इस विवाद के जरिए दक्षिण भारत के अन्य राज्यों (केरल, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना) में अपनी पहचान और प्रभाव बढ़ाने की कोशिश कर सकती है, क्योंकि इन राज्यों में भी हिन्दी थोपे जाने का विरोध रहता है। रुपये के चिह्न में बदलाव की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि यह पहले से अंतरराष्ट्रीय मान्यता प्राप्त और भारत की विविधता को दर्शाने वाला है। यह मुद्दा असल में द्रविड़ मुनेत्र कषगम की केंद्र-विरोधी राजनीति और तमिलनाडु में अपनी पकड़ मज़बूत करने की रणनीति का हिस्सा ज़्यादा लगता है।

अगर हम विशुद्ध रूप से डिज़ाइन के दृष्टिकोण से देखें, तो ₹ चिह्न वास्तव में देवनागरी के ₹र₹ और रोमन ₹R₹ का मिश्रण है। यह अंग्रेज़ी और भारतीय पहचान दोनों को जोड़ने का प्रयास है। यह कहना सही नहीं होगा कि इसे सिर्फ़ हिन्दी के लिए बनाया गया है। कई भारतीय भाषाओं में ₹रुपयाः शब्द मौजूद है और ₹ का डिज़ाइन उन सभी से मेल खाता है। क्या आपको लगता है कि ₹ चिह्न को लेकर यह विरोध जायज़ है, या यह सिर्फ़ राजनीतिक रणनीति है? ₹ चिह्न का विवाद भाषा से अधिक राजनीतिक रणनीति का हिस्सा लगता है। भारतीय मुद्रा का यह प्रतीक किसी एक भाषा तक सीमित नहीं है, लेकिन क्षेत्रीय दलों के लिए यह केंद्र विरोधी भावनाओं को भुनाने का एक अच्छा अवसर ज़रूर बन गया है।

नई मारुति डिजायर की कैब फ्लीट में एंट्री ! टूर एस वेरिएंट लॉन्च, इन बेहतरीन फीचर्स से है लैस

परिवहन विशेष न्यूज

अगली बार जब आप कहीं पर जाने के लिए कैब बुक करते हैं तो हो सकता है कि आपको अपनी मंजिल तक पहुंचाने के लिए नई Maruti Dzire आ जाए। दरअसल कंपनी ने नई जनरेशन Maruti Dzire Tour S को कमर्शियल फ्लिट ऑपरेटरों के लिए लॉन्च कर दिया है। यह पूरी तरह से Dzire के बेस-स्पेक Lxi वेरिएंट पर बेस्ड है।

नई दिल्ली। मारुति सुजुकी ने नई Maruti Dzire को नवंबर 2024 में लॉन्च किया था। अब कंपनी ने इसके Dzire Tour S को लॉन्च कर दिया है, इसके कंपनी कमर्शियल फ्लिट ऑपरेटरों को ध्यान में रखकर लेकर आई है। इसे स्टैंडर्ड Dzire के बेस-स्पेक Lxi वेरिएंट पर बेस्ड रखा गया है और इसमें कुछ खास बदलाव भी किए गए हैं। आइए जानते हैं कि नई Maruti Dzire Tour S में आपको क्या कुछ नया देखने के लिए मिलेगा।

1. कीमत

नई जनरेशन Maruti Dzire Tour S की एक्स-शोरूम कीमत 6.79 लाख रुपये है और इसके CNG वर्जन की कीमत 7.74 लाख रुपये है। यह कीमत नई डिजायर को कमर्शियल कैब ऑपरेटरों के लिए एक अट्रैक्टिव ऑप्शन बनाती है।

2. डिजाइन

नई Dzire Tour S को तीन कलर ऑप्शन आर्कटिक व्हाइट, स्प्लेंडिड सिल्वर और ब्लूइश ब्लैक में पेश किया गया है। इसके आर्कटिक व्हाइट कलर को खासकर कमर्शियल कैब के लिए जाना जाता है। इसपर 'Tour S' की बैजिंग भी दी गई है, जो इसे रेगुलर Dzire मॉडल से अलग बनाती है।

यह रेगुलर Lxi वेरिएंट की तरह ही दिखाई देती है। इसके फ्रंट में ब्लैक ग्रिल, हॉरिजेंटल स्लैट्स और ब्लैक पैनल दिया गया है। इस वेरिएंट में DRLs और फॉग लाइट्स नहीं दी गई है।

इसके साइड प्रोफाइल में ब्लैक डोर हैंडल और ब्लैक ORVMs दिए गए हैं और टर्न इंडिकेटर को फेंडर पर अलग से जगह दी गई है। इस वेरिएंट में 14-इंच के स्टील व्हील्स दिए गए हैं। इसके पीछे की तरफ LED टेल लाइट्स दिए गए हैं, जो रेगुलर Dzire में मिलते हैं और दोनों टेल लाइट्स को जोड़ते हुए ब्लैक स्ट्रिप दी गई है।

3. इंटीरियर और फीचर्स

Maruti Dzire Tour S का इंटीरियर वैसा ही है, जैसा रेगुलर डिजायर में मिलता है। इसमें ब्लैक और बेज थीम दी गई है, लेकिन इसके डैशबोर्ड पर फॉक्स वुडन इन्सर्ट नहीं दिया गया है। इसे लेने के बाद कमर्शियल ऑपरेटरों को इंफोटेनमेंट सिस्टम को आफ्टरमार्केट फिटमेंट के जरिए लगवाना पड़ेगा। इसमें मैन्युअल एसी कंट्रोल्स और सेंटर कंसोल में सिर्फ दो कप होल्डर्स को दिया गया है।

इसमें फीचर्स के रूप में चारों पावर विंडो, टिल्ट-एडजस्टेबल स्टीयरिंग व्हील और कीलेस एंट्री जैसे फीचर्स दिए गए हैं। लोगों की सेफ्टी के लिए इसमें 6 एयरबैग्स, ABS के साथ EBD, इलेक्ट्रॉनिक स्टेबिलिटी कंट्रोल (ESC) और रियर पार्किंग सेंसर्स जैसे फीचर्स दिए गए हैं।

4. इंजन

नई Maruti Dzire Tour S को पेट्रोल और CNG दोनों इंजन ऑप्शन के साथ लॉन्च किया गयाहै। इसमें 1.2-लीटर पेट्रोल इंजन दिया गया है, जो 82 PS की पावर और 112 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। वहीं, इसका CNG किट वाला इंजन 70 PS की पावर और 102 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को 5-स्पीड मैनुअल गियरबॉक्स के साथ जोड़ा गया है। माइलेज की बात करें तो इसका पेट्रोल इंजन 26.06 kmpl और CNG किट वाला इंजन 34.30 km/kg तक का माइलेज देता है।

कब करवाना चाहिए बाइक का एयर फिल्टर चेंज? जानें घर पर साफ करने का आसान तरीका

परिवहन विशेष न्यूज

बाइक में लगा हुआ एयर फिल्टर का नियमित देखभाल करने से न सिर्फ मोटरसाइकिल की उम्र बढ़ती है बल्कि आपका पैसा भी बचता है। इसके खराब होने पर इंजन की परफॉर्मेंस गिरने के साथ ही माइलेज भी गिरने लगता है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको बाइक के एयर फिल्टर को बदलने का सही समय और इसे घर पर साफ करने का तरीका बता रहे हैं।

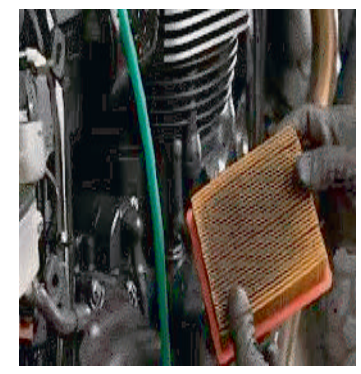

नई दिल्ली। किसी भी बाइक का एयर फिल्टर इंजन के लिए फेफड़ों की तरह काम करता है। यह हवा से धूल, गंदगी और छोटे कणों को इंजन तक पहुंचने से रोकने का काम करता है। अगर एयर फिल्टर गंदा हो जाए तो उसका सीधा असर बाइक की माइलेज पर पड़ता है। इसके साथ ही इंजन पर खराबी भी आ सकती है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको बता रहे हैं कि बाइक के एयर फिल्टर को कब बदलना चाहिए और इसे आप घर पर कैसे साफ कर सकते हैं।

कब बदलना चाहिए एअर फिल्टर?

जब मौसम बदलता है चाहे वो सर्दी हो या फिर गर्मी दोनों समय ही बाइक के एयर फिल्टर को बदल देना चाहिए।

अगर आपकी बाइक पहले के मुतबाकि कम परफॉर्मेंस दे रही है, जैसे कि इंजन का पावर कम जनरेट करना, माइलेज कम देना।

बाइक के एयर फिल्टर को हर 5000 से 7000 किलोमीटर में एक बार चेक और बदलवाना चाहिए। इससे न केवल इंजन अच्छा परफॉर्मेंस देगी बल्कि माइलेज भी बेहतर मिलेगा।

घर पर एयर फिल्टर कैसे साफ करें?

अगर एयर फिल्टर अभी बदलने की जरूरत नहीं है, तो आप इसे घर पर ही साफ कर सकते हैं। आइए जानते हैं इसका स्टेप-बाय-स्टेप प्रक्रिया के बारे में-

सबसे पहले आपको बाइक की सर्विस मैनुअल को देखकर एयर फिल्टर की लोकेशन को ढूंढना होगा। आमतौर पर यह सीट के नीचे या साइड पैनल में होता है। स्क्रू ड्राइवर की मदद से एयर फिल्टर बॉक्स खोलें और बाहर निकालें।

एयर फिल्टर को हल्के हाथ से टैप करके उसपर जमी ढीली धूल और मिट्टी को निकाले। आप ब्रश या पुराने टूथब्रश से इसकी सतह को साफ कर सकते हैं।

अगर आपकी बाइक में फोन फिल्टर लगा हुआ है, तो इसे आप गुनगुने पानी और हल्के साबुन से धो सकते हैं। इसके बाद इसे पानी में डुबोकर हल्के से निचोड़ें, ताकि गंदगी निकल जाए। अगर पेपर फिल्टर है तो उसे पानी के बजाय कंप्रेस्ड एयर से साफ करें।

फोम फिल्टर को धुलने के बाद उसे आप धूप में या हेयर ड्रायर से सूख सकते हैं। इसे लगाने से पहले अच्छी तरह से जरूर चेक करें कि वह सही से सूख गया हो।

इसके बाद साफ और सूखे फिल्टर को वापस बॉक्स में फिट करें और स्क्रू टाइट कर दें। फिर बाइक स्टार्ट करके चेक करें कि सब सही से काम कर रहा है या नहीं।

सिर्फ 6 मिनट में फुल चार्ज हो जाएगी इलेक्ट्रिक कार, टेस्ला के पास भी नहीं ये तकनीक

चीन कई इलेक्ट्रिक कार कंपनी BYD ने Super E Platform 1000 को पेश किया है। इसकी मदद से इलेक्ट्रिक कार महज 6 मिनट में फुल चार्ज हो जाएगी। इतना ही इसकी मदद से इलेक्ट्रिक कारों को चार्ज करने में उतना ही समय लगेगा जितना किसी ICE वाली कार को पेट्रोल-डीजल भरवाने में लगता है। यह 10C चार्जिंग मल्टीप्लायर को सपोर्ट करती है।

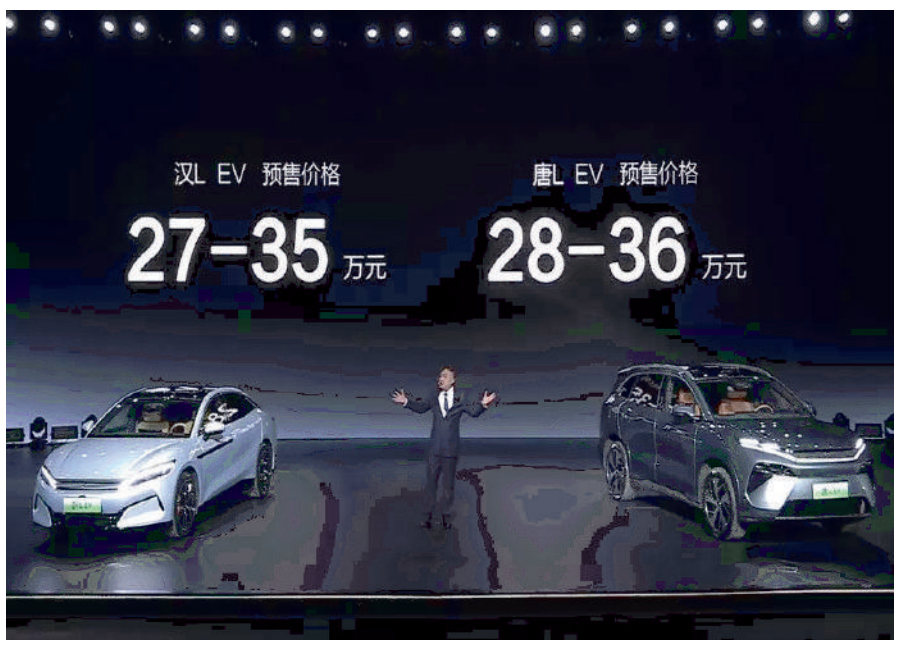

नई दिल्ली। इलेक्ट्रिक कारों को फुल चार्ज होने में तकरीबन 3 से 4 घंटे तक का समय लगता है, लेकिन अब ऐसा नहीं होगा। अब इलेक्ट्रिक कार महज 5 मिनट में फुल चार्ज हो जाएगी। दरअसल, चीन की इलेक्ट्रिक कार बनाने वाली कंपनी BYD ने अपने नए सुपर ई-प्लेटफार्म 1000 का एलान किया है। यह प्लेटफार्म 1,000 किलोवाट (1 मेगावाट) चार्जिंग स्पीड को सपोर्ट करता है, जो अब तक की सबसे तेज चार्जिंग स्पीड है। इस तकनीक का फायदा यह है कि केवल 5 मिनट इलेक्ट्रिक कार (Fast Charging Electric Car) को चार्ज करने पर 400 किलोमीटर तक चलाया जा सकता है। यानी हर एक सेकेंड कार को चार्ज करने पर 1 किलोमीटर से ज्यादा की रेंज मिलेगी। आइए जानते हैं कि BYD की सुपर ई-प्लेटफार्म कैसे काम करता है और इसके फीचर्स क्या है?

BYD की सुपर ई-प्लेटफार्म की खूबियां

तेज चार्जिंग स्पीडः BYD की तरफ से पेश की गई सुपर ई-प्लेटफार्म 1,000 किलोवाट चार्जिंग स्पीड (BYD Super E-Platform 1000) देता है, जो Tesla के 500 किलोवाट चार्जिंग स्पीड से दोगुना है। इसकी वजह से लोगों को चार्जिंग स्टेशनों पर उतना ही समय बिताना पड़ेगा, जितना उन्हें ICE वाली कारों में पेट्रोल-डीजल भरवाने में लगता है।

ब्लेड बैटरी तकनीकः इसमें BYD की ब्लेड बैटरी का इस्तेमाल किया गया है, जो फास्ट आयन ट्रांसफर और कम रेजिस्टेंस के कारण ज्यादा तेज चार्जिंग देती है। इस बैटरी की खुबी यह है कि यह 10C चार्जिंग मल्टीप्लायर को सपोर्ट करती है, जिसका मतलब है कि बैटरी को केवल 6 मिनट में पूरी तरह से चार्ज हो सकती है।

नई EV मॉडल्सः इस नए सुपर ई-प्लेटफार्म को सबसे पहले BYD के दो नए EV मॉडल्स, Han L सेडान और Tang L SUV (BYD Electric cars) को चार्ज करने के लिए इस्तेमाल किया जाएगा। इन गाड़ियों की प्री-सेल्स चीन में शुरू हो गए हैं, जिन्हें अप्रैल 2025 के आसपास लॉन्च किया जाएगा।

चीन में फास्ट चार्जिंग नेटवर्कः BYD चीन में 4,000 से ज्यादा सुपर-फास्ट चार्जिंग यूनिट्स को स्थापित करने का लक्ष्य लेकर चल रही है, जो इस नए प्लेटफार्म को सपोर्ट करेंगे। कंपनी यह भी योजना बना रही है कि इन चार्जिंग यूनिट्स के साथ एनर्जी स्टोरेज सुविधाओं को भी जोड़ा जाएगा।

ग्लोबल बाजार पर असर

BYD का सुपर ई-प्लेटफार्म न केवल चीन बल्कि ग्लोबल इलेक्ट्रिक कार बाजार के लिए एक गेम चेंजर साबित हो सकता है। ग्लोबल बाजार इससे इलेक्ट्रिक गाड़ियों को चार्ज करने की चिंता कम होगी और यह Tesla जैसी कंपनियों को चुनौती दे सकता है, खासकर चार्जिंग स्पीड के मामले में।

कैमरे ने काट तो नहीं दिया आपकी गाड़ी का चालान, ऑनलाइन ऐसे करें पता

आपकी गाड़ी पर नजर रखने के लिए ई-चालान सिस्टम की मदद यातायात पुलिस ले रही है। सड़कों पर लगे यह हाई-टेक कैमरे खुद-ब-खुद आपकी गाड़ी का चालान काट देते हैं। इनके जरिए चालान कटने पर वाहन मालिक को पता नहीं चलता है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको e-Challan को ऑनलाइन चेक करने का तरीका बता रहे हैं।

नई दिल्ली। सरकार ने ट्रैफिक नियमों की अनदेखी को लेकर कड़ा कदम उठाया है। हाल ही में सरकार ने ट्रैफिक नियमों के उल्लंघन पर लगने वाले जुर्माने और सजा में बदलाव किया है। इस बार सरकार ने ट्रैफिक नियम तोड़ने पर लगने वाले जुर्माने को 10 गुना बढ़ा दिया है। वहीं, ट्रैफिक चालान को आसान बनाने के लिए चौक-चौराहों पर कैमरे भी लगाए गए हैं, जो आपकी छोटी सी गलती पर भी चालान काट देते हैं। ई-चालान (e-Challan) सिस्टम से लोगों को यातायात नियमों का पालन करवाया जा रहा है। जिसे ध्यान में रखते हुए हम यहां पर आपको बता रहे हैं कि अगर आपकी गाड़ी का कैरे से चालान काटता है, तो आप उसे ऑनलाइन कैसे चेक कर सकते हैं।

क्या है Traffic e-Challan?

यह एक इलेक्ट्रॉनिक चालान सिस्टम है, जिसके मदद से ट्रैफिक पुलिस अब अपने जरिए की गई कार्रवाई का डिजिटल रूप में रिकॉर्ड करती है। यह सिस्टम कैमरों के जरिए ट्रैफिक नियमों का उल्लंघन करने पर स्वचालित रूप से चालान काटने का काम करती है। इसे आप इस तरह से भी समझ सकते हैं कि अगर कोई वाहन ट्रैफिक नियमों का उल्लंघन करता है, तो यह कैमरे उसकी पहचान करके चालान तैयार कर देते हैं और इसके बारे में वाहन मालिक को एक मैसेज के जरिए बता भी देते हैं कि आपका ट्रैफिक चालान काटा गया है।

Traffic E-Challan ऑनलाइन चेक करने का तरीका

अगर आपको लगता है कि आपके वाहन का किसी कैमरे के जरिए ट्रैफिक चालान काटा जाता है, तो आप आसानी से अपने स्मार्टफोन या कंप्यूटर पर चेक कर सकते हैं। आइए जानते हैं कि आप ऑनलाइन तरीके से ट्रैफिक चालान को चेक करने की प्रक्रिया के बारे में-

आधिकारिक ट्रैफिक वेबसाइट पर जाएंः सबसे पहले आपको अपने शहर या राज्य की ट्रैफिक पुलिस की आधिकारिक वेबसाइट पर जाना होगा।

e-Challan सेक्शन पर क्लिक करेंः वेबसाइट पर जाने के बाद आपको ₹e-Challan₹ या ₹Traffic Violation₹ सेक्शन पर क्लिक करना होगा।

वाहन विवरण दर्ज करेंः इसके बाद आपको अपनी गाड़ी के रजिस्ट्रेशन नंबर (Vehicle Registration Number) को वहां पर दर्ज करना होगा।

CAPTCHA सही तरीके से भरेंः इसके बाद आपको नीचे दिखाई दे रहे CAPTCHA को सही तरीके से भरना होगा और ₹Submit₹ पर क्लिक करना होगा।

चालान विवरण देखेंः अगर आपके वाहन पर कोई चालान काटा गया है, तो वह आपकी स्क्रीन पर दिखाई देगा। इसमें चालान की पूरी जानकारी, जैसे उल्लंघन की तारीख, चालान की राशि और उल्लंघन का विवरण सभी चीजें दिखाई देगी।

भुगतान करेंः अगर आप चालान का भुगतान करना चाहते हैं, तो यहीं पर आपको ₹Pay Now₹ का ऑप्शन दिखाई देगा, जिस पर आप क्लिक करके भुगतान कर सकते हैं।

होंडा शाइन 100 वर्सेज हीरो स्पलेंडर प्लस: इंजन, फीचर्स और परफॉर्मेंस में कौन बेस्ट

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय बाजार में कम्यूटर बाइक सेगमेंट में Honda Shine 100 और Hero Splendor Plus ऑफर की जाती है। यह दोनों ही बाइक इस सेगमेंट में सबसे ज्यादा बिकती है। वहीं यह दोनों ही एक-दूसरे को कड़ी टक्कर भी देती है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको इन दोनों मोटरसाइकिल की तुलना करते हुए बता रहे हैं कि कौन बेहतर है।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में कम्यूटर बाइक सेगमेंट लोगों के बीच सबसे ज्यादा पॉपुलर है। इस सेगमेंट तकरीबन सभी दोपहिया बनाने वाली कंपनियां अपने मॉडल को पेश करती है। इस सेगमेंट में दो ऐसे नाम है, जो लोगों की जुबान पर हमेशा रहते हैं, वे हैं, Honda Shine 100 और Hero Splendor Plus। हाल ही में होंडा ने अपनी नई 2025 Shine 100 को लॉन्च किया है, जो कंपनी की सबसे सस्ती मोटरसाइकिल है। वहीं, हीरो की Splendor Plus इस सेगमेंट में सबसे ज्यादा बिकने वाली बाइक है। हम यहां पर आपको इन दोनों मोटरसाइकिल (Honda Shine 100 Vs Hero Splendor Plus) की तुलना करते हुए बता रहे हैं कि इंजन, फीचर्स और परफॉर्मेंस के मामले में कौन बेहतर है।

1. इंजन और प्रदर्शन

स्पेसिफिकेशन	Honda Shine 100	Hero Splendor Plus
इंजन	98.98cc	97.20 cc
पावर	7500 rpm पर 7.38 PS	8000 rpm पर 8.02 PS
टॉर्क	5000 rpm पर 8.05 Nm	6000 rpm पर 8.06 Nm
गियरबॉक्स	4-स्पीड	4-स्पीड

Honda Shine 100 में 98.98cc का तो Hero Splendor Plus में 97.2 cc का इंजन दिया गया है। Shine 100 में भले ही थोड़ा बड़ा इंजन मिलता है, लेकिन Splendor Plus से थोड़ा कम पावर जनरेट करता है। वहीं, Shine 100 का अधिकतम टॉर्क 5000 rpm पर जनरेट होता है, जो Splendor Plus से 1000rpm से पहले ही हो जाता है। इसकी वजह से शुरुआत में Shine 100 थोड़ी तेज जरूर हो सकती है, लेकिन बाद में Splendor Plus से पीछे हो सकती है।

2. सस्पेंशन और ब्रेकिंग

स्पेसिफिकेशन	Honda Shine 100	Hero Splendor Plus
फ्रेम	ट्यूबलर डबल क्रैडल	ट्यूबलेस तो
फ्रंट सस्पेंशन	टेलेस्कोपिक	टेलेस्कोपिक
रियर सस्पेंशन	प्रीलोड एडजस्टेबिलिटी के साथ ट्विन रियर शॉक	
फ्रंट ब्रेक	Drum 130 mm	Drum 130 mm
रियर ब्रेक	Drum 110mm	Drum 130 mm
फ्रंट टायर	2.75-17	3.00-17
रियर टायर	80/100-18	80/100-18

दोनों ही बाइक में समान सस्पेंशन सेटअप दिया जाता है, जो रोजाना के कामकाज के लिए पर्याप्त है। ब्रेकिंग की बात करें तो Splendor Plus में बड़ी रियर ब्रेक मिलता है। इसके अलावा, Splendor Plus में 18-इंच के तो Shine 100 में 17-इंच के पहिए दिए हैं। Hero Splendor Plus में ट्यूबलेस तो Honda Shine 100 में ट्यूब टायर दिए गए हैं।

3. फीचर्स और डाइमेंशन

स्पेसिफिकेशन	Honda Shine 100	Hero Splendor Plus
एनालॉग स्पीडो	हां	हां
	CBS	हां
	हां	हां
फ्यूल टैंक कैपेसिटी	9 लीटर	9.8 लीटर
सीट की ऊंचाई	786 mm	785 mm
कर्ब वेट	99 kg	112 kg
व्हीलबेस	1245 mm	1236 mm

बच्चों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास में विज्ञान बाल कथाओं की अहम भूमिका

विजय गर्ग

विज्ञान साहित्य में विज्ञान कथाएँ बच्चों को बहुत लुभाती हैं। बालक के विकास में विज्ञान कथा का क्या योगदान हो सकता है के उत्तर में कहती हैं, " विज्ञान कथाएँ बालक की कल्पनाशीलता को नये आयाम दे सकती हैं। ये शिक्षा प्रक्रिया को रोचक बनाती हैं। विज्ञान कथाएं पढ़ने से बालक की विचार प्रक्रिया सुदृढ़ होगी और दूर दृष्टि का विकास भी होगा।"

विज्ञान साहित्य को बाल साहित्य में अनिवार्य रूप से शामिल किया जाना चाहिए। वर्तमान युग विज्ञान का युग है। बच्चें देश का भविष्य हैं। विज्ञान कथाएं और विज्ञान साहित्य बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित कर उन्हें बदलती हुई परिस्थितियों से समायोजन में मदद करता हैं और उनके व्यक्तित्व का विकास करता है। विजय गर्ग कहते हैं कि" बाल साहित्य में विज्ञान साहित्य को शामिल करना कितना उचित "

विज्ञान साहित्य कौन- कौन सी विधाओं में लिखा जा रहा है "विज्ञान साहित्य को अलग- अलग विधाओं में लिखा जा सकता है। छोटे रोचक विज्ञान लेख, यात्रा वृतांत, वैज्ञानिकों के संस्मरण, विज्ञान कविता और विज्ञान कथा।"

क्या विज्ञान साहित्य विज्ञान के सिद्धांतों को समझने में मददगार हो सकता है के प्रश्न पर गर्ग जी का कहना था "यह अच्छा प्रश्न किया, इसमें कोई संदेह नहीं है। कई बार विज्ञान के सिद्धांत कठिन और नीरस लगते हैं। कक्षा में समझ नहीं आते, लेकिन जब हम इन्हें विज्ञान कथा के माध्यम से समझाते हैं तो इन्हें समझना आसान हो जाता है। विज्ञान साहित्य को पढ़ने से वैज्ञानिक शब्दावली का ज्ञान भी आसानी से होने मदद मिलती है।"

ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी कई अंधविश्वास और भ्रांतियों व्याप्त हैं। क्या विज्ञान साहित्य इन्हें दूर करने में सहायक होता है के प्रश्न पर उन्होंने बताया, " विज्ञान साहित्य को पढ़ने से वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होता है। बालक समस्या को पहचान कर उसका मूल कारण खोजता है। अपनी बात को सत्यापित करने के लिए तथ्यों का सहारा लेता है। बालक में अन्वेषण प्रवृत्ति और तर्क शक्ति का विकास होता है।"

विज्ञान साहित्य में विज्ञान कथाएँ बच्चों को बहुत लुभाती हैं। बालक के विकास में विज्ञान कथा का क्या योगदान हो सकता है के उत्तर में कहती हैं, " विज्ञान कथाएँ बालक की कल्पनाशीलता को नये आयाम दे सकती हैं। ये शिक्षा प्रक्रिया को रोचक बनाती हैं। विज्ञान कथाएं पढ़ने से बालक की विचार प्रक्रिया सुदृढ़ होगी और दूर दृष्टि का विकास भी होगा।"

विज्ञान कथा के बारे में कुछ और बताएं पूछने पर वे कहते हैं कि विज्ञान कथा भी एक साहित्यिक शैली है जिसमें विज्ञान के तथ्यों पर आधारित कहानियाँ शामिल होती हैं, जो अक्सर भविष्य का परिदृश्य प्रस्तुत करती हैं। इनके द्वारा ब्रह्मांड और दुनिया के अस्तित्व को समझा जा सकता है। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, विज्ञान कथाओं में संभावित वैज्ञानिक सफलताओं और मानव ज्ञान का विकास शामिल होता है। विज्ञान कथाएँ कभी भी दैवीय हस्तक्षेप या अन्य ऐसी ही धारणाओं का खुले तौर पर धार्मिक विषयों से संबंधित नहीं होती हैं।

बाल विज्ञान कथाएं कैसी होनी चाहिएं प्रश्न के जवाब में कहते है कि बाल विज्ञान कथाएं, रोचक शैली में लिखी काल्पनिक कहानियां होती हैं. इनमें सेटिंग और कथानक प्रौद्योगिकी, समय यात्रा, बाहरी अंतरिक्ष या वैज्ञानिक सिद्धांतों के इर्द-गिर्द रहते हैं। पहले पुस्तकें और लघु कथाएँ विज्ञान कथा कहानियों को व्यक्त करने के मूल साधन थे। आज उन्नत तकनीकी और विशेष प्रभावों के बल पर टेलीविजन और सिनेमा 21वीं सदी में विज्ञान कथाओं के लिए प्रमुख माध्यम बन गए हैं। बच्चे आज स्क्रीन पर विज्ञान कथा देख कर रोमांचित होते हैं। विज्ञान कथा साहित्य मनोरंजन प्रदान करने के अलावा वर्तमान समाज की आलोचना भी करता है और विकल्पों की खोज कर सकता है। यह "आश्चर्य की भावना" को प्रेरित कर सकता है।

बाल विज्ञान कथा के कथानक भी बच्चों को आकर्षित करने वाले होने चाहिए इस पर आपकी क्या राय है पूछने पर बताते हैं कि विज्ञान कथा साहित्य में कथानकों की एक विस्तृत श्रृंखला विद्यमान है। अंतरिक्ष, साहसिक यात्राएं, विविध वैज्ञानिक सिद्धांत, भविष्य में वैज्ञानिक आविष्कारों की कल्पना, जैव तकनीकी के अनुप्रयोग, पर्यावरण आदि बाल कथाओं के प्रमुख विषय है। रोबोट, कृत्रिम मनुष्य, मानव क्लोन, बुद्धिमान कंप्यूटर और मानव समाज के साथ उनके संभावित संघर्ष सभी विज्ञान कथाओं के प्रमुख विषय रहे हैं।

विज्ञान कथा को कल्पना कथा भी कहा जाता है, क्या वास्तव में यह चमत्कारों की बात करती है प्रश्न के उत्तर में वे कहते हैं कि साहित्य में विज्ञान कथा समय के प्रति संवेदनशील विषय है। आम तौर पर भविष्यवादी, विज्ञान कथाएँ तकनीकी परिवर्तन द्वारा संभव बनाए गए जीवन के वैकल्पिक तरीकों के बारे में अनुमान लगाती हैं, और इसलिए कभी-कभी इसे "कल्पना कथा" कहा जाता है। विज्ञान कथा का एक बड़ा लाभ यह है कि यह पाठक के लिए अज्ञात या अप्राप्य ज्ञान के छोटे-छोटे अंश, संकेत और वाक्यांशों को व्यक्त कर सकता है' चमत्कार जो इसमें घटित हो रहे हैं, वे अक्सर भविष्य में सत्य बन जाते हैं। पूर्व में लिखी गई अनेक विज्ञान कथाओं में वर्णित तथ्य आज सत्य साबित हो चुके हैं। असीमोव ने 50 के दशक में बुद्धिमान रोबोट्स की कहानियां लिखी हैं। रे ब्रैडबरी की विज्ञान कथा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता युक्त वस्तुएं आज सत्य हैं। विज्ञान कथा का आकर्षण तर्कसंगत, विश्वसनीय और चमत्कारी के संयोजन में निहित है। विज्ञान कथा साहित्य से बालक को अन्य क्या लाभ हो सकते हैं पूछने पर वे बताती हैं कि विज्ञान कथाओं में भविष्य के संसार से बच्चों का परिचय होता है। भविष्य में पर्यावरण कैसा होगा, तकनीकी कितनी उन्नत हो जाएगी और इस परिप्रेक्ष्य में समाज का स्वरूप क्या होगा। कौनसी चुनौतियों हमारे सामने आ सकती है, विज्ञान कथाएँ यही बताते है।

आप विज्ञान कथा, कविता और अन्य प्रकार लेखन करते हैं बताएं विज्ञान साहित्य कैसा होन चाहिए, इस पर वह कहती विज्ञान साहित्य सरस और रोचक भाषा होना चाहिए। कहानी या लेख बहुत बड़े न हों, साथ में आकर्षक चित्र भी हों। विज्ञान कथा का आधार कोरी कल्पना या फंतासी न हो, वैज्ञानिक तथ्य हों।

अंतिम प्रश्न विज्ञान साहित्य पर आपका अनुभव कैसा है क्या इसे साहित्य जगत में साहित्य की श्रेणी में रखते हैं। आपने बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न किया, वैसे तो विज्ञान साहित्य, आम साहित्य जैसा है परंतु विडंबना है कि साहित्य जगत में इसे साहित्य से पृथक कर ही देखने की प्रवृति अधिक है। जब की विज्ञान साहित्य लेखन को बढ़ावा देने के लिए कई विज्ञान पत्रिकाएं भी प्रकाशित होती हैं। विज्ञान साहित्य लेखक होने के नाते चाहूंगा कि आमजन में भी इसे अलग न देख कर साहित्य का ही महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाए। समाचार पत्र भी विज्ञान संबंधी बहुत उपयोगी जानकारी बच्चों को निरंतर देते हैं, वे विज्ञान कथा, कविता और लेखों को भी अपने प्रकाशनों में स्थान देंगे तो और प्रोत्साहन मिलेगा। मेरा लेखन का अनुभव अच्छा है, विज्ञान पत्रिकाएं कई बार आग्रह कर विषय विशेष पर रचनाएं मंगवाते हैं। अंत में पुनः कहना चाहूंगा कि विज्ञान साहित्य को समुचित सम्मान की दृष्टि से देखा जाए, प्रोत्साहन मिले और बच्चें विज्ञान साहित्य पढ़ने के लिए प्रेरित हों।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

अपनी जमीन से उखड़े हुए लोग

विजय गर्ग

आज अंतरराष्ट्रीय प्रवासन, मानव विकास और आर्थिक प्रगति में योगदान का एक महत्त्वपूर्ण कारक बन चुका है। अंतरराष्ट्रीय प्रवासन संगठन (आइओएम) की रपट के मुताबिक विकासशील देशों में सकल घरेलू उत्पाद में उनके प्रवासी नागरिकों द्वारा भेजी जाने वाली राशि का योगदान, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश से कहीं अधिक हो चुका है। दूसरी तरफ संघर्षों, हिंसा, प्राकृतिक और अन्य तरह की आपदाओं के कारण विस्थापितों की संख्या में रेकार्ड वृद्धि हो रही है। हाल के वर्षों में विदेशी प्रवासियों की अपने देशों को भेजी धनराशि में 650 फीसद वृद्धि दर्ज हुई है। वैसे तो दुनिया आप्रवासन, विस्थापन और लाखों शरणार्थी शिविरों के साथ हिंसाग्रस्त और संकटपूर्ण अनुभवों से गुजर रही है। हिंसा और जलवायु आपदा के सताए हुए ऐसे लगभग बारह करोड़ लोगों को, दोहरे दंड के रूप में, पहले से ही मुद्रास्फीति जैसे आर्थिक संकटों से जूझ रहे मेजबान समुदायों की शरणार्थी विरोधी दुर्भावनाओं से भी जूझना पड़ रहा है

इस समय दुनिया भर में लगभग अठाईस करोड़ दस लाख यानी वैश्विक आबादी के लगभग 3.6 फीसद लोग अंतरराष्ट्रीय प्रवासी हैं, जिनमें से करीब बारह करोड़ लोग तो विस्थापित हैं। आइओएम की इस जानकारी के मुताबि हिंसक संघर्षों से जान बचाने की कोशिश में हर तीन में से एक प्रवासी की जान चली जाती है। बीते दो वर्षों में 8,541 प्रवासी अपनी जान गंवा चुके हैं। दो-तिहाई से अधिक की शिनाख्त नहीं हो पाई है। मृत प्रवासियों बीते एक दशक में 63 हजार प्रवासियों की मौत हो चुकी है। इनमें लगभग छह हजार महिलाएं रही हैं। लगभग 27 हजार लोगों के तो अवशेष तक बरामद नहीं हो सके हैं। सबसे ज्यादा मौतें भूमध्यसागर के रास्ते हुई हैं।

संयुक्त राष्ट्र का मानना है कि 75 फीसद शरणार्थी गरीब हैं, जिनमें से केवल 50 फीसद को कोई रोजी-रोजगार मिलना संभव हो पा रहा है। उनको अक्सर खतरनाक स्थितियों से बाहर निकलने के लिए लगभग सब कुछ पीछे छोड़ना पड़ रहा है। आगे उनके लिए अपना जीवन फिर से बनाना और अपने मेजबान समुदाय से कोई सहयोग बमुश्किल मिल पा रहा है। लगभग 22 फीसद शरणार्थी शिविरों में रह रहे हैं, जबकि अन्य 78 फीसद शहरी उपनगरीय क्षेत्रों में दिन गुजार रहे हैं। उनका जीवन असुरक्षित रहता है।

या विस्थापितों, शरणार्थियों और आप्रवासियों के लिए सुरक्षा, भोजन, पानी - बिजली और मानसिक स्वास्थ्य उनके अस्तित्वगत मुद्दे हैं। आंतरिक हिंसा और युद्धग्रस्त क्षेत्रों में, हवाई हमलों के सायरन उन्हें डराते रहते हैं। भावनात्मक स्तर पर उनकी कोई परवाह नहीं करता है। कठिनाइयां उन्हें रात-रात भर जगाए रहती हैं। ऐसे जटिल हालात में उन्हें बार-बार परिवार के साथ भागते रहना पड़ता है। भाषाई और सांस्कृतिक चुनौतियां भी पीछा करती रहती हैं। पराए मुल्क में वे में वे सामान्य संदेश भी भी नहीं समझ पाते हैं। उनके बच्चे सतत शिक्षा और खेल-कूद से वंचित रहते हैं। उनके पारिवारिक रिश्ते तक बिखर जाते हैं। इन मुश्किलों में शरणार्थी जीवन जीने की इच्छाशक्ति तक खो बैठते हैं। विकलांग विस्थापितों की तो जिंदगी तबाह हो जाती है। सरकारों की आपातकालीन सेवाओं से भी उन्हें वंचित रहना पड़ता है। लाखों शरणार्थियों की वतन वापसी का सपना प्रायः टूट जाता है।

महिलाओं को बड़ी ही जलालत भरी जिंदगी गुजारनी पड़ती है। उन्हें अक्सर दलालों की धोखाधड़ी का सामना करना पड़ता है। प्रवासन में बच्चों-बुजुगों की देखभाल उनके लिए एक अलग ही चुनौती होती है। कुछ दशक पहले पड़ोसी देशों के हजारों नेपालीभाषी भूटानी लोगों को अपनी मातृभूमि से भागने पर मजबूर होना पड़ा था। एक लाख से ज्यादा लोग जंगली रास्तों से भारत से नेपाल गए। उन्हें लगा था कि नेपाल, भाषा एक होने के नाते उन्हें स्वीकार कर लेगा, लेकिन आज दशकों बाद भी, नागरिकता के प्रश्न पर उन लोगों की जिंदगी अधर में लटकी हुई है। वे अपने देश नहीं लौट पा रहे हैं। ये लोग आसपास के खेतों में काम करके या शिविरों के अंदर खाना बेच कर थोड़ा पैसा कमा लेते हैं, लेकिन शिविरों को चलाने के लिए बहुत सारा पैसा उन भूटानी लोगों से आता है, जो अब दूसरे देशों में जा बसे हैं। संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2007 से 2016 के बीच, सवा लाख भूटानी शरणार्थियों को नेपाल के पूर्वी हिस्से में स्थित शिविरों से निकाल कर आठ देशों में बसाने मदद थी।

स्थितियोंऱ उधर, बढ़ती हिंसा के बीच विस्थापित लगभग नौ लाख सीरियाई गंभीर का सामना कर रहे हैं। वहां संयुक्त राष्ट्र आजीविका अनुदान, राहत वितरण, यौन हिंसा की रोकथाम और बारूदी जखीरों से सुरक्षा संबंधी गतिविधियां चला रहा है। है। इसी तरह सूडान में 1.2 करोड़ से अधिक लोग विस्थापन का शिकार हो चुके हैं। इनमें 32 लाख लोगों ने पड़ोसी देशों में शरण ले रखी है। शरणार्थी और विस्थापित परिवारों के बच्चों बच्चों की शिक्षा तक भी अब सिमटती रहा है। तुलनात्मक रूप से शरणार्थी सीमित पहुंच बच्चों के 5 स्कूल से बाहर से बाहर होने की आशंका पांच गुना अधिक है। संघर्ष, आघात और शरण की तलाश का भावनात्मक बोझ ऐसे बच्चों को औपचारिक कक्षाओं में प्रवेश लेने लायक भी नहीं रहने दे रहा है। बड़ी संख्या में वे बाल मजदूरी करने लगे हैं। अपने परिवारों के जबरन पलायन के बीच उनका भावनात्मक और मानसिक विकास थम सा गया है। बीते दो वर्षों में अस्सी देशों में कम कम तीन लाख बच्चे अकेले और अलग- थलग पड़ चुके हैं। उनका जोखिम दोगुने से भी अधिक हो चुका है। लड़कियों की तस्करी हो रही है।

कनाडा वैसे तो नए आप्रवासियों का स्वागत करता रहा है, लेकिन विस्थापितों और प्रवासियों के कारण पिछले कुछ वर्षों में उसकी आबादी 3.2 फीसद बढ़ द बढ़ चुकी है। वहां के बाशिंदों में 23 फीसद लोग एशिया और मध्यपूर्व के विदेशी हैं, जिनमें से ज्यादातर अस्थायी नागरिक और करीब नौ लाख अंतरराष्ट्रीय छात्र हैं। अब वहां अफ्रीकी प्रवासियों की संख्या बढ़ रही है। हर दो कनाडाई में से एक का कहना है कि आप्रवासन देश को नुकसान पहुंचा है। विस्थापितों, आप्रवासियों, शरणार्थियों की बढ़ती संख्या को लेकर संयुक्त राज्य अमेरिका भी भारी दबाव से गुजर है। वहां के आंकड़े बताते कि बीते वर्षों लगभग 87 हजार भारतीयों को दक्षिण-पश्चिम सीमा पर, लगभग 89 हजार को उत्तरी सीमा पर रोकना पड़ा। अमेरिका के लिए वे अब सबसे बड़े बाहरी समूह बनते जा रहे हैं। इस बीच यूरोप में भी आप्रवासियों की संख्या घटाने की कोशिशें शुरू हो चुकी हैं। ब्रिटेन भी अपने यहां आने वाले लोगों की संख्या कम करने की कोशिश कर रहा है। आंतरिक संघर्ष और जलवायु परिवर्तन मेजबान कारण बन चुके हैं। भोजन और बुनियादी जरूरतों के लिए सीमित विकल्पों के साथ उन्हें सबसे बुनियादी जरूरतों तक पहुंचने में भी भारी बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है। लगभग चार करोड़ शरणार्थियों को बुनियादी जरूरतें प्रदान करना और उनके अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करना बहुत बड़ी चुनौती बन चुकी है। हजारों शरणार्थियों को ऐसे देशों में रखा गया है, जो संघर्ष, हिंसा और असुरक्षा से ग्रस्त हैं। उनके सामने यह मानवाधिकार उल्लंघन का भी बड़ा संकट है।

कहानी- सामनेवाले घर की बहू

विजय गर्ग

प्रतिदिन जैसा ही सूर्योदय था, चिड़ियि बेपरवाह चहक रही थी, प्राणदायिनी हवा तन-मन को शीतल किए दे रही थी. रोज़ की तरह ही दूधवाले, पेपरवाले काम पर निकल पड़े थे, घरों में लोग नहाकर भजन-पूजन कर रहे थे. रसोई में चाय की प्यालियां खड़क रही थीं. ब्रेड-बटर, परांठे-सब्ज़ियों की ख़ुश्बू आ रही थी. पुरुष वर्ग काम पर जाने की तैयारी में थे. मांएं बच्चों को लेकर दौड़ती हुईं इस हड़बड़ी में कि कहीं स्कूल बस छूट न जाए- सब कुछ एक जैसा, किसी पर कोई असर नहीं कि किसी की हरी-भरी दुनिया बसने से पहले ही उजड़ गई. मैं अपने एकांत कमरे की खिड़की पर खड़ी, सामने वाले घर पर नज़रें जमाए थी, जो आंसुओं के सैलाब से धुंधली हो आई थीं.

दस वर्ष पूर्व बतौर सहायक शिक्षिका के पद से रिटायरमेंट के बाद से ही घर की छत पर बना यह छोटा-सा, हवादार कमरा मेरी शरणस्थली बना हुआ था. मैंने नौकरी बहुत बेमन से की थी, कुछ आर्थिक कारणों से और कुछ पति एवं ससुरालवालों के दबाव के कारण. मैं एक अंतर्मुखी, दीन-दुनिया से बेख़बर स्त्री थी. मुझे अपनी कल्पनाओं की दुनिया में व्यस्त रहना अच्छा लगता. मेरे विचार, मेरे सपने मुझे लेखन की दुनिया में खींच लाए.

अपनी कहानियों और लेखों के प्रकाशन से मुझे अनुपम संतोष मिलता, किंतु अन्य आम स्त्री की भांति मुझे भी पति, सास, ससुर, देवर, ननद और अपने दोनों बच्चों की सेवा-टहल करनी पड़ी. लेखन का समय कम मिलता, किंतु मैं निकाल ही लेती. प्रकाशित रचनाओं को देखकर मिली ख़ुशी मैं किसी से बांटती नहीं, किंतु पति का मूक समर्थन मेरा संबल था. एक के बाद एक मैं सारी ज़िम्मेदारियां निभाती चली गई.

मैं तटस्थ भाव से दुनियादारी निभाती रही, किंतु पति की मृत्यु के आघात ने मुझे सांसारिकता से विमुख कर दिया. कई सालों तक यंत्रवत्नौकरी करते हुए एक दिन सेवानिवृत्त हो गई. उसी दिन शाम को बुलाकर मैंने अपनी एकमात्र बहू को आलमारी व बैंक लॉकर की चाभियां, क़ीमती साड़ियां व गहने- सब कुछ सौंपकर हाथ झाड़ लिए. हमारा छोटा-सा बंगला सभी सुख-सुविधाओं से सम्पन्न था, किंतु धन-ऐश्वर्य, विलासिता-सांसारिकता से मैं पूर्णतः विमुख हो चुकी थी.

मैंने छत पर एक एकांत कमरा बनवाया और इसी कमरे में रहने लगी. कमरे में एक तख्त, पतला गद्दा, चादर, बड़ी-सी खिड़की के पास अपने सबसे प्रिय कोने में अपनी स्टडी टेबल व कुर्सी, एक बक्सा (गिनी हुई कुछ साड़ियां व तौलिए रखने के लिए), एक टेबल लैम्प और एक पंखा- बस, इतना ही सामान रखवाया.

मेरे लिखने-पढ़ने की मेज़ ही मेरी सबसे रुचिकर जगह थी, जहां मेरी कल्पनाएं नित नए रूप में पंख पसारे मेरे आस-पास मंडरातीं और उन्हें श्वेत काग़ज़ों पर शब्दों में ढालते, मूर्तरूप देते हुए मैं दुनिया की सबसे सुखी स्त्री होती. मैं मोह-माया से विरक्त पचहत्तर वर्षीया वृद्धा, अपनी ही रचनाओं में लीन जी रही थी, तभी एक दिन अचानक मेरा भी किसी से जुड़ाव हो गया और मैं किसी के मोह में पड़ गई.

उस दिन सुबह नहा-धोकर बैठी ही थी कि अचानक शंख, उलूक-ध्वनि और खिलखिलाहट ने मेरी तंद्रा भंग कर दी. देखा, सामने वाले घर का बड़ा लड़का शादी के बाद पत्नी के साथ घर में प्रवेश करने जा रहा था. दूल्हा धोती-कुर्ता व सिर पर टोपोर पहने था और उसके बगल में लाल बनारसी साड़ी में सजी, सिमटी-सी खड़ी थी उसकी दुल्हन- सिर पर श्वेत मुकुट, विदाई के आंसुओं से धुला सुंदर चेहरा, क्लांत भाव, नयन झुके हुए. लड़का कुछ मस्ती के मूड में था. मां द्वारा आरती कर लेने और बहनों से कुछ लेन-देन के बाद उस जोड़े को गृह-प्रवेश की अनुमति मिल गई.

वह एक बंगाली ब्राह्मण परिवार था. अगले दिन बहूभोज के आयोजन में बहू ने हरे रंग के सुनहरे-चौड़े बॉर्डर वाली तांत की साड़ी पहनी थी. वह गहनों से लदी थी, केश पूरे खुले थे. घूंघट भी बस नाममात्र का था. सर्वप्रथम साड़ी, सिंदूर, आल्ता व अन्य सामग्री उसके आंचल में देते हुए पति ने जीवनभर उसके वस्त्र-भोजन की ज़िम्मेदारी वहन करने का वचन दिया, फिर बहू ने कोई एक व्यंजन सबकी थाली में परोसा और भोज शुरू हो गया. हंसी-ख़ुशी का माहौल था.

यह सारा आयोजन उनके घर के आंगन में हो रहा था, जो मुझे अपनी खिड़की से स्पष्ट दिखाई दे रहा था. अचानक मुझे ध्यान आया, कल से मैं लगातार सामनेवाले घर की ओर टकटकी लगाए बैठी हूं. जब भी मेज़ पर लेखन या पठन के लिए बैठती, आंखें अनायास ही उस घर पर चली जातीं. दुबली-पतली, बड़ी-बड़ी आंखोंवाली, घनेरी पलकें, सुतवां नाक और पतले अधरों वाली वह श्यामवर्णा लड़की मेरे मन में बस गई. प्रतिदिन उसे और उसके कार्यकलापों को देखते रहने का लोभ मैं संवरण न कर पाती.

अतिथियों के जाने के बाद वह छुईमुई-सी, नई-नवेली दुल्हन एक कर्त्तव्यपरायण बहू के रूप में बदल गई. झाड़ू-पोछा लगाती, पानी भरती, सास के साथ खाना बनवाती, ट्रे में चाय-नाश्ता सजाकर सबको- जो जहां मांगे, वहीं दे आती. उसके पति और देवर एक जैसे दिखते थे. ननद व देवर उसके प्रिय मित्र बन गए थे. उनके साथ ही वह बाज़ार व पिकनिक जाती, बाग़वानी करती.

वह घर की दुलारी बहू थी. उसका पति उस पर जान छिड़कता था. शाम छह बजते वह पति की प्रतीक्षा में छत पर चली जाती. सात बजे मोटरसाइकिल की आवाज़ सुनते ही वह हिरनी-सी कुलांचे भरती नीचे पहुंच जाती और आंखों में ढेर सारा प्यार व होंठों पर सलज्ज मुस्कुराहट लिए गेट खोल देती. पति उसे नज़रों ही नज़रों से प्यार करता, फिर दोनों अंदर जाते. सब मिलकर खाते-पीते, मस्ती करते. कभी-कभी बहू पति के साथ उसकी मोटरसाइकिल के पीछे चिपककर घूमने जाती, तो उसकी ननद हाथ हिला कर उसे विदा करती.

फिर रात गहराती, दरवाज़े-खिड़कियों के पर्दे लहराते. मैं अपने एकांत कमरे में बैठी उनके कमरे की रोमानियत को महसूस करती. उस घर में 'ज़िंदगी' बसती थी, जिसने मुझे भी प्रफुल्ल कर दिया था. उस दौरान मैंने दर्जनों प्रेमकथाएं लिखीं. मेरे पाठक-प्रकाशक विस्मित थे कि इस पचहत्तर वर्षीया बुढ़िया में ऐसी कौन-सी प्रेम की कोपलें फूट आईं, जो यह तन-मन में सिहरन जगानेवाली, सच्चे प्यार की अनुभूति करानेवाली कहानियां लिखे जा रही है. अब उन्हें भला कौन बताता कि मैं सचमुच ही सामनेवाली बहू, जिसका मैं नाम भी नहीं जानती थी, से एक गहरा रिश्ता जोड़ बैठी थी.

फिर उसके देवर को कहीं बाहर नौकरी मिल गई और वह चला गया. उसकी ननद की भी शादी हो गई. अब घर में बस दो जोड़े रह गए थे, जिनमें एक वृद्ध था और दूसरा जवान- प्रेम में उन्मत्त, जीवन से भरपूर. माता-पिता उन्हें पूर्ण प्रेम और संरक्षण देते, उनकी ख़ुशी से ख़ुश होते. शायद अब वे उनसे एक बच्चे की अपेक्षा करने लगे थे और ऐसा ही कुछ होता भी, यदि अचानक एक भयंकर दुर्भाग्य का साया उस परिवार पर न पड़ा होता.

मैं रातभर सो नहीं पाई थी, जब शाम को मेरी बहू ने मुझे बताया कि सामनेवाले घर के बड़े पुत्र की एक सड़क दुर्घटना में मौत हो गई.

उस घर से आती मां की चीखें, पिता का निःशब्द क्रन्दन और बहू का आर्तनाद मैं अपने कमरे से सुन और महसूस कर सकती थी. पूरी रात गृह-स्वामी अपने छोटे पुत्र के साथ युवा बड़े पुत्र के शव की कांट-छांट देखते रहे थे. उनकी रात पोस्टमार्टम रूम के बाहर ही बीत गई और अब भोर में सफ़ेद वस्त्रों में लिपटा शरीर घर के आंगन में पड़ा था. वही शरीर, जिसे मां ने महीनों कोख में रखा, जन्म दिया और बड़े अरमानों से पाला था. वही शरीर, जो पिता के बुढ़ापे की लाठी था, बहन-भाई का दुलारा था और जो एक युवा स्त्री का सब कुछ था.

वह बदहवास-सी निर्जीव शरीर को निहार रही थी. उसकी ननद दहाड़ें मारती उसे खींच रही थी. अचानक उसकी सास गरजी,

"इसी नासपीटी के लिए कश्मीर-भ्रमण का टिकट कटाने गया था मेरा लड़का और ऊपर का टिकट कटवा आया."

"मां! ये क्या कह रही हो?" छोटे पुत्र ने विरोध करना चाहा, किंतु वह नहीं रुकी

"मैं कैसे चुप रहूं. इसे कोख में रखा था नौ महीने. बित्तेभर से छह फुट का जवान बना कर जिसे सौंप दिया, वही खा गई इसे' इसे जन्म देने की पीड़ा सही मैंने, अब इसे खोने का दुख कैसे सहूं?" मां ज़मीन पर लोट गई.

मां के इस विलाप से बहू पत्थर का बुत बन गई. फिर किसी ने भी उसे एक आंसू बहाते नहीं देखा, कुछ बोलते नहीं सुना. वह वहीं पुतले की तरह पड़ी रही, अर्थी उठने तक.

वह घर वीरान हो गया. कुछ दिनों बाद पहले ननद गई और फिर देवर भी चला गया. घर में केवल तीन प्राणी रह गए थे. वे तीनों कहीं खो से गए थे. कोई नज़र ही नहीं आता था. कभी-कभी उस ख़ामोशी को तोड़ती एक बेबस मां के क्रंदन या बहू को कही गई किसी बात की बड़बड़ाहटों की आवाज़ें फिर वही मौत का सन्नाटा

बहू के कमरे के पर्दे वैसे ही लहराते, वैसी ही सुरमई रातें होतीं और शीतल बयारें भी वैसी ही, किंतु विशाल पलंग के कोने में पड़ी बहू का साथी कहीं गुम हो गया था. वह उस खाली स्थान पर हाथ रखे लेटी रहती होगी' सूखी आंखें और बंद होंठ लिए.

मेरी लेखनी चुप हो गई थी. मैं अपनी कहानी के पात्रों की रचयिता थी, जैसा चाहती उन्हें वैसा ही चलाती थी. किंतु सामनेवाले घर के पात्रों से मैं भले ही बहुत गहरे तक जुड़ गई थी, पर उनका रचयिता कोई और था. यदि इस कहानी की रचनाकार मैं होती तो स्थिति कुछ और होती, किंतु यहां तो पात्रों की डोर ऊपर वाले ने थाम रखी थी.

अचानक मेरे कमरे का दरवाज़ा खड़का और मेरी बहू तेज़ी से सामने आ खड़ी हुई.

"अपने ख़ुराक की दो रोटियां भी आप लौटा दे रही हैं, ऐसा कैसे चलेगा? चलिए, नीचे चल कर हमारे साथ रहिए, कम से कम आंखों के सामने तो रहेंगी."

"मेरी चिंता छोड़, यह बता सामनेवाले घर की बहू के क्या हाल हैं?"

"अब उस बेचारी के क्या हाल होंगे? पति की मृत्यु के आघात से पत्थर हो गई है. एक ही जगह पड़ी रहती है. पुत्र के ग़म में पागल-सी हुई मां, उसे ही मृत्यु का कारण ठहराती है."

मैं उदास हो गईर. 'खाना ठीक से खा लिया करूंगी' के आश्वासन के बाद मेरी बहू चली गई. उस लाचार युवती के जीवन का ऐसा दुखद पटाक्षेप? नहीं, यह नहीं हो सकता. मैं धैर्य से ईश्वर के अगले क़दम की प्रतीक्षा करती रही. वैसे मेरे कल्पनाशील मस्तिष्क ने उसके भविष्य की कहानी रचनी शुरू कर दी थी. क्या वह विधाता के आदेश से मिलती-जुलती होगी?

फिर पता चला, बहू का देवर आया है. हू-ब-हू पति जैसे चेहरेवाले देवर को सामने देख बहू अचानक दहाड़ें मार कर रो पड़ी. महीनों तक बुत बनी रही थी, किंतु अब आंसुओं के सैलाब ने उसे गहरे आघात से उबरने का अवसर दे दिया. वह धीरे-धीरे सामान्य होने का प्रयास करने लगी.

मेरे दिन का अधिकांश समय उसे ताकते ही बीतता. ईश्वर ने अवश्य उसके लिए भी कुछ सोच रखा होगा. उसके नियम क्रूर होते हैं, किंतु अन्यायपूर्ण नहीं. अब मैं जितनी कथा-कहानियां लिखती, सब दुखांत हो जाते. लेखनी तो वैसी ही चलती थी, किंतु उससे निकलनेवाले शब्द अश्रु से पगे, वेदनापूर्ण हो जाते.

उस दिन मेरे सामने ब्रेड के तीन स्लाइस, मिठाई और चाय रखी थी. मैं धीरे-धीरे चाय की चुस्कियां लेने लगी. तश्तरियों की ओर हाथ बढ़ाने का कोई उपक्रम नहीं किया. अचानक सामनेवाले घर की बहू करीने से हल्के रंग की सूती साड़ी पहने और बैग लिए बाहर आई. वह ऑटो में बैठी, तो पीछे खड़ी उसकी ननद ने मुस्कुराते हुए कहा, "नौकरी का पहला दिन मुबारक़ हो, भाभी."

बहू ने हंसने की चेष्टा की, पर सफल नहीं हुई. ऑटो आगे बढ़ गया.

ओह! तो उसे नौकरी मिल गई है. अवश्य ही पति के स्थान पर मिली होगी. अब बाहर निकलेगी, चार लोगों से मिलेगी तो मन बहलेगा. दायित्वबोध या ज़िम्मेदारियों का एहसास व्यक्तिगत पीड़ा से उबरने का अच्छा माध्यम है, मैंने सोचा. मेरे सुस्त शरीर में चेतना भर गई. मैंने फटाफट अपना नाश्ता ख़त्म किया और ऊपर से ही आवाज़ लगाई, "बहू! एक कप चाय और मिलेगी?"

"क्यों नहीं मम्मी, अभी लाई!" बहू ने नीचे से ही जवाब दिया.

कभी कुछ न मांगने वाली मां के एक इशारे पर वह सौ जान न्यौछावर हो गई. दो मिनट में चाय हाज़िर थी. मैं गर्म चाय की चुस्कियों के साथ ख़ुशनुमा रचनाएं रचने लगी.

प्रतिदिन सामनेवाली बहू को ऑफ़िसि जाते हुए देखने का एक अलग आनंद था. उसमें परिवर्तन आ रहा था. उसने प्लेन साड़ियों के स्थान पर फूलदार या खिलते हुए रंगों की साड़ियां पहननी शुरू कर दीं. फिर मैंने उसे हल्का मेकअप, स्टाइलिश जूड़ा और बेहतरीन सैंडिल पहनते देख कर अनुभव किया कि समय के साथ ज़ख़्म सूखने लगे हैं. ज़िंदा रहने के सौ बहाने हैं. कभी-कभी आने वाली ननद और देवर के साथ वह हंसने-बतियाने लगी थी. सबसे सुखद था वह दृश्य, जब उसकी सास को मैंने उसे टिफ़िन थमा कर हाथ हिलाकर विदा करते हुए देखा.

उसके पति की मृत्यु के बाद मुझे स्वयं अपनी ज़िंदगी ठहरी-सी लगती थी. उसे रोते-बिलखते देखकर लगता, मैं भी किसी क्षण समाप्त हो जाऊंगी. कभी मैं उसके साथ रोई थी, आज उसकी ख़ुशी में शरीक होकर प्रसन्न हो रही थी

जैसे मैं अपनी कहानियों के पात्रों को इच्छानुसार ढालती थी, वैसे ही परमेश्वर भी तो अपने बनाए पात्रों के जीवन में उलट-फेर कर के आनंदित होता होगा! लेकिन यदि वह मेरी कहानी का क़रिदार होती, तो मैं उसका पुनर्विवाह करवा देती, उसकी गोद में भी एक चांद-सा बच्चा खेलते देखती.श

'चल-चल, ज़्यादा उड़ मत. ईश्वर ने शायद तेरी इच्छानुसार ही तो उसे स्वावलंबी बना दिया, उसे हंसने का मौक़ा दिया. जो उसे कोसते थे, अब प्यार करने लगे हैं. अब और क्या चाहती है तू?' मेरे अंतर्मन ने मुझे फटकारा, तो जवाब भी वहीं से किसी ने दिया, 'वह तो दूसरों के लिए हंसती है, अपने लिए कहां! रात को अकेले में बिस्तर पर सिसकती होगी. बस इतना ही बदलाव आएगा क्या? नहीं, कुछ और सुखद परिवर्तन की ज़रूरत है. हे ईश्वर! जो करना है जल्दी करना, मेरे पास भी कहां वक़्त बचा है अब?' मैंने हाथ जोड़े.

वह नवरात्रि का द्वितीय दिन था. मैं यूं ही बैठी थी. अचानक चिर-परिचित उलूक-ध्वनि व शंखनाद ने मेरे कान खड़े कर दिए. मैं लगभग भागती हुई खिड़की के पास पहुंची. शायद ईश्वर ने मेरी पुकार सुन ली थी, किंतु यह क्या! वह तो उसका देवर था दूल्हे के वेश में. उसके बगल में गुलाबी जोड़े में उसकी अर्द्धांगनी. मेरा मन बुझ गया. विधवा भाभी शायद अपशकुन के भय से वहां न थी. ननद-ननदोई, बच्चे, सास-ससुर- सब प्रसन्न मुद्रा में खड़े थे. वह कहीं छुप कर तो खड़ी होगी? पर कहां? मेरी व्यग्र दृष्टि इधर-उधर भटकने लगी. अचानक मेरी धड़कनें तेज़ हो गईं, श्वास-प्रश्वास तीव्र से तीव्रतर होते गए.

अरे! मैं भी कैसी मूर्ख थी, सामने खड़ी सामनेवाले घर की बहू को पहचान नहीं पा रही थी. वही तो पति के बगल में दुल्हन के लिबास में खड़ी थी. सूनी मांग अब सिंदूर से दमक रही थी. वैधव्य के श्वेत वस्त्र अब चमकीले रंगों में परिणत हो गए थे. एक वीरान दुनिया आबाद हो गई, टूटे दिल पुनः जुड़ने लगे, कामनाएं पुनः तरंगित होने लगी थीं.

मेरी ख़ुशी का कोई ठिकाना न था, पर बाकी दुनिया उस दिन की भांति आज भी इस सबसे जैसे बिल्कुल अछूती, प्रभावहीन थी. सब अपने-अपने काम में मस्त थे, उन्हें किसी से क्या लेना-देना. किंतु सूर्य की किरणें आज ज़्यादा चमकीली थीं, चिड़ियों के कलरव में जीवन का संगीत बह रहा था'

सामनेवाले घर की बहू इस बात से अनभिज्ञ थी कि कोई और भी उसकी ख़ुशी में शरीक था. घर के ऊपर एकांत कमरे में एक वृद्ध स्त्री प्रसन्नता से नाच और गा रही थी. आज उसके जोड़ों में दर्द नहीं था और न ही सांस फूल रही थी. वह अपनी बहू से आज कुछ मीठा खाने की फ़रमाइश करने वाली थी, उसके लेखन में फिर से प्रेम की उत्ताल तरंगों के गीत सजनेवाले थे. स्त्री-पुरुष के चिर प्राचीन व अति नवीन रिश्तों के पावन एहसास फिर से शब्दों में ढल कर एक नई दुनिया रचने जा रहे थे.

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

आइए मिलजुल कर रहने की भारतीय संस्कृति को अपनाएं

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

कुदरत द्वारा रचित अनमोल खूबसूरत सृष्टि में भारत आदि अनादि काल से संस्कृति सभ्यता बड़े बुजुर्गों को मान सम्मान संयुक्त परिवार प्रथा सहित सभी गुणों में विशाल वटवृक्ष की भांति फलता फूलता रहा है हमारे बड़े बुजुर्गों ने स्वर्णलोक, स्वर्ग अनुभूति इस सृष्टि में धरती पर अपनों के बीच किया देखा और सुख भोगा है। उन अपार सुख के फूलों में से एक फूल है घर, परिवार, संयुक्त परिवार एक मजबूत सुख की छावं देने वाला, छत्रछाया देने वाला संयुक्त परिवार घर परिवार जहां बड़े बुजुर्गों के छत्रछाया में जीवन जीने, उनके फैसलों पर अमल करनें, आगे बढ़ाने और समर्पित भाव से जीवन जीने का सुख, अनमोल क्षण के साए में जीवन जीने का आनंद ही कुछ और है। परंतु वर्तमान परिपेक्ष में धीरे-धीरे हमारे युवादेश के अधिकांश युवा पाश्चात्य संस्कृति के साए में बड़े बुजुर्गोंको नजर अंदाज कर, एकला चलो रे ! वाली नीति पर चलने की राह पर हैं किसी का लिखा एक खूबसूरत वाक्यांश बता दें, घर तब तक नहीं टूटता तब तक फैसला बड़ों के हाथ में होता है, अगर घर का हर सदस्य बड़ा बनने लगे तो घर टूटने में देरी नहीं लगती इसलिए अब समय आ गया है कि हमें बड़े बुजुर्गों की आज्ञा, उनकी छत्रछाया में जीने का अंदाज सीखने की तात्कालिक आवश्यकता है इसलिए हम इस आर्टिकल के माध्यम से आओ घरों को टूटने से बचाएं पर चर्चा करेंगे।

साथियों बात अगर हम महत्वपूर्ण फैसलों के बड़ों के हाथों से छुटने की करें तो, उम्र के फ़र्क़ के साथ-साथ बड़े बुजुर्गों और बच्चों के मूल्यों में अंतर आ जाता है. मिसाल के लिए अगर बड़े बुजुर्ग बहुत धार्मिक हैं और उन्होंने बच्चों को भी वहीं संस्कार दिए तो भी ज़रूरी नहीं कि बच्चे उन्हीं संस्कारों को मानें, बस ! !यहीं से टकराव की शुरूआत होती है। अलगाव की स्थिति पैदा हो जाती है, ये भी देखा गया है कि आमतौर से अलग होने वाले माता-पिता और बच्चों के बीच अलग होने की वजह को लेकर कोई संवाद नहीं होता, इसलिए पताही नहीं चलता कि आख़िर वजह क्या है ।इसके अलावा भाई-बहनों के अलग मिज़ाज और माता-पिता का किसी एक बच्चे के प्रति गहरा लगाव भी अलगाव की वजह बन जाते हैं, ऐसा नहीं है कि परिवार में अलगाव तेज़ी से और रातों रात हो रहा है. बल्कि ये बहुत धीरे-धीरे हो रहा है। कई बार छोटी सी घटना भी परिवार को तोड़ देती है। कहने को तो वो एक घटना होती है लेकिन उसके नतीजे दूरगामी होते हैं।

साथियों बात अगर हम घर में हर कोई बड़ा बनने के दो मुख्य कारणों की करें तो, पिछले कुछ वर्षों में देखा गया है कि भूमंडलीकरण की वजह से उन देशों में भी परिवार टूट रहे हैं, जहां अकेले रहने की रिवायत नहीं है, भारत की ही बात करें तो बड़ी संख्या में लोग रोज़गार की तलाश में गांवों से शहरों में या विदेशों में पलायन कर रहे हैं। वहीं जिन देशों में सरकार की ओर से बेहतर सुविधाएं नहीं मिलतीं वहां बुज़ुर्ग, नौजवान और बच्चों के बीच मज़बूत रिश्ता और एक दूसरे से लगाव देखने को मिलता है, इसकी मिसाल हमें यूरोप के कुछ देशों में देखने को मिलती है। बाहर बड़े शहरों या विदेश में रोजगार में जाने की वजह से माता-पिता से दूरी बन जाती है, साथ ही ऐसे परिवारों में आर्थिक रूप से लोग एक दूसरे पर निर्भर नहीं करते,स्वाभाविक रूप से वे अपने फैसले खुद लेने लगते हैं, लिहाज़ा उन्हें अलग होने में कोई हिचक भी महसूस नहीं होती। ये भी देखा गया है कि जो किसी समुदाय के लोग एक दूसरे से ज़्यादा क़रीब रहते हैं, उनके यहां बड़े परिवार भी एक छत के नीचे रहना पसंद करते हैं, ये भी हो सकता है कि असुरक्षा का भाव उन्हें ऐसा करने को कहता हो। शहरों में बड़े परिवार को साथ रखना आसान नहीं है,हर कोई बड़ा बनने एवं फैसला लेने की चाह रखता है इसलिए भी बुज़ुर्गों के साथ अलगाव की स्थिति पैदा हो रही है और गुज़रते दौर के साथ ये स्थिति और मज़बूत होगी। लेकिन किसी भी समाज में जो सांस्कृतिक मूल्य बहुत मज़बूत होते हैं,वो आसानी से ख़त्म नहीं होते, लिहाज़ा जिन समाज में परिवार के साथ रहने का चलन है वो आगे भी रहेगा, परंतु मुमकिन है कि आने वाले 20 साल में स्थिति पूरी तरह बदल जाएगी।

साथियों बात अगर हम उस एक पुराने जमाने की करें जहां संयम, बड़ों की कद्र और संयुक्त परिवार से संयुक्त समाज का निर्माण हुआ था और फैसला लेना बड़ों के हाथ में रहता था तो, उस दौर में संयम, बड़ों की कद्र, छोटे बड़े का कायदा, नियंत्रण इन सब बातों का प्रभाव था। ऐसे ही संयुक्त परिवारों से संयुक्त समाज का निर्माण हुआ था और पूरा मोहल्ला और गांव एक परिवार की ही तरह रहते थे।परिवार का नहीं, मोहल्ले का बुजुर्ग सबका बुजुर्ग माना जाता था और ऐसे बुजुर्गों के सामने जुबान चलानें या किसी अप्रिय कृत्य करने का साहस किसी का नहीं होता था। उस दौर में मोहल्लों में ऐसा माहौल और अपनापन होता था कि गांव का दामाद' या मोहल्ले का दामाद कहकर लोग अपने क्षेत्र के दामाद को पुकारते थे और अगर कोई भानजा है तो किसी परिवार का नहीं, बल्कि पूरे मोहल्ले और गांव का भानजा माना जाता था और यही कारण था कि लोग 'गांव की बेटी' या गांव की बहू कहकर ही किसी औरत को संबोधित करते थे।

साथियों बात अगर हम आओ घर को टूटने से बचाने के आसान उपायों की करें तो, एक संयुक्त परिवार और बड़े बुजुर्गों के निर्देशन में जीने का सही तरीका है ? स्वार्थ भावना से दूर रहकर, खुद से पहले दूसरों की खुशी का ध्यान रखना होगा और हमारा परिवार हमारी खुशी का ध्यान रखेगा ।अपने कर्तव्यों को पूरा करने की कोशिश हमेशा होनी चाहिए। बड़ो के प्रति आदर भाव और छोटों के प्रति प्रेम होना चाहिए। घर छोटा हो या बड़ा लेकिन दिल हमेशा बड़ा होना चाहिए। अपनी इच्छाओं से पहले परिवार की जरूरतों को ध्यान में रखना चाहिए। संयुक्त परिवार में मेरा कुछ नहीं होता जो भी होता है वो सबका होता है। कुछ बातों को नजरअंदाज करने की कला तो कुछ बातों पर ध्यान देने की कला आनी चाहिए। हर खुशी बड़ी हो जाती है और हर दुख छोटा सयुक्त परिवार में। साथ बैठने का और साथ खाने का महत्व समझना चाहिए ।शेयर करना स्वभाव होना चाहिए क्योंकि, बस एक दूसरे का हाथ पकड़कर चलना सीख लो ।सहनशीलता अच्छी होनी चाहिए ।सामंजस्य बैठाना भी आता हो।

साथियों मेरा यह निजी अनुभव है कि, मेरा परिवार सयुंक्त परिवार और इसीलिए मैने इस प्रश्न का उत्तर देना चाहा। सभी का उचित सम्मान होना चाहिए, विशेष रूप से छोटे बड़ों का हमेशा सम्मान करें। कार्यों का उचित विभाजन हो, जिससे टकराव ना हो। पुरानी कहावत है कि- जहाँ चार बर्तन होते है, वहां टकराव होता है, ये खटपट भी मधुर होनी चाहिए। बाहर की चुगलखोरी एवं चापलूसी को बिल्कुल ध्यान न दे, क्योंकि यह हमारे भारतवासियों का जन्मसिद्ध अधिकार है वो तो करेंगे ही ।अंत में सबसे जरूरी- आपस में प्यार, नहीं तो उपर लिखी सारी बातें बेकार।

करो दिल से सजदा तो इबादत बनेगी।
बड़े बुजुर्गों की सेवा अमानत बनेगी।।
खुलेगा जब तुम्हारे गुनाहों का खाता।
तो बड़े बुजुर्गों की सेवा जमानत बनेगी।।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि आइए घरों को टूटने से बचाएं। घर तब तक नहीं टूटता जब फैसला बड़ों के हाथ में होता है, हर कोई बड़ा बनने लगे तो घर टूटने में देर नहीं लगती। आधुनिक युग कोई परिवार में बड़ों के लिए तरसे, कोई बड़ों पर गुस्से से बरसे की ओर चल पड़ा है।

चिंताजनक है सरकारी अधिकारियों का दुरुपयोग

प्रियंका सौरभ

कानून प्रवर्तन, उद्योग विनियमन और चुनाव निरीक्षण के लिए ज़िम्मेदार सरकारी अधिकारियों को लगातार धमकियों, उत्पीड़न और विभिन्न प्रकार के दुरुपयोग का सामना करना पड़ रहा है। यह प्रवृत्ति चिंताजनक है क्योंकि यह लोक सेवकों को अपनी भूमिका प्रभावी ढंग से निभाने से रोक सकती है और लोकतांत्रिक संस्थाओं में विश्वास को कमजोर कर सकती है। अधिकारियों, विशेष रूप से चुनाव, न्यायपालिका और नियामक निकायों में शामिल लोगों को अक्सर अपने निर्णयों को प्रभावित करने के उद्देश्य से धमकी का सामना करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त, झूठे आरोप और बदनामी अभियान उनकी प्रतिष्ठा को धूमिल कर सकते हैं और उनके अधिकार को कम कर सकते हैं। हालाँकि कुछ देशों में लोक सेवकों की सुरक्षा के लिए कानून हैं, लेकिन इन कानूनों का प्रवर्तन असंगत या कमजोर हो सकता है। इस तरह के दुरुपयोग से उत्पन्न तनाव और भय के परिणामस्वरूप बर्नआउट, इस्तीफे और योग्य उम्मीदवारों को आकर्षित करने में चुनौतियाँ हो सकती हैं।

सरकारी अधिकारियों के साथ दुर्व्यवहार एक बढ़ती चिंता है, क्योंकि वे निष्पक्ष रूप से अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने का प्रयास करते हैं। इन अधिकारियों के प्रति दुर्व्यवहार और शत्रुता की बढ़ती घटनाएँ प्रशासनिक नैतिकता और कानून के शासन के लिए एक महत्त्वपूर्ण चुनौती बन गई हैं। ऐसी घटनाएँ न केवल लोक सेवकों का मनोबल गिराती हैं, बल्कि शासन में जनता का विश्वास भी कम करती हैं, जिससे अधिकारियों को इन कठिनाइयों से निपटने में मदद करने के लिए एक मज़बूत नैतिक ढांचे की आवश्यकता है। सरकारी अधिकारी- जिसमें चुनाव कार्यकर्ता, न्यायाधीश, नियामक और कानून प्रवर्तन कर्मियों को बढ़ती हुई धमकी, उत्पीड़न और यहाँ तक कि शारीरिक धमकियों का सामना करना पड़ रहा है। यह सब राजनीतिक विभाजन, ग़लत सूचना और सोशल मीडिया के प्रभाव जैसे विभिन्न कारकों से प्रेरित है, जो आक्रामक बयानबाजी को बढ़ाता है। कुछ मामलों में, अधिकारियों को डोक्स किया गया है, उनकी व्यक्तिगत जानकारी ऑनलाइन जारी की गई है और उन्हें संगठित उत्पीड़न अभियानों या शारीरिक हमलों का लक्ष्य बनाया गया है।

शिकायतों के लिए स्पष्ट और खुले चैनल बनाने से शत्रुता को कम करने में मदद मिल सकती है। केंद्रीकृत लोक शिकायत निवारण और निगरानी प्रणाली₹ पोर्टल ऑनलाइन नागरिक शिकायतों के प्रबंधन के लिए एक प्रभावी उपकरण है। संघर्ष समाधान और सार्वजनिक संपर्क में अधिकारियों को प्रशिक्षण प्रदान करने से शत्रुता से निपटने की उनकी क्षमता में सुधार होता है। लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी प्रशिक्षण ढाँचे में संकट प्रबंधन पर केंद्रित घटक शामिल हैं। भ्रष्टाचार को उजागर करने वाले अधिकारियों की सुरक्षा अनैतिक प्रथाओं को हतोत्साहित करने में महत्त्वपूर्ण है। 2014 का व्हिसल ब्लोअर प्रोटेक्शन एक्ट उन लोक सेवकों के लिए सुरक्षा प्रदान करता है जो ग़लत कामों की रिपोर्ट करते हैं। नागरिकों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ने से विश्वास बढ़ता है और शत्रुता कम होती है। राजस्थान में जन सुनवाई (सार्वजनिक सुनवाई) पहल ने जवाबदेही को बढ़ावा दिया है और समुदाय के भीतर विश्वास का निर्माण किया है। वरिष्ठ अधिकारियों को अपने कनिष्ठ सहयोगियों को प्रेरित करने के लिए नैतिक व्यवहार का मॉडल अपनाना चाहिए। पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त टी. एन. शेषन ने सख्त चुनावी मानकों को लागू करके एक मज़बूत उदाहरण पेश किया। ईमानदारी, लचीलापन और पारदर्शिता को अपनाकर, सिविल सेवक प्रभावी रूप से शत्रुता से निपट सकते हैं और साथ ही जनता का विश्वास भी बढ़ा सकते हैं।

कठिन परिस्थितियों में नैतिक शासन बनाए रखने के लिए संवैधानिक सिद्धांतों को बनाए रखना और सक्रिय उपायों को लागू करना आवश्यक है। जब सरकारी अधिकारियों को अपने कर्तव्यों को निष्पक्ष रूप से निभाने के लिए दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ता है, तो इससे संस्थाओं और न्याय प्रणाली में जनता का विश्वास ख़त्म हो सकता है। यह प्रवृत्ति प्रभावी शासन में बाधा डाल सकती है, क्योंकि अधिकारी प्रतिशोध के डर से न्यायपूर्ण और निष्पक्ष तरीके से कार्य करने में संकोच कर सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप भ्रष्टाचार और अन्याय हो सकता है। ऐसे शत्रुतापूर्ण व्यवहार का सामना करते समय सिविल सेवकों का मार्गदर्शन करने वाले नैतिक मानकों का विश्लेषण करना और जवाबदेही और सार्वजनिक विश्वास बनाए रखने के तरीकों की जांच करना महत्त्वपूर्ण है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि सरकारी अधिकारी अपने कार्यों के लिए जवाबदेह हैं और जो लोग अपने अधिकार का दुरुपयोग करते हैं, उन्हें उचित परिणाम भुगतने होंगे, मज़बूत जवाबदेही प्रणाली महत्त्वपूर्ण है। सरकारी गतिविधियों की पारदर्शिता और निगरानी को बढ़ावा देने से कदाचार को रोकने और सार्वजनिक विश्वास बढ़ाने में मदद मिल सकती है। सरकारी संस्थानों की अखंडता में जनता का विश्वास बनाना महत्त्वपूर्ण है, जिसे नैतिक मानकों का पालन करके और अधिकारियों को उनके कार्यों के लिए जवाबदेह सुनिश्चित करके हासिल किया जा सकता है।

अपने कर्तव्यों को निष्पक्ष रूप से निभाने का प्रयास करने वाले सरकारी अधिकारियों का उत्पीड़न लोकतंत्र और प्रभावी शासन के लिए एक महत्त्वपूर्ण ख़तरा है। मज़बूत सुरक्षा, कानूनी जवाबदेही और उत्पीड़न के प्रति सामाजिक प्रतिरोध के बिना, सार्वजनिक संस्थानों की अखंडता खतरे में पड़ जाती है। सरकारों, कानून प्रवर्तन, सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म और नागरिकों के लिए यह सुनिश्चित करने के लिए एक साथ काम करना आवश्यक है कि अधिकारी प्रतिशोध के डर के बिना अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा कर सकें।

महिलाओं के खिलाफ आपराधिक व घिनौनी प्रवृत्तियों पर लगे अंकुश !

भारतीय संस्कृति में महिलाओं की भूमिका सदैव से बहुत ही अहम और महत्वपूर्ण रही है। कहना ग़लत नहीं होगा कि महिलाएं परिवार समाज, समाज के बाद देश के विकास में अनेक भूमिकाएं निभाती हैं। वास्तव में ये महिलाएं ही हैं जो हमारे भारतीय समाज की असली रीढ़ हैं और समुदाय के विकास में अहम भूमिका निभाती हैं। भारत में तो महिलाएं सदैव से पूजनीय रहीं हैं। तभी शायद मनुस्मृति के अध्याय तीन में यह संस्कृत श्लोक मिलता है कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता: ।' इसका मतलब है, 'जहां स्त्रियों की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं।' इस श्लोक से यह बखूबी पता चलता है कि भारतीय संस्कृति में महिलाओं को बहुत सम्मानजनक स्थान दिया गया है। वैसे भी नवरात्रि आती है तो हम कंजिकाओं का पूजन करते हैं, भारतीय संस्कृति में नारी को शक्ति स्वरूपा माना गया है, लेकिन यह बहुत ही शर्मनाक होने के साथ ही दुखद है कि आज हर रोज महिलाओं को अत्याचारों, अपमान, धमकियों, यौन शोषण और अनेक अन्य हिंसात्मक घटनाओं का सामना करना पड़ता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि भारत जैसे देश में जहां की संस्कृति, संस्कारों, महिला सम्मान को वैश्विक स्तर पर एक सकारात्मक व अच्छी दृष्टि से देखा जाता रहा है, वहां महिलाओं के साथ यौन दुराचार के मामले सामने आना हमारे देश की छवि को धूमिल करने वाला कृत्य ही कहा जा सकता है। सच तो यह है कि आज कुछ बीमार मानसिकता के लोगों ने भारत की छवि को दागदार किया है। वाकई यह बहुत दुखद है कि आज देश में बेटियां अपने को हर जगह असुरक्षित, डर व खौफ के माहौल में महसूस कर रहीं हैं। पाठकों को याद होगा कि 16 दिसंबर, 2012 को हुए निर्भया कांड को लेकर हर भारतीय उद्वेलित हुआ था ।उस समय देश में महिलाओं के प्रति हिंसा, अत्याचारों, यौन अपराधों को रोकने के लिए कानूनों को और कठोर बनाया गया था, फास्ट ट्रैक अदालतों तक की स्थापना की गईं थीं,और समाज व देश में यह उम्मीदें जगीं थीं कि महिलाओं के साथ हिंसा, हैवानियत, अत्याचार , बलात्कार की घटनाएं बंद हो जाएंगी। मगर ऐसा नहीं हुआ। कहना ग़लत नहीं होगा कि तबसे अब तक लगातार बलात्कार और हत्या की घटनाएं बढ़ती गई हैं। हमारे समाज, देश में आज भी असामाजिक तत्वों, दरिंदों की अराजकता लगातार बढ़ती ही चली जा रही है। इसके उदाहरण हमें समय-समय पर अखबारों और मीडिया की सुर्खियों में देखने, पढ़ने को मिलते रहते हैं। वास्तव में आज स्थितियां यहां तक हैं कि देश में महिलाओं पर हिंसा, अत्याचारों, बलात्कार आदि की सूची लगातार लंबी व बड़ी होती चली जा रही है। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज राष्ट्रीय राजधानी, बड़े शहरों से लेकर गांवों और कस्बों, आफिस, कहीं पर भी महिलाएं सुरक्षित नजर नहीं आतीं हैं। बहरहाल, पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि कर्नाटक के हंपी में इस्राइली पर्यटक समेत दो महिलाओं के साथ गैंगरेप की घटना का मामला ठंडा भी नहीं पड़ा था कि दिल्ली में एक ब्रिटिश पर्यटक से दुराचार का घृणित मामला सामने आया है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इस ब्रिटिश युवती की सोशल मीडिया पर एक युवक से दोस्ती हुई थी, जिसके बाद वह उससे मिलने भारत आई थी और दोनों एक होटल में रुके थे, जहां आरोपी ने उसके साथ जबरदस्ती की ।यह भी उल्लेखनीय है कि एक अन्य युवक ने भी उसके साथ छेड़छाड़ की। हालांकि, पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है और मामले की जानकारी ब्रिटिश हाई कमीशन को भी दे दी गई है। यहां पाठकों को यह भी जानकारी देना चाहूंगा कि कर्नाटक के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल हम्पी में 6 मार्च की रात को तुंगभद्रा नदी के किनारे कैंपिंग कर रहे विदेशी पर्यटकों पर हमला हुआ। तीन अपराधियों ने दो महिलाओं के साथ रेप किया, जिनमें एक इजरायली नागरिक थी । जानकारी के अनुसार हमलावरों ने तीन पुरुषों को नदी में धकेल दिया, जिसमें एक ओडिशा के पर्यटक की मौत हो गई। बदमाशों ने न केवल दुष्कर्म किया बल्कि मारपीट व लूटपाट भी की। हालांकि, तीनों अपराधियों को गिरफ्तार कर लिया गया है, लेकिन देश की प्रतिष्ठा को जो आंच आई है, उसकी क्षतिपूर्ति संभव नहीं। यहां यह कहना ग़लत नहीं होगा कि आज विदेशों में भारत की छवि यौन अपराधियों के चलते लगातार खराब हो रही है। आज हमारे देश में विभिन्न पर्यटक स्थलों पर यौन दुर्व्यवहार की घटनाएं अक्सर मीडिया की सुर्खियों में सुनने को मिलती रहतीं हैं। दिल्ली में ब्रिटिश पर्यटक के साथ हुई बदतमीजी(दुराचार मामले) मामले में ब्रिटिश दूतावास ने संज्ञान लिया है। बहुत संभव है कि विदेशी सरकारें भारत आने वाले पर्यटकों को लेकर कोई नकारात्मक एडवाइजरी जारी करें। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि 'द टाइम्स ऑफ इंडिया' में एनसीआरबी (राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो) में छपी एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में हर घंटे महिलाओं के खिलाफ अपराध के 51 मामले दर्ज होते हैं; और वर्ष 2022 में 4.4 लाख से अधिक मामले सामने आए हैं ।आंकड़ों से पता चलता है कि वर्ष 2022 में महिलाओं के खिलाफ अपराध के 4,45,256 मामले सामने आए ।यह 2021 की तुलना में उल्लेखनीय वृद्धि है, जिसमें 4,28,278 मामले दर्ज किए गए थे, और 2020 में 3,71,503 मामले दर्ज किए गए थे ।एनसीआरबी के निष्कर्षों से पता चला कि प्रति लाख जनसंख्या पर अपराध दर 66.4 है, जबकि ऐसे मामलों में चार्जशीट दर 75.8 है। चौंकाने वाली बात यह है कि महिलाओं के खिलाफ़ होने वाले ज़्यादातर अपराधों को पति या उसके रिश्तेदारों द्वारा क्रूरता (31.4%) के रूप में वर्गीकृत किया गया है, इसके बाद अपहरण और अपहरण (19.2%), शील भंग करने के इरादे से हमला (18.7%) और बलात्कार (7.1%) का स्थान आता है। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि इन दिनों भारत में यौन अपराधों की बाढ़-सी आई हुई है। न केवल विदेशियों बल्कि भारतीय महिलाओं के साथ घृणित यौन अपराधों की तमाम घटनाएं लगातार प्रकाश में आ रही हैं। ये घटनाएं दर्शाती हैं कि आज भारतीय समाज से नैतिक मूल्यों, संस्कारों का लगातार पतन होता चला जा रहा है। इंटरनेट और सोशल नेटवर्किंग साइट्स ने भी कहीं न कहीं महिलाओं के प्रति अपराधों को जन्म दिया है, क्यों कि आज के समय में इंटरनेट और कुछ सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर अश्लील सामग्री की बाढ़-सी आई हुई है। पाश्चात्य संस्कृति भी ऐसी घटनाओं के लिए कहीं न कहीं जिम्मेदार ठहराई जा सकती है, क्यों कि युवा पीढ़ी आज लगातार भारतीय संस्कृति को भुलाकर पाश्चात्य सभ्यता संस्कृति के रंगों में रंगती चली जा रही है। आज भारतीय समाज भी लगातार एकल परिवारों की ओर अग्रसर हो रहा है, संयुक्त परिवार कम ही बचे हैं। ऐसे में पारिवारिक मूल्यों का लगातार ह्रास हुआ है ।हमारी सांस्कृतिक विरासत मूल्यों, आदर्शों की धनी रही है लेकिन पाश्चात्य संस्कृति के आविर्भाव से आज कहीं न कहीं हमारे नैतिक मूल्यों का क्षरण हो रहा है। बहरहाल, आज हमें इस पर आत्ममंथन करने की महती आवश्यकता है कि आखिरकार यौन अपराधों को लेकर सख्त कानून बनने के बावजूद ऐसी आपराधिक व घिनौनी प्रवृत्तियों पर हम अंकुश क्यों नहीं लगा पा रहें हैं। जरूरत इस बात की है कि सरकार, समाज व परिवार इस पर बहुत ही गंभीरता से मंथन करते हुए इसका हल निकाले। भारतीय जनमानस को भी अब संकल्प लेने की जरूरत है तथा एकजुट होकर ऐसे आपराधिक प्रवृति वाले लोगों के खिलाफ खड़ा होना होगा, जो हमारे देश व समाज के लिए कलंक हैं। कानून को और अधिक सख्त बनाना ही होगा। सरकार को यह चाहिए कि वह देश के विभिन्न सार्वजनिक स्थलों, पर्यटन स्थलों पर हर समय सुरक्षा व्यवस्था को कायम, माकूल व मजबूत रखे। ऐसे स्थानों पर सादी वर्दी में महिला पुलिस को तैनात किया जाना आवश्यक है। इतना ही नहीं,दोषियों को सख्त से सख्त सज़ा दी जानी चाहिए। वास्तव में, ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए हमें सामूहिक प्रयास करने होंगे ।समाज को भी यह चाहिए कि समाज ऐसी आपराधिक प्रवृति के लोगों की पहचान करें और समय रहते पुलिस व प्रशासन को इस संबंध में सूचित करे। पुलिस, प्रशासन को भी जागरूक होकर अपने कर्तव्यों का ईमानदारी व निष्ठा से निर्वहन करना होगा। महिलाओं को सेल्फ डिफेंस की शिक्षा देनी होगी। सबसे बड़ी बात यह है कि महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने के लिए हर गांव से लेकर शहर तक जागरूकता शिविर लगाने होंगे, तभी हम अपने देश और समाज में महिलाओं की सुरक्षा को सुनिश्चित कर पायेंगे।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार,

सब रंगों का एक संगम है इन्दौर की रंग पंचमी का यह रंगोत्सव....।

हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

भारत के हृदय प्रदेश मध्यप्रदेश में सभी पर्व व त्योहारों को बहुत ही धूमधाम से मानते हैं। ऐसे तो पूरे भारत में सभी तीज़ त्योहार हर्षोलास से मनाते हैं। जो परम्परा संस्कृति संस्कार के साथ दिव्य आलौकिक रंगों में है । यही मध्यप्रदेश की धरा का भी अपना अद्भुत व निराला परिदृश्य समाने आता है। मिनी मुंबई की गेर निराली है। इन्दौर में रंगों का यह पर्व होली की मस्ती के साथ होली के पांचवें दिन सबसे ज्यादा रंग पंचमी का महत्व बहुत है। ऐसे तो इस पर्व की पौराणिकता में रंगपंचमी की विभिन्न किंवदंती से जुड़ी हुई है। जिसमें भगवान कृष्ण और राधारानी की कहानी जहां कृष्ण ने राधा के चहरे पर रंग लगाया था। जिसके के अनुसार रंगपंचमी खेलने की परम्परा शुरू हुई। वही रंग पंचमी पर धंन की देवी मां लक्ष्मी की पुजा अर्चना की जाती है। देवी देवताओं को गुलाल लगाया जाता है । इस दिन महाराष्ट्र व मध्यप्रदेश छत्तीसगढ़ में पकवान बनायें जातें है और महाराष्ट्र में पूरन पोली बनाईं जाती है। हमारे मध्यप्रदेश में मालवा निमाड़ में रंगपंचमी मनाई जाती है।

खासकर मिनी मुंबई इन्दौर में रंग पंचमी पर गेर निकलीं जाती है। रंग पंचमी पर राजा महाराजाओं के जमाने से करीब 300 साल से पुरानी इस परम्परा को जिवित रखनें हेतु वर्तमान में इस परम्परा को भव्य स्वरूप देते हैं। एक और उज्जैन में बाबा महाकाल जो टेसू के फूलों से रंग खेलते हैं। दुसरी और ओम्कारेश्वर ज्योतिर्लिंग में ओकर जी महाराज रंग गुलाल से रंग में नर्मदा नदी की वहां छंटा देखते बनती है। वही सबसे स्वच्छ व महानगर इन्दौर में बड़ी शालिनता सौहार्दपूर्ण वातावरण में एकजुटता व भाईचारे से रंग पंचमी मनातें हैं। होलकर वंश के राजा महाराजा आम जनता व अपनी प्रजा के हालचाल जानने के लिए सुबह दरबारी व दोपहर में प्रजा के साथ होली यानी रंग पंचमी के दिन रंग खेलते थे। इतिहासकार सुनील मतकर बताते हैं कि सन 1927 से महाराज ने भांप का छोटा इंजन आग बुझाने के लिए खरीदा था, सन 1928 जब श्री मंत यशवंतराव होलकर द्वितीय जब 12, साल के थे, तब उनसे श्री मंत तुकोजीराव महाराज तृतीय ने पूछा कि आप रंग पंचमी कैसे खेलेंगे। तब इस इंजन में पानी भर कर रंग डाल कर सभी के ऊपर उढाया गया था इन्दौर के राजबाड़ा पर और महाराजा साहब सोने चांदी की पिचकारी से रंग उड़ते थें। आज़ादी के बाद बेल गाड़ियों में फूलों और हर्बल चीजों से तैयार रंग और गुलाल को लेकर सड़कों पर लोग निकलते थे। रंग पंचमी की परम्परा को आगे बढ़ने में 1950 में बाबूलाल गिरी, रंगनाथ कर्णिक पहलवान बिडि पहलवान आदि ने इन्दौर के टोरी कार्नर से गेर निकल कर जो पहचान दिलाई थी , वह अभी भी जारी है। वर्तमान में इस रंगपंचमी की गेर में इन्दौर की अपनी अलग पहचान बना ली है। देश विदेशों से लोग इसे देखनें आते हैं। इसमें सहयोगी टोरी कार्नर मारल क्लब, रसिया कार्नर, संगम कार्नर की गेर और हिन्द रक्षक की फाग यात्रा रंगपंचमी पर आर्कषण का केंद्र रहती है। अब मध्यप्रदेश के इन्दौर से निकलने वाली गेर लोक महोत्सव के रुप में पहचान बना ली है। इस दिन स्थनिय अवकाश रहता है। शासन प्रशासन के सहयोग से प्रदेश सरकार इसे ग्लोबल कनेक्ट गेर को विश्व प्रसिद्धी के लिए कार्यरत हैं। रंगपंचमी में रंगोत्सव के लिए बदलते परिवेश में बड़े बड़े टैंकरों व बोरिंग मशीनों से हेवी मोटर पंपों से मिसाईल के जरिए भीड़ पर रंग गुलाल व पानी उड़ाया जाता है। इसमें कम से कम 150 -200 बड़े छोटे वाहनों से रंगों की बारिश सड़कों पर खड़े लोगों पर की जाती है। जिसमें क्लेश व वैमनस्य दूर रहकर भाईचारे को बढ़ावा देने के लिए इन्दौर में रंगपंचमी खेलीं जाती है। उत्सव की इसी कड़ी में 24 साल पहले प्रदेश के पूर्व शिक्षा मंत्री लक्ष्मण सिंह गोड़ ने बहुत संघर्षों के साथ इस लोकप्रिय गेर में हिन्द रक्षक संगठन की और से राधा कृष्ण फाग यात्रा की भी शुरुआत की थी। इस गेर परम्परा में सनातन की गौरवशाली धरोहर व युवाओं को जोड़ने हेतु मातृ-शक्तियों को भी साथ में लेकर सन 1998 म में इसमें फाग यात्रा चालू की थी। लखन दादा ने इसमें मातृ-शक्तियों को आगे लाने के लिए इस में महिलाओं को उनकी स्थान आरक्षित कर जगह दिलाने के लिए अलग जगह बनाई। जिसमें मातृशक्ति महिलाएं लड़कियां भजनों पर गीत गाते झूमते हुए बहुत भक्ति भाव से सहभागिता के साथ यह फाग यात्रा में शामिल होती है । गेर व फाग यात्रा पर रंगपंचमी के दिन ऐसा लगता है कि इस रंग महोत्सव गेर में मथुरा वृंदावन इन्दौर में उतार आया हो। फाग यात्रा की इस गेर में

हुड़दंग व फूहड़ता का कोई स्थान नहीं होता है। इसके लिए पुलिस प्रशासन व अन्य सभी लोगों का सहयोग मिलता है। गेर में राधा कृष्ण की लीला का अनुवाद अपनी मस्ती में मस्त भक्तों की टोली आंनद के पांच रंगों में रचा-बसा शहर इन्दौर आस्था व परम्परा और संस्कृति और अपनी धरोहर को आज भी जिवित रखें हुए है। दुनिया की यह अनोखी परम्परा जिसमें कोई गेर नहीं सब एक हो जाते हैं। रंगों के बिना जीवन की कल्पना अधुरी है। इस हुरियारों के जुलूस में रंगमहोत्सव में युवा बच्चे लड़कियां महिलाएं बुजुर्ग आम से खास सभी शमिल होते हैं। हजारों टन गुलाल कई फ़ीट तक ऊपर आसमान में उड़ाई जाती है जिससे सतरंगी छटा देखने को मिलती हैं। इस पर्व में जब तक एक आदमी को पांच रंग नहीं लग जायें तब तक अधूरा माना जाता है। रीति-रिवाज के बाद भी आज रंगपंचमी उत्सव इन्दौर की पहचान बन गया है। इतने बड़े पैमाने पर जनसैलाब उमड़ा है कि रंग व पानी के बाद सड़कों पर कीचड जमा हो जाता है फिर स्वच्छता में शिखर पर इन्दौर का नगर निगम अपने सफ़ाई मित्रों के सहयोग से सफाई व्यवस्था को देखता है और फिर चकाचक कर देता है। यह रंग पंचमी की गेर सब रंगों का एक संगम है। इन्दौर का यह रंगमहोत्सव जिसे प्रदेश की सरकार ने भारत के संस्कृति मंत्रालय में इसे दर्ज कराया है। यह रंगपंचमी की गेर फाग यात्रा विश्व धरोहर में यूनेस्को की सूची में शामिल हो इसके लिए भी प्रयासरत मध्यप्रदेश सरकार है। हम सभी भी यही चाहते हैं की यह रंग कभी भी फ़ीके नहीं पढ़े क्यों रंगों के बिना सभी बेरंग नजर आयेंगे। इसलिए रंग जीवन की भी पहचान है और ज़ीना इसी का नाम है। आंनद उल्लास और उमंगता की मस्ती बहुत जरूरी है।

त्रिशूलिया तक नहीं, कटक तक चलेगी मेट्रो

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : मेट्रो कटक तक चलेगी, त्रिशूलिया तक नहीं। शहरी विकास मंत्री कृष्ण चंद्र पात्रा ने यह जानकारी दी है। शहरी विकास मंत्री ने त्रिशूलिया तक मेट्रो लाइन की परिचालन स्थिति के बारे में जानकारी दी, जिसकी योजना पिछली सरकार ने बनाई थी। तकनीकी लोगों की एक उच्च स्तरीय समिति गठित की गई है और इस समिति ने एक सर्वेक्षण भी किया है।इसे जल्द ही क्रियान्वित किया जाएगा। समिति इस परियोजना की व्यवहार्यता की जांच कर रही है। उन्होंने यह भी कहा कि राज्य में मेट्रो परियोजना की आवश्यकता है। पहले हवाई अड्डे से त्रिशूलिया तक मेट्रो चलाने की योजना थी। लेकिन अगर लोग त्रिशूलिया तक जाएंगे तो क्या करेंगे? मंत्री ने कहा कि कटक तक जाने की जरूरत है। इसी प्रकार अन्य स्थानों पर भी जाने की आवश्यकता है। मंत्री ने स्पष्ट किया कि समिति अध्ययन कर रही है और इसका दायरा बढ़ाया जाएगा तथा परियोजना रद्द नहीं की जाएगी। उन्होंने यह भी कहा, यह जनता की सरकार है। लोगों की जो भी जरूरत होगी, वह पूरी की जाएगी। मेट्रो रेल परियोजना की अनुमानित लागत 6,255 करोड़ रुपये है। इस परियोजना के 2027 तक पूरा होने की उम्मीद है। हालाँकि, सारा खर्च राज्य सरकार द्वारा वहन किया जाएगा। पहले चरण में यह मेट्रो रेल भुवनेश्वर हवाई अड्डे से त्रिशूलिया चैक तक लगभग 26 किलोमीटर तक चलेगी। इसमें 20 मेट्रो स्टेशन होंगे। बताया गया है कि दिल्ली मेट्रो रेल कॉरपोरेशन (डीएमआरसी) सलाहकार के रूप में इस परियोजना का क्रियान्वयन कर रहा है। इसके साथ ही सड़क को चौड़ा करने के लिए त्रिशूलिया-नंदनकानन मार्ग के किनारे लगे बड़े पेड़ों को भी काटा जा रहा है।

बाबा रामदेव पूर्व केंद्रीयमंत्री देवेंद्र प्रधान के अंतिम संस्कार में शामिल हुए

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के पिता और पूर्व केंद्रीय मंत्री देवेंद्र प्रधान का पार्थिव शरीर भुवनेश्वर से पुरी पहुंच गया है। और कुछ समय बाद देवेंद्र को पुरी के पंचभूत मंदिर में समाधि दी गयी। अंतिम यात्रा में कई गणमान्य लोग शामिल हुए।हालांकि, बाबा रामदेव भी देवेंद्र के अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए पुरी पहुंच गए हैं। देबेन्द्र लंबे समय से बीमार थे। उन्होंने नई दिल्ली स्थित धर्मेन्द्र प्रधान के सरकारी आवास पर अंतिम सांस ली। उनके निधन की खबर मिलने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह, केंद्रीय मंत्री मनसुख मांडव समेत कई नेताओं ने उन्हें अंतिम श्रद्धांजलि दी।

दिल्ली टैक्सी एंड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के प्रतिनिधि मण्डल ने ग्रह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय से दिल्ली में रजिस्ट्रीर्ड होने वाली सारी आल इंडिया टूरिस्ट परमिट की टैक्सी बसों से स्पीड लिमिट डिवाइस हटाने के लिए उनसे मुलाक़ात करके उन्हें ज्ञापन सौंपा

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली टैक्सी एंड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के प्रतिनिधि मण्डल ने भारत के ग्रह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय जी से दिल्ली में रजिस्ट्रीर्ड होने वाली सारी आल इंडिया टूरिस्ट परमिट की टैक्सी बसों से स्पीड लिमिट डिवाइस हटाने के लिए उनसे मुलाक़ात करके उन्हें ज्ञापन सौंपा.

टैक्सी एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय सम्राट ने ग्रह मंत्री जी को बताया की हाइवे पर आज कल काफी लूट पाट होती रहती है । जिसकी वजह से महिलाओ की सुरक्षा का खतरा बड गया है । जिस प्रकार से आज कल बलात्कार की घटनाए हो रही हे इस से देसी विदेशी टूरिस्ट के साथ एसी घटनाए होने की सम्भावना बड गई है ।

हाईवे पर बदमाश ओवरटेक करके गाड़ियों को लूट लेते हे।क्योकी प्राइवेट गाड़ियों की स्पीड ज्यादा होती है और हमारी टूरिस्ट टैक्सी बसों की स्पीड को 80 किलो मीटर प्रति घंटे की स्पीड में बांधा गया हैं और अजीब बात ये हैं की एक्सप्रेस वे और हाई वे पर दूसरी सारी प्राइवेट गाड़ियों की स्पीड भारत सरकार ने 120 किलो मीटर प्रति घंटा करी हुई हैं ।

टैक्सी एसोसिएशन के मेंबर श्री हरविंदर सिंह ने ग्रह मंत्री को बोला की हम इन एक्सप्रेस वे हाई वे पर गाडी चलाने का करोडो रूपया टोल टैक्स के नाम पर देते हैं.

अभी हाल में ही दिल्ली में इंटरपोल के सम्मेलन में आये हुए अधिकारियो ने आगरा जाते हुए ड्राइवर द्वारा धीमी गति से टूरिस्ट टैक्सी चलाने की शिकायत की और बहुत नाराजगी जताई । क्योंकि उस टूरिस्ट टैक्सी में स्पीड गवर्नर लगा हुआ था. वैसे भी देसी विदेसी टूरिस्ट रात को भी सफर करते हे। अगर कल को किसी भी तरह की कोई दुर्घटना या लूट पाट या बलत्कार स्पीड गवर्नर की वजह से होती हे तो इसकी जिम्मेदारी किस विभाग की होंगी???ये भी तय करना पड़ेगा.

टैक्सी एसोसिएशन ने मंत्री जी , से मांग करी कि स्पीड गवर्नर की अनिवार्यता सारी आल इंडिया टूरिस्ट परमिट की टैक्सी बसों से तुरंत हटाई जाये।

संजय सम्राट का कहना हैं की ये स्पीड लिमिट डिवाइस का फरमान मिनिस्ट्री ऑफ़ हाईवे एंड रोड ट्रांसपोर्ट मिनिस्ट्री ने मोटर व्हीकल एक्ट के प्रावधान द्वारा किया गया हैं, इस बारे मे हमारी एसोसिएशन.

परिवहन मंत्री श्री नितिन गडकरी जी से भी काफी बार मिले हैं, लेकिन अभी तक कोई कार्यवाही नहीं हुई.

संजय सम्राट का कहना हैं की ये मुद्दा महिलाओ की और देसी विदेशी पर्यटको की जान माल की सुरक्षा का हैं जिसे दिल्ली और केंद्र सरकार दोनों ने आज तक गंभीरता से नहीं लिया.

ग्रह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय जी ने आल इंडिया टूरिस्ट टैक्सी बसों की टैक्सी बसों पर स्पीड लिमिट डिवाइस लगाने को गलत बताया और उन्होंने भी माना की ये स्पीड लिमिट डिवाइस (स्पीड गवर्नर) सिटी के अंदर तो सही हैं लेकिन एक्सप्रेस वे और हाई वे पर इन टूरिस्ट टैक्सी बसों को 80 किलोमीटर की स्पीड पर बांधना सही नहीं हैं. ग्रह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय जी ने कहा की वो इस मुद्दे पर श्री नितिन गडकरी जी को पत्र लिख कर इसका समाधान जल्दी करवाएंगे. बल्कि उन्होंने दिल्ली के परिवहन मंत्री को भी इस बारे में निर्देश दिये है।

कापरा मंडल बालाजी नगर स्थित श्री आईमाता जी : वडेर में तन्मय हाम्बड़ ढूंढोत्सव व डोयटन कार्यक्रम में उपस्थित समस्त सीरवी समाज गणमान्य पदाधिकारी सोनाराम हाम्बड़, चोलाराम हाम्बड़, कालुराम हाम्बड़ , नारायण लाल हाम्बड हाम्बड़ , थानाराम हाम्बड़ , भोमाराम हाम्बड़,सोहन सिंह राजपुरोहित,जयराम पंवार, मोहनलाल हाम्बड़,नारायणलाल बर्फा, डुगाराम सोलंकी ,नरेश,घेवरराम, अचलाराम हाम्बड़, रुघाराम चोयल, मोहन हाम्बड़, नेमाराम सोलंकी,भुडाराम सोलंकी,लखाराम सोलंकी, रुघाराम गेहलोत, निमेष हाम्बड़, ओमप्रकाश हाम्बड़, हाम्बड़ परिवार व समाज बन्धु।

बाढ़ की तबाही से बचाएगा डीप फ्लड ऐप, बिहार और असम में मिले सटीक परिणाम

बाढ़ से होने वाली तबाही से बचने के लिए आईआईटी दिल्ली ने बनाया है डीप फ्लड एप। यह एप बाढ़ की स्थिति का आकलन एक मिनट में कर सकता है। जानिए कैसे काम करता है यह एप और कैसे इससे बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में राहत कार्यों में मदद मिल सकती है।

नई दिल्ली। बिहार, बंगाल, असम, ओडिशा, उत्तर प्रदेश सहित कई राज्य प्रति वर्ष बाढ़ की आपदा से जूझते हैं। कितने ही परिवार तबाह हो जाते हैं। प्राकृतिक आपदाओं को आने से तो नहीं रोका जा सकता लेकिन, उनके दुष्प्रभाव से बचाव किया जा सकता है। बाढ़ जैसी आपदा से कितनी जानमाल की हानि होगी यदि इसका अंदाजा समय से लग जाए तो राहत कार्यों के माध्यम से स्थिति नियंत्रित की जा सकती है। ऐसी ही जानकारी के लिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) दिल्ली के सिविल इंजीनियरिंग विभाग ने एआइ आधारित 'डीप फ्लड' एप बनाया है, जिसका प्रयोग बिहार-असम में बाढ़ के समय प्रशिक्षण के तौर पर सफल भी रहा है। इस एप के जरिये एक मिनट में 100 किलोमीटर क्षेत्र में बाढ़ की स्थिति का आकलन किया जा सकता है।

बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों की होती है बिल्कुल सटीक जानकारी

'डीप फ्लड' एप सिंथेटिक एपर्चर रडार (एसएआर) तकनीक पर आधारित है। यह बेहद आधुनिक तकनीक है, जिसके माध्यम से सेटेलाइट की तस्वीरें भेजी जाती हैं। इन तस्वीरों का एप में उपयोग करके मानचित्र तैयार होता है। मानचित्र में बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों की बिल्कुल सटीक जानकारी होती है। एप को सिविल इंजीनियरिंग विभाग के प्रोफेसर मानवेंद्र सहारिया और शोधार्थी निर्देश कुमार शर्मा ने तैयार किया है।

इस एप के बारे में निर्देश बताते हैं कि अभी तक बाढ़ आने पर सामान्य (आप्टिकल) सेटेलाइट तस्वीरों से उसका आकलन नहीं हो पाता था। आप्टिकल सेटेलाइट बाढ़ की सीमा और प्रभाव पर मूल्यवान डाटा प्रदान करते हैं, लेकिन बादलों के ऊपर, जंगलों के ऊपर और रात में संचालन करने में असमर्थता जैसी चुनौतियों भी इसके सामने हैं। इससे वास्तविक समय में बाढ़ का आकलन करना मुश्किल हो जाता है।

वहीं, एसएआर बादलों के पार, सघन जंगली इलाकों और रात की तस्वीरें लेने में सक्षम है। जब यह तस्वीरें हमारे पास आ जाती हैं, तो एआइ आधारित डीप फ्लड एप इनका इस्तेमाल कर मानचित्र तैयार करता है। इलाके में कहां तक पानी आ गया है, यह पता लग जाता है। इसके अनुरूप एजेंसी को निर्देशित कर बचाव कार्य बढ़ाया जा सकता है।

सरायकेला में विश्वप्रसिद्ध छऊ नृत्य आयोजन पूर्व मुखौटा प्रतियोगिता

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

सरायकेला। सरायकेला का विश्वप्रसिद्ध छऊ नृत्य वार्षिक आयोजन को लेकर उसके मुखौटा निर्माण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस मे मुख्य रुप से उपायुक्त सरायकेला रवि शंकर शुक्ला, श अनुमंडल पदाधिकारी सदानंद महतो तथा प्रभारी निदेशक के रुप में बीडीओ, सरायकेला उपस्थित रहे। नृत्य कला केन्द्र में मुखौटा निर्माण प्रतियोगिता मे तीन प्रतिभागियों ने भाग लिया। इनके अलावे राजकीय छऊ नृत्य कला केंद्र सरायकेला के तमाम कलाकार सुदीप कुमार कवि,आशीष कर, गजेंद्र महंती, घसीनाथ भोल,देव नारायण सिंह, रुपेश साहू, पंकज साहू, सिद्धु दारोगा, राकेश कवि, शिवनाथ मिश्रा, अविनाश कवि, अतुल महतो, अनिल पटनायक, अजय साहू, अध्यायोदो साहू, सनत साहू, विनोद प्रधान, साथ में एसडीओ कार्यालय कर्मचारी भी मौजूद थे।जिन्हें अपरान्ह में डी सी शुक्ला ने प्रमाणपत्र आकर दिये है।

सरायकेला में कामगारों के फेफड़ें में सिलिकॉन की जांच शिविर

के के परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

सरायकेला, सरायकेला-खरसावां जिलांतर्गत असंगठित क्षेत्र की छोटी पत्थर एवं अन्य खदानों में सिलिकोसिस एवं अन्य व्यावसायिक रोगों से प्रभावित कामगारों के लिए स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन सिविल सर्जन कार्यालय परिसर में 18 मार्च—२० मार्च को किया जा रहा है। सनद रहे कि झारखंड सरकार द्वारा सिलिकोसिस जांच व इलाज हेतु सरकारी प्रयास जारी है। इस फेफड़े की बिमारी जो सिलीकान डाय आक्साइड के छोटे टुकड़े ,कण सांस के जरिए फेफड़े तक पहुंचने पर यह बिमारी होती है । इस शिविर का आयोजन खान सुरक्षा निदेशक, खान सुरक्षा महानिदेशालय, चाईबासा क्षेत्र तथा सरायकेला खरसावां जिला प्रशासन के संयुक्त सौजन्य से किया जा रहा है। आज से शुरू हो रहे इस स्वास्थ्य शिविर में लगभग 50 कामगारों की स्वास्थ्य परीक्षण की गई। शिविर में खान सुरक्षा निदेशक (चाईबासा क्षेत्र), जिला खनन पदाधिकारी ज्योति शंकर सतपथी तथा सिविल सर्जन (सरायकेला) मुख्य रुप से उपस्थित रहे।

संस्कार व्यक्ति के विचारों, मूल्यों, और व्यवहार को आकार देते हैं

दोस्ती को परिभाषित करने के लिए, हमें यह समझना होगा कि दोस्ती क्या है और क्या नहीं है।दोस्ती की परिभाषा सबके लिए अलग अलग हो सकती है,

दोस्ती एक ऐसा रिश्ता है जो निस्वार्थ, विश्वास, और समर्थन पर आधारित होता है। दोस्ती में हम एक दूसरे के साथ खुशियाँ और दुख बांटते हैं, एक दूसरे की मदद करते हैं, और एक दूसरे का सम्मान करते हैं।

दोस्ती में कोई लालच नहीं होनी चाहिए। हमें अपने दोस्तों से कुछ पाने की उम्मीद नहीं रखनी चाहिए, बल्कि हमें अपने दोस्तों के लिए कुछ देने की इच्छा रखनी चाहिए।

दोस्ती को परिभाषित करने के लिए, हमें यह भी समझना होगा कि दोस्ती क्या नहीं है। दोस्ती एक ऐसा रिश्ता नहीं है जो केवल अपने फायदे के लिए बनाया जाता है। दोस्ती एक ऐसा रिश्ता नहीं है जो केवल तब तक रहता है जब तक हमें कुछ पाने को मिलता है।

दोस्ती एक ऐसा रिश्ता है जो हमेशा रहता है, चाहे हमें कुछ पाने को मिले या न मिले। दोस्ती एक ऐसा रिश्ता है जो हमें मजबूत बनाता है, हमें खुशी देता है, और हमें जीवन के हर मोड़ पर साथ देता है। दोस्ती किसी भी व्यक्ति से हो सकती है, चाहे वह महिला हो या पुरुष। दोस्ती का आधार लिंग, उम्र, धर्म, जाति या किसी भी अन्य कारक पर नहीं होना चाहिए।

दोस्ती का आधार विश्वास, समर्थन, और आपसी समझ पर होना चाहिए। जब हम किसी व्यक्ति के साथ दोस्ती करते हैं, तो हमें उनकी भावनाओं, विचारों और जरूरतों का सम्मान करना चाहिए।

महिला और पुरुष दोनों ही एक दूसरे के साथ दोस्ती कर सकते हैं और एक दूसरे से बहुत कुछ सीख सकते हैं। दोस्ती में लिंग का कोई महत्व नहीं है, बल्कि दो व्यक्तियों के बीच का संबंध और आपसी समझ महत्वपूर्ण है।

विपरीत लिंग के बीच स्वस्थ मित्रता होना या न होना यह एक जटिल और व्यक्तिगत विषय है, और इसका उत्तर हर किसी के लिए अलग-अलग हो सकता है। लेकिन मैं आपको बताना चाहूंगा कि,

विपरीत लिंग के बीच स्वस्थ मित्रता संभव है, लेकिन इसके लिए दोनों पक्षों को कुछ बातों का ध्यान रखना होगा।

दोनों पक्षों को अपने रिश्ते की स्पष्टता और समझ होनी चाहिए। उन्हें यह समझना चाहिए कि उनका रिश्ता मित्रता है, न कि प्रेम।

दोनों पक्षों को अपने रिश्ते की सीमाएँ समझनी चाहिए। उन्हें यह समझना चाहिए कि क्या स्वीकार्य है और क्या नहीं।

दोनों पक्षों को एक दूसरे के प्रति विश्वास और सम्मान होना चाहिए। उन्हें यह समझना चाहिए कि उनका रिश्ता आपसी विश्वास और सम्मान पर आधारित है।दोनों पक्षों को खुलकर और ईमानदारी से संचार करना चाहिए। उन्हें अपने विचारों और भावनाओं को साझा करना चाहिए।

अब, यदि आप पूछते हैं कि क्या यह रिश्ता धीरे-धीरे प्रेम में बदल सकता है, तो इसका उत्तर है - हाँ, यह संभव है। लेकिन इसके लिए दोनों पक्षों को अपने रिश्ते की दिशा को समझना होगा और अपने विचारों और भावनाओं को साझा करना होगा।

यह भी महत्वपूर्ण है कि दोनों पक्षों को अपने रिश्ते की सीमाएँ समझनी चाहिए और उन्हें पार नहीं करना चाहिए। यदि वे अपने रिश्ते को प्रेम में बदलना चाहते हैं, तो उन्हें अपने विचारों और भावनाओं को साझा करना चाहिए और अपने रिश्ते की दिशा को समझना चाहिए।

मित्रता और प्रेम के बीच की रेखा बहुत पतली होती है, और कभी-कभी जब मित्रता विपरीत लिंग से हो तो यह रेखा इतनी धुंधली हो जाती है कि हमें यह समझने में मुश्किल होती है कि हमारे रिश्ते में क्या हो रहा है।

जब हम किसी व्यक्ति के साथ मित्रता करते हैं, तो हम उनके साथ समय बिताते हैं, उनके साथ बातें करते हैं, और उनके साथ अपने विचारों और भावनाओं को साझा करते हैं। यह सब करने से हमें उनके प्रति एक गहरा जुड़ाव महसूस होता है, जो धीरे-धीरे प्रेम में परिवर्तित हो सकता है। इसलिए, यह कहना कि मित्रता को प्रेम में परिणित होने में देर नहीं लगती, बिल्कुल सही है। लेकिन यह भी महत्वपूर्ण है कि हम अपने रिश्तों को समझें और उन्हें सावधानी से संभालें।

व्यक्ति के संस्कार विपरीत लिंग के साथ संबंधों में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संस्कार व्यक्ति के विचारों, मूल्यों, और व्यवहार को आकार देते हैं, जो कि संबंधों में बहुत महत्वपूर्ण होते हैं।

यदि व्यक्ति के संस्कार अच्छे हैं, तो वह विपरीत लिंग के साथ संबंधों में सम्मान, विश्वास, और सीमाओं का ध्यान रखेगा। वह अपने संबंधों में ईमानदारी, निष्ठा, और समर्पण का प्रदर्शन करेगा।

लेकिन यदि व्यक्ति के संस्कार खराब हैं, तो वह विपरीत लिंग के साथ संबंधों में अनुचित व्यवहार कर सकता है, जैसे कि अनुचित संबंध, धोखाधड़ी, या अपमानजनक व्यवहार।

इसलिए, व्यक्ति के संस्कार विपरीत लिंग के साथ संबंधों में बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। अच्छे संस्कार व्यक्ति को स्वस्थ और सम्मानजनक संबंध बनाने में मदद करते हैं।

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह सहज़

छू कर। चला गया कोई,

नींद अब नहीं आती,
दिल में उतर गया कोई,
चांद है मद्धम मद्धम,
आज संवर गया कोई,
दिल धड़कता है ,शब ए,
हिज़्र का मुआमला,है,
आया नहीं अब तलक,
वादा, कर गया कोई,
आंखों से पी पी कर ,मैं,
मदहोश हो गया, यारों,
पूरा जिस्म ही महकता,
है,छु कर चला गया कोई,
बहुत शौक़ था, हो जाये,
उनसे मुहब्बत मुझको,
रंज और ग़म का तमाशा,
सरे आम कर गया कोई,
मारते हैं पत्थर, मुझको,
लोग दीवाना कह करके,
सारी दुनिया से बेगाना,सच,
मुझको तो कर गया कोई,
यह ज़िन्दगी आख़िर किसी,
तरह तो गुज़र ही जाएगी,
वादों से अपने खुद ही,दग़ा ,
यारब फिर कर गया कोई
दरियाए इश्क़ की लहरों में ,
मुझको,फंसा करर मुश्ताक़र
देखिये किनारा अब मुझसे,
किस अंदाज़ से कर गया कोई,

डॉ. मुश्ताक़ शाह
'सहज़; हरदा मध्यप्रदेश,

झारखंड में माओवादियों द्वारा पुनः आईईडी ब्लास्ट

कार्तिक कुमार परिच्छा,स्टेट हेड-झारखंड

चक्रधरपुर, झारखंड स्थित केवल देश ही नही वल्कि एशिया का सर्वाधिक घने जंगल सारंडा के दुर्गम इलाकों में नक्सलियों द्वारा लगाए गए आईईडी (इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस) के विस्फोट से सीआरपीएफ के एक सब इंस्पेक्टर जख्मी हो गया हैं। उसको एयरलिफ्ट कर इलाज के लिए रांची भेजा गया।

बताया गया है कि मुठभेड़ की घटना जराईकेला थाना क्षेत्र के राधापोड़ा के पास हुई है। घायल सब इंस्पेक्टर सीआरपीएफ की 134 बटालियन में पदस्थापित हैं।

इसके पहले पांच मार्च को भी इसी जिले में बलीबा जंगल के पास नक्सलियों की आईईडी की चपेट में

आकर सीआरपीएफ कोबरा बटालियन के एक असिस्टेंट कमांडेंट सहित सुरक्षा बल के तीन जवान घायल हो गए थे। यह घटना तब हुई थी, जब सुरक्षा बलों और पुलिस की ज्वाइंट टीम जंगल-पहाड़ी से घिरे इलाके में नक्सलियों के खिलाफ सर्च ऑपरेशन में जुटी थी।

बताया गया है कि भाकपा माओवादी नक्सली संगठन के शीर्ष नेता मिसिर बेसरा, अनमोल, मोछु, अनल, असीम मंडल, अजय महतो, सागेन अंगरिया, अश्विन अपने दस्ते के सदस्यों के साथ सारंडा और कोल्हान क्षेत्र में सक्रिय हैं। उनके खिलाफ सुरक्षाबलों द्वारा लगातार अभियान संचालित किया जा रहा है।

चाईबासा में पुलिस और सुरक्षाबलों ने पिछले एक माह के अंदर नक्सलियों के पांच डंप को ध्वस्त करते हुए हथियारों का जखीरा बरामद किया है। जिले के टोंटो थाना क्षेत्र के हुसिपी जंगल में मार्च के पहले हफ्ते में सुरक्षाबलों ने नक्सलियों के एक कैंप को ध्वस्त किया था। इस दौरान 10-10 किलोग्राम क्षमता वाले दो आईईडी भी डिफ्यूज कर दिए गए थे। इस कैंप से एक देशी पिस्टल, दो कार्बाइन, एक राइफल, दस किलो का आईईडी, 58 डेटोनेटर समेत अन्य सामान बरामद किए गए थे।

24 फरवरी को भी टोंटो थाना क्षेत्र में पुलिस और सुरक्षाबलों ने नक्सलियों के दो कैंप ध्वस्त किए थे और इस दौरान अमेरिका में निर्मित

सीखने की ललक जगाओ...!

अपने अंदर भी सीखने की ललक जगाओ,
दिमाग में समुंदरसी गहराईयाँ लिए आओ।
कौन कब क्या? सीख लें हमें न समझाओ,
कब कौन क्या? हमसे मांग लें न बतलाओ।
कई बार गुरुओं ने भी सिखाने से मना किया,
शिक्षा और कला को पैसों से ही तोल दिया।

अपने अंदर भी सीखने की ललक जगाओ,
दिमाग में समुंदरसी गहराईयाँ लिए आओ।
यहाँ तो पत्थर से भी एकलव्य सीख लेते है,
द्रोणाचार्य ट्यूशन फीस में अंगूठा ले लेते है।
मुझे इस कलयुग में तो लगता रहता ये डर,
आँचल फैलाकर मुझसे न मांग ले मेरा घर।

अपने अंदर भी सीखने की ललक जगाओ,
दिमाग में समुंदरसी गहराईयाँ लिए आओ।
नायकों इस युग में हाथ-पैर बचाएं रखना,
ये समाज थोड़ी देर भी लेगा नहीं जख्खना।
अपने माता-पिता से ये कहना
न रखें वे व्रत,
उनका पुत्र इस वर्तमान में
न बनेगा देवव्रत।

संजय एम तराणेकर

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023